अकबर 'महान' (1556-1605)

मूल नाम–जलालुद्दीन।[1]

उपनाम/उपाधि–दक्षिण का बादशाह; अर्श-आशियानी–जहाँगीर ने कहा था; जगदीश्वर–प्रजा ने उसे माना। महजर की घोषणा के बाद अकबर को **इमाम; आदिल; अमीरुल मोमनीन** आदि उपाधियों से सम्बोधित किया गया।

प्रबुद्ध निरंकुश शासक–अकबर को माना जाता है।

"अपने युग की सन्तान एवं पिता दोनों था"– डा. आर.पी. त्रिपाठी ने कहा

"मनुष्यों का जन्मजात शासक"–स्मिथ ने कहा

"मध्यकालीन भारत का प्रथम राष्ट्रीय शासक"– सर्वप्रथम **एल्फिन्सटन** ने कहा

"अकबर भारत के शासकों में सर्वोत्तम था। वह साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक और व्यवस्थापक था। उसका साम्राज्य मुगलकाल का स्वर्ण युग था"– लेनपूल ने कहा

विशेष– (i) इंग्लैण्ड की रानी **एलिजाबेथ**, फ्रांस का **हेनरी चतुर्थ** तथा फारस का महान अब्बास अकबर के समकालीन शासक थे।

(ii) अकबर ही वह मुगल शासक है जो कि भेष बदलकर प्रजा के बीच जाता था।

(iii) अकबर का पहला जीवनीकार **बायजीद बयात** था।

(iv) अकबर की शिक्षा का बहुत प्रयास हुआ लेकिन उसको अक्षरबोध न हो सका।

अमरकोट–यहीं के **राणा वीरसाल** के हिन्दू महल में **15 अक्टूबर 1542 ई.** को अकबर का **जन्म** हुआ। हुमायूँ ने सिन्ध में हिन्दाल के आध्यात्मिक गुरू **मीर अली अकबर जामी (मीर बाबा दोस्त)** की पुत्री **हमीदाबानो बेगम** से विवाह किया था। वही अकबर की माँ थी। अकबर के जन्म की खुशी हुमायूँ ने कस्तूरी के टुकड़े वितरित कर मनाया।

असकरी की पत्नी सुल्तान बेगम तथा काबुल में बाबर की बहन खानजादा बेगम ने उन दिनों में बड़े प्यार से अकबर का पालन-पोषण किया जब हुमायूँ ईरान चला गया था। 1546 ई. में अकबर का अपने माता-पिता से पुनर्मिलन हुआ और उसका खतना (सुन्नत) संस्कार सम्पन्न हुआ।

कलानूर–हुमायूँ की मृत्यु के समय अकबर पंजाब के गुरूदासपुर के कलानूर में था। यहीं पर 14 फरवरी 1556 ई. को **13 वर्ष 4 माह** की उम्र में अकबर का **राज्याभिषेक** ईंटों के सिंहासन पर बैरमखाँ की देख-रेख में **अबुल कासिम** ने किया था। इस राज्याभिषेक का विरोध **अबुल मआली** ने किया था। हुमायूं, अबुल मआली को **फर्जन्द** एवं **बरखुर्दार** कहता था।

माहम अनगा– अकबर की धाय माँ थी जो एक दमदार वकील एवं प्रथम महिला प्रधानमंत्री थी। हुमायूँ ने अकबर को उन्हीं के संरक्षण में रखकर ईरान चला गया था।

शम्सुद्दीन अतका खाँ– अकबर का **प्रतिपोषक (धाय) पिता** था।

जीजी अनगा– अतगा खाँ की पत्नी थी। अकबर की आयाओं में सर्वप्रमुख **जीजी अनगा** थी। जीजी अनगा ने अकबर को उसके जन्म के पश्चात् दूध पिलाया था। **अतः उसकी मृत्यु के अवसर पर अकबर** ने अपना सर **मुंडवाया था। अजीज कोका** उसकी संतान था और **अकबर का दूध मँहा भाई** था। मिर्जा अजीज कोका को **कातलतास** के नाम से भी जाना जाता था। अकबर ने उसे **खान-ए-आजम** की उपाधि दी थी। महत्वपूर्ण है कि धात्री माताओं का पूरा परिवार **अतका खैल** (प्रतिपोषक परिवार) के नाम से प्रसिद्ध था।

बैरम खाँ–यह कराइबुईल तुर्क था। उसे हुमायूँ ने **खानबाबा** एवं **यार-ए-वफादार** की उपाधि दी थी। हुमायूँ ने मुनीम खाँ के पश्चात् बैरम खाँ को अकबर का **अतालीक** (संरक्षक) बनाया था।

- अकबर को पहली जिम्मेदारी 1551 ई. में **गजनी** के सूबेदार के रूप में दी गयी थी। 1551 में उसका विवाह हिन्दाल की पुत्री **रुकैया बेगम** के साथ हुआ। रुकैया बेगम निस्सन्तान रही और अकबर की मृत्यु के पश्चात् भी वह जीवित रही। 84 वर्ष की आयु में उनका देहासवान हुआ।

1. अकबर के जन्म का नाम **बदरुद्दीन** नहीं था जैसा कि इतिहासकार स्मिथ मानते हैं।

पानीपत का द्वितीय युद्ध

तिथि–5 नवम्बर 1556

युद्धकर्ता–मुगल (अकबर) एवं (अफगान) आदिलशाह। अकबर की तरफ से बैरम खाँ ने एवं आदिलशाह की तरफ से हेमू इस युद्ध के नेतृत्वकर्ता थे।

विशेष–इस युद्ध का प्रत्यक्षदर्शी इतिहासकार **आरिफ कन्दहारी** था।

हेमू ने पानीपत युद्ध से पूर्व आगरा को मुगल सूबेदार इस्कन्दर खाँ ऊजबेक तत्पश्चात् दिल्ली को मुगल सूबेदार तरदीबेग खाँ से छीन लिया था। यह वही तरदी वेग है जिसने हुमायूँ को अकबर के जन्म का समाचार सुनाया था और जिसे बैरम खाँ ने पानीपत युद्ध से पूर्व मरवा दिया था। हेमू अपने हाथी **हवाई** पर बैठकर युद्ध का संचालन कर रहा था। लेकिन, दुर्भाग्य से एक तीर उसकी आंख में लगा और वह हवाई से गिर गया। **आर. पी. त्रिपाठी** का मत है, **''हेमू की पराजय दुर्घटना थी परन्तु अकबर की विजय दैवीय संयोग थी।''** पानीपत के इस युद्ध में हेमू तोपखाना का प्रयोग न कर सका था।

पानीपत के बाद

- **1557** ई. में सिकन्दर सूर ने आत्मसमर्पण कर दिया। अकबर ने उसे माफ कर बिहार की जागीर प्रदत्त की परन्तु सिकन्दर सूर भाग गया और बंगाल में मर गया।
- **1557** ई. में अकबर ने **मानकोट** विजित किया तथा **1558** ई. में **अजमेर** मुगलों ने जीता।
- **1559** ई. में अकबर ने **ग्वालियर** जीता।
- **1560** ई. में जमान ने **जौनपुर** जीत कर मुगल साम्राज्य में सम्मिलित किया।
- **1561** ई. में **आसफ खाँ** ने अफगानों से **चुनारगढ़** जीता।

बैरम खाँ अकबर का **वकील-ए-मुतलक** बना। उसने अपने अनुचरों को 'सुल्तान' और 'खान' की उपाधि से विभूषित किया। बैरम खाँ के संरक्षण का 4 वर्ष कान्धार की हानि (1558) के अतिरिक्त सफलता, सुरक्षा एवं संगठन का काल था। चूंकि प्रशासन में बैरम खाँ का प्रभाव बढ़ता ही जा रहा था इसी कारण **अतका खैल (वंश)** या **रनवास का दल** नाराज हुआ जिसके प्रमुख सदस्य माहम अनगा, जीजी अनगा, शमनुद्दीन अतगा खाँ, हमीदा बानो बेगम, आधम खाँ एवं पीर मुहम्मद थे। बैरम खाँ के पतन में इस दल का विशेष हाथ था। इधर अकबर भी अपने हाथ में सत्ता लेना चाहता था। **आर.पी. त्रिपाठी** के अनुसार, **''अकबर स्वयं बैरम खाँ से पीछा छुड़ाना चाहता था, औरतें तो केवल उसका हथियार थी।''** वहीं बैरम खाँ कामरान के पुत्र अब्दुल माली को बादशाह बनाने की सोचने लगा। यह वही अब्दुल माली है जिसने अकबर के राज्याभिषेक में सम्मिलित होने से इन्कार कर दिया था। परन्तु शम्सुद्दीन अतगा खाँ ने शिवालिक की तलहटी में, व्यास नदी के तट पर हुए **तिलवाड़ा के युद्ध** में बैरमखाँ को पराजित कर दिया। अकबर ने बैरम खाँ को मक्का भेज दिया। परन्तु गुजरात के पाटन में अफगानों (मुबारक खाँ नोहनी) ने उसकी हत्या कर दी। मुस्लिम फकीरों ने बैरम खाँ के शव को दफनाया। 1561 में अकबर ने बैरम खाँ की पत्नी **सलीमा बेगम** से विवाह किया और उसके पुत्र अब्दुर्ररहीम को अपना पुत्र माना। 1584 में अब्दुर्ररहीम को उसके पिता बैरम खाँ का खिताब खान-ए-खाना दिया गया। सलीमा बेगम की मृत्यु 1612-13 ई. में हुई थी।

स्त्रैण शासन या पर्दा शासन या पेटीकोट गवर्नमेन्ट–इतिहासकार **स्मिथ 1560-64** ई. के चार वर्षीय काल को **पर्दा शासन** बताते हैं। वहीं अधिकतर इतिहासकार इसकी कालावधि 19 मार्च 1560 से 24 जून 1562 तक मानते हैं। इसका आशय उस समयावधि से है जब अकबर प्रशासनिक कृत्यों हेतु पूर्णतया हरम की स्त्रियों पर निर्भर हो गया था। इसका कारण माहम अनगा थी जो कि एक दमदार वकील एवं पहली महिला प्रधानमंत्री थी। **आधम खाँ** एवं **पीरमुहम्मद** माहम अनगा के पुत्र थे। अकबर ने अत्का खैल के सरदारों को पंजाब से हटा दिया। बायजीद बयात के अनुसार, ''उनमें से प्रत्येक को हिन्दुस्तान के अलग-अलग कोनों में एक-एक जागीर देकर सितारों की तरह बिखेर दिया।''

बाजबहादुर

यह मालवा का शासक था, **रूपमती** उसकी पत्नी थी। उन्होंने **माण्डू** को संगीत का केन्द्र बना दिया था। **तानसेन** रूपमती से संगीत में हारा था। रुपमती नर्तकी, कवयित्री एवं संगीतज्ञ थी। अकबर ने नक्कारा (नगाड़ा) बजाने की विद्या बाजबहादुर से ही सीखी थी। पति-पत्नी की मजार उज्जैन में है।

Scanned with CamScanner

(1) अकबर का विश्वास था कि यदि पड़ोसी राज्यों के साथ युद्ध नहीं किया जायेगा तो वे उसके विरूद्ध युद्ध करेंगे। साम्राज्य विस्तार के तहत पहला अभियान **मालवा विजय** (1562) थी। **असीरगढ़** (1601–02) अकबर की अंतिम विजय थी।

(2) 1585–1599 अकबर ने उत्तर-पश्चिम (लाहौर, काबुल एवं अटक) में व्यतीत किया। 1591 में लाहौर से चारे दक्कनी राज्यों हेतु **4** कूटनीतिक प्रतिनिधिमण्डल दक्षिण भारत भेजा था। **फैजी-खानदेश, ख्वाजा अमीनुद्दीन-अहमदनगर, मीर मुहम्मद अमीन मासुदी-बीजापुर** तथा **मिर्जा मसूद** को **गोलकुण्डा** भेजा गया।

मालवा– का शासक **बाजबहादुर** था जिसकी राजधानी **सारंगपुर** थी। **निजामुदीन अहमद** के अनुसार, ''बाजबहादुर राज काज छोड़कर ऐन्द्रिय सुखों में लिप्त हो गया था। उसके राज्य में अत्याचारियों एवं शोषकों के हाथ बहुत लम्बे थे। फकीरों, रैयतों के ऊपर हुए अत्याचार की वजह से वे मृत्यु के द्वार तक पहुँच गये थे।'' अतः यहाँ सुव्यवस्था स्थापित करने हेतु अकबर द्वारा मालवा विजय करना जरूरी था। **अधम खाँ** के नेतृत्व में 1561 ई. में मालवा अभियान हुआ। बाजबहादुर युद्ध क्षेत्र से भाग गया। इस युद्ध का प्रत्यक्षदर्शी इतिहासकार **बदायूनी** था। अधम खाँ ने मालवा के हिसाब-किताब में गबन किया और नये वकील शम्सुद्दीन अतगा खाँ को मार दिया था। अतः अकबर ने अधम खाँ को **आगरा के किले** से फेंकवा दिया। उसके 40वाँ के दिन जून 1562 में माहम अनगा भी मर गयी। अकबर ने अब पीर मुहम्मद को मालवा का सूबेदार बनाया। बाजबहादुर ने खानदेश के सुल्तान की मदद से उस पर आक्रमण किया। परन्तु, भागते समय **पीरमुहम्मद** की **नर्मदा नदी** में डूबने से मृत्यु हो गयी। इसके पश्चात् अकबर ने अब्दुल्ला खाँ ऊजबेक को 'शुजात खाँ' की उपाधि देकर मालवा भेजा जिसने बाजबहादुर को गिरफ्तार कर अकबर के पास भेज दिया। बाजबहादुर को पहले एक हजारी मनसबदार बाद में दो हजार का मनसब दिया गया।

मेड़ता विजय–1562 ई. में जयमल को हराकर **शर्फुद्दीन** ने मेड़ता विजय की।

गोंडवाना (गढ़-कटंगा) विजय–यह प्रान्त गढ़-कटंगा के दोहरे नाम से जाना जाता था। इसका कारण इसके दो मुख्यालय गढ़ (चौरागढ़) तथा कटंगा था। 1564 ई. में **आसफ खाँ** ने दुर्गावती को **नरही** एवं **चौरागढ़ युद्ध** में हराकर उसकी राजधानी चौरागढ़ जीत लिया।

मेवाड़ अभियान (1567–68)–यहाँ का शासक महाराणा प्रताप का पिता **उदयसिंह** था। इस समय उसकी राजधानी **चित्तौड़** थी। उदयसिंह ने सार्वजनिक रूप से मुगलों को **मलिन विदेशी** कहा और मालवा के बाजबहादुर को संरक्षण दिया था।

दुर्गावती

चंदेल (महोबा) के यह शासक **शलिवाहन** की पुत्री थी जो कि गढ़कटंगा में ब्याही थी।[1] **दलपत बुन्देला** पति एवं **वीरनारायण** पुत्र था। उसके विषय में प्रचलित था कि जब वह किसी बाघ की खबर सुन लेती तो जब तक उसे मार न लेती जल ग्रहण नहीं करती। एक बार उसने मालवा के बाजबहादुर को भी पराजित किया था। दुर्गावती ने अपने मंत्री 'आधार कायस्थ' को अकबर के पास सुलह हेतु भेजा था। अपने अन्त समय में दुर्गावती ने आत्महत्या कर लिया।

1. **अमनदास** जिसने रायसेन जीतने में गुजरात के बहादुरशाह की मदद की थी और उससे **संग्रामशाह** की उपाधि पायी थी क पुत्र-वधु दुर्गावती थी।

Scanned with CamScanner

राणा का पुत्र संकटसिंह धौलपुर में अकबर के साथ हो लिया था। राजपूतों का इतिहास लिखने वाले कर्नल टाड ने अपनी पुस्तक Annals and Antiquities of Rajasthan में कहा है कि "राजपूतों को अपने इतिहास में से उदयसिंह का नाम हटा देना चाहिए।" हालांकि यह मत सत्य नहीं है। अकबर ने फरवरी 1568 ई. में चित्तौड़ विजित किया। इस विजय के उपलक्ष्य में उसने **फतहनामा** जारी किया तथा चित्तौड़ की महामाता मन्दिर से विशाल झाड-फानूस भी आगरा लाया।[1] चित्तौड़ का दुर्ग आसफ खाँ को दिया गया। इसके पश्चात् अरावली में उदयसिंह ने अपनी नवीन राजधानी **उदयपुर** की नींव डाली। 1572 ई. में गोगुंडा में उसकी मृत्यु हुई। तदुपरान्त अपने छोटे भाई **जगमल** को सैनिक विप्लव द्वारा गद्दी से हटाकर राणा प्रताप ने सिंहासन प्राप्त किया। जगमल ने अकबर के दरबार में जाकर शरण लिया। अकबर ने उसे **जहाजपुर** की जागीर प्रदान की।

जयमल एवं फत्ता–जयमल (मीराबाई का चचेरा भाई) एवं **फतह सिंह (फत्ता)** के अधीन **चित्तौड़** छोड़कर उदयसिंह पहाड़ियों की ओर भाग गया था। अकबर ने जयमल को धोखे से गोली मार कर दी। फत्ता, उसकी माँ एवं पत्नी ने मुगलों से युद्ध करते हुए अपनी जान दी। अकबर इनकी वीरता से प्रभावित हुआ और जयमल एवं फत्ता की हाथी पर सवार मूर्ति **आगरा किले के प्रवेश द्वार** (दिल्ली दरवाजा) पर स्थापित किया। बाद में मूर्ति औरंगजेब ने हटवा दिया।

इसके तुरन्त बाद बिहार एवं बंगाल के सुल्तान **सुलेमान कर्रानी** ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली।

रणथम्भौर एवं कलिन्जर–1569 ई. में बूँदी के हाड़ा राजपूत **सुरजनराय** से रणथम्भौर जीता गया। सुरजनराय एकमात्र शासक था जिसको अकबर ने तव्वारा (वाद्य यंत्र) बजाने की छूट दी थी। उससे अकबर ने काफी उदार शर्तों पर संधि की थी। कलिन्जर का दुर्ग **रीवा** के राजा **रामचन्द्र** के अधिकार में था। उसे मजनू खाँ काकशाल ने 1569 ई. में हरा दिया। रामचन्द्र को इलाहाबाद के निकट जागीर प्रदान की गयी। मजनू खाँ को कलिन्जर का प्रथम मुगल सूबेदार बनाया गया। रीवां से रामतनु पाण्डेय नामक संगीतज्ञ अकबर के दरबार में आया जो कि आगे चलकर तानसेन के नाम से विख्यात हुआ। **1570 ई.** में जब अकबर **नागौर दरबार** में था, उसी समय **बीकानेर** के शासक **राय कल्याणमल** तथा जैसलमेर के **रावल हरराय** ने आत्मसमर्पण कर दिया।

महाराणा प्रताप

माता/पिता – **जयवंताबाई** एवं **उदयसिंह**

जन्म – **9 मई, 1540 ई.**

मृत्यु– **19 जनवरी, 1597 ई.**

कुल जीवन काल – **57 वर्ष**

उपनाम–किका। इतिहासकार बदांयूनी ने अपने विवरण में सर्वत्र राणा प्रताप के इसी उपनाम का प्रयोग किया है।[2]

वंश–सिसोदिया

राज्याभिषेक–3 मार्च 1572 ई. को **गोगुण्डा** में।[3]

राज्याभिषेक समारोह – राज्याभिषेक के एक वर्ष पश्चात् विधि-सम्मत रूप से **कुंभलगढ़** में **राज्याभिषेक समारोह** हुआ। जिसमें महाराणा प्रताप का 'पूर्वगामी शासक' के नाम से लोकप्रिय मारवाड़ नरेश राव चन्द्रसेन भी उपस्थित था।

राजधानी–कुंभलगढ़। मृत्यु से पूर्व उन्होंने **चावंद** को नयी राजधानी बनायी थी।

विशेष– (1) महाराणा प्रताप के संरक्षण में **हकीम खाँ सूर** एवं चित्रकार **निसारुद्दीन** मेवाड़ में रहे।

(2) मेवाड़ में भूमिगत जल स्रोतों की खोज पेड़-पौधों आदि के संरक्षण हेतु महाराणा ने बालसखा एवं दरबारी पण्डित **चक्रपाणि मिश्र** से 1577 ई. में एक ग्रन्थ लिखवाया जिसे प्रारम्भ में **प्रतापवल्लभ** कहा गया। परन्तु, महाराणा प्रताप के आग्रह पर इसका नाम **विश्वबल्लभ** पड़ा।

(3) राणा प्रताप का घोड़ा **चेतक** (बलीचा गाँव में इसके सम्मान में छतरी निर्मित है) तथा हाथी का नाम **रामप्रसाद** था। अकबर ने हाथी का नाम पीरप्रसाद रखा था।

---

1. फतहनामा मूलतः अबुल कासिम के **मुंशत-ई-नामाकिन** नामक ग्रन्थ में संग्रहीत है।
2. वस्तुतः पहाड़ी भाग में भील छोटे बच्चों को 'कीका' कहकर पुकारते थे इसलिए महाराणा प्रताप भीलों के बीच कीका के नाम से लोकप्रिय हुए।
3. कुछ अन्य इतिहासकारों के अनुसार, 28 फरवरी, 1572 ई. होली के दिन राणा प्रताप का राज्याभिषेक सम्पन्न हुआ था।

Scanned with CamScanner

हल्दीघाटी का युद्ध

तिथि–18 जून[1], 1576

अन्य नाम – अबुल फजल ने इसे **खमनौर** का युद्ध; बदाँयूनी ने **गोगुन्दा** का युद्ध; कर्नल टाड ने **मेवाड़ की थर्मोपल्ली** कहा है। जिस स्थल पर यह युद्ध हुआ उसे **रक्त-तलाई** कहा जाता है क्योंकि मैदान में दोनों सेनाओं के सैकड़ों योद्धा के घावों से बहे रक्त ने एक ताल का स्वरुप ले लिया था।

राजपूत सेनापति; उपसेनापति–महाराणा प्रताप; हकीमखाँ सूर[2]

मुगल सेनापति; उपसेनापति–मानसिंह; आसफ खाँ

परिणाम– दोनों पक्ष अपनी-अपनी विजय का दावा करते हैं।[3]

विशेष–(i) इतिहासकार **बदांयूनी** इस युद्ध में **गाजी** का खिताब पाने हेतु (अकबर की अनुमति से) एक सैनिक के रूप में सम्मिलित हुआ था।

(ii) मेवाड़ ही वह राजपूत रियासत थी जिसने अकबर के सामने कभी भी आत्मसमर्पण नहीं किया।

(iii) इतिहासकार **कर्नल टाड** के अनुसार, **''हल्दीघाट मेवाड़ की थर्मोपोली है तथा देवार युद्ध क्षेत्र उसका मैराथन।''** **वी.ए. स्मिथ** के अनुसार, **''देशभक्ति ही महाराणा प्रताप का सबसे बड़ा अपराध था।''**

1575 में सिवाना दुर्ग जो कि मारवाड़ के चंद्रसेन की शक्ति का केन्द्र था, पर विजय करने के पश्चात् अकबर ने मेवाड़ पर हमला किया। मानसिंह मण्डलगढ़ के मार्ग से होता हुआ गोगुण्डागढ़ से चौदह मील दूर हल्दीघाटी दर्रे के निकट पहुँचा। इसी समय राणा प्रताप का भाई **सगर** अकबर से मिल गया था। हालांकि युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व अकबर ने महाराणा प्रताप को मनाने हेतु 4 दूतमण्डल क्रमशः **जलाल खाँ कूरची** (नवम्बर 1572), **मानसिंह** (जून 1573), **भगवानदास** (जून 1573) एवं **राजा टोडरमल** (नवम्बर 1573) के नेतृत्व में भेजा था। मानसिंह से तो महाराणा ने मिलने से भी इन्कार कर दिया, लेकिन भगवानदास द्वारा लाया गया खिलअत राणा ने पहन लिया और अपने पुत्र अमरसिंह को उसके साथ मुगल राजधानी में भेजा था। अन्ततः दोनों पक्षो के बीच विख्यात हल्दीघाटी का युद्ध हुआ। महत्त्वपूर्ण है कि यह युद्ध देशी (हिन्दू) एवं विदेशी (मुसलमान) के बीच की लड़ाई नहीं थी क्योंकि, महाराणा की तरफ से हकीमखाँ सूर जैसे मुसलमान भी सम्मिलित हुए थे। **बीदा झाला** ने युद्ध में राणा प्रताप को सुरक्षित निकलने के लिए उनका मुकुट स्वयं धारण कर लिया। चूंकि मानसिंह एवं आसफ खाँ महाराणा को पकड़ नहीं पाये इसीलिए अकबर ने कुछ समय के लिए दोनों का दरबार में प्रवेश निषेध कर दिया।

13 अक्टूबर 1576 ई. को अकबर स्वयं गोगुंदा आया था। **शहनवाज खाँ** को राणा प्रताप को पकड़ने के लिए नियुक्त किया गया लेकिन वह सफल नहीं हो सका। सर्वप्रथम **जालौर** पर अधिकार कर अक्टूबर 1576 ई. में अकबर ने राणा प्रताप के विरुद्ध प्रस्थान किया। गोगुण्डा में अकबर ने कुली खाँ को ईदर के राय नारायणदास के विरुद्ध भेजा क्योंकि राणा प्रताप ने उसे अकबर के विरुद्ध उकसाया था। **राजा भगवानदास** एवं **कुत्बुद्दीन** को राणा प्रताप के विरुद्ध नियुक्त किया गया। मुगल सेना ने ईदर जीत लिया और राजा ने राणा प्रताप की भाँति पहाड़ियों में जाकर शरण ली।

1577 ई. में अकबर ने मेवाड़ के विरुद्ध भगवानदास, मानसिंह एवं शहनवाज खाँ को नियुक्त किया। गोगुण्डा, कुम्भलगढ़ एवं उदयपुर पर मुगलों का अधिकार हो गया। परन्तु, वे राणा को नहीं पकड़ पाये। इसके पश्चात् महाराणा अरावली की पहाड़ियों में चले गये और मुगलों से छापामार युद्ध विधि से युद्ध किया। आगे चलकर इसी युद्ध पद्धति को **वर्गी-गिरी** के नाम से मलिक अंबर एवं शिवाजी ने विकसित किया। महाराणा प्रताप ने चित्तौड़ छोड़कर मेवाड़ के अधिकांश भागों को पुनर्विजित कर लिया था। मृत्यु से पूर्व उन्होंने अपने नायकों से प्रतिज्ञा करवायी कि ''उसका देश तुर्कों के हाथों में नहीं सौंपा जायेगा।'' टाड के अनुसार,

---

1. कुछ इतिहासकार युद्ध की तिथि 21 जून सुझाते हैं।
2. हकीमखाँ सूर का मकबरा खमनौर में है।
3. हाल ही में डा. चन्द्रशेखर शर्मा महोदय ने राजप्रशस्ति, राजप्रकाश एवं जगदीश मंदिर प्रशस्ति के आधार पर नवीन मत का प्रतिपादन किया है कि युद्ध में अन्ततः महाराणा प्रताप ही विजयी हुए।

Scanned with CamScanner

''यदि मेवाड़ का उसका अपना थुसिडिडीज एवं अपना जेनोफोन (यूनानी इतिहासकार) होता, तो ऐतिहासिक प्रतिभा के लिए पोलोपोनेसस (यूनान की प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटनाएँ) का युद्ध भी उतना अधिक रंग-बिरंगे प्रसंग प्रदान न करता जितने मेवाड़ के अनेक परिवर्तनों के बीच महाराणा प्रताप के देदीप्यमान शासन काल के कार्यों ने प्रदान किया है।''

1599 ई. में अकबर ने शहजादा सलीम को अजमेर का सूबेदार बनाया। उसे अमरसिंह के खिलाफ कार्यवाही करने को कहा गया। इसके पश्चात् 1603 ई. में सलीम को पुनः मेवाड़ अभियान पर नियुक्त किया गया परन्तु वह इलाहाबाद से चला ही नहीं। अतः इसके बाद अकबर ने मेवाड़ के विरुद्ध कोई अभियान नहीं भेजा।

अकबर की राजपूत नीति

अकबर के सम्मुख कुछ समस्यायें थी–प्रथम उसे मुगलों की सत्ता हेतु अफगानों द्वारा प्रस्तुत की गयी चुनौती का अन्त करना था। द्वितीय उसे मुगल साम्राज्य का विस्तार करना था। तीसरे भारत की बहुसंख्यक हिन्दू प्रजा के बीच मुगल शासन को लोकप्रिय बनाना था। चतुर्थ, उसे मुस्लिम अमीर वर्ग को सन्तुलित भी करना था जिसमें सर्वाधिक संख्या **तुरानी अमीरों** की थी। इन्हीं सब कारणों की वजह से राजपूतों का सहयोग जरूरी था। अकबर **पहला** मुगल शासक था जिसने एक सुनिश्चित नीति के तहत राजपूतों को अपने पक्ष में करने का प्रयास किया।

उसकी राजपूत नीति **गाजर एवं छड़ी** के सिद्धांत पर आधारित थी। इस संकल्पना में निम्नलिखित प्रावधान थे-

(i) राजपूतों के वैदेशिक संबंधों का निर्धारण अब से बादशाह करेगा।

(ii) राजपूत अपनी रियासत में स्वतंत्र होंगे और उनका राज्य **वतन जागीर** के रूप में उन्हीं को आवंटित होगा। हालांकि इसका अपवाद गोंडवाना था। गोंडवाना एकमात्र राजपूत रियासत थी जिसे अकबर ने मुगल साम्राज्य में सम्मिलित किया था।

(iii) मुगल घराने में वैवाहिक सम्बन्ध रखे या न रखे यह राजपूतों की मर्जी।

(iv) राजपूत शासक नियमित रूप से कर एवं सैनिक सहायता बादशाह को देते रहेंगे।

आमेर रियासत के कछवाहा राजपूत–1562 ई. में जब अकबर अजमेर में ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के दरगाह पर सर्वप्रथम जा रहा था तो **सांगानेर** नामक स्थान पर आमेर या अम्बर (वर्तमान जयपुर) के कछवाहा शासक **बिहारीमल (भारमल)** ने अकबर से मदद मांगी। यही वह **पहला** राजपूत शासक था जिसने स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली। उसे 5000 का मनसब मिला था। उसने अपनी पुत्री **हरखाबाई** का विवाह अकबर से **सांभर** में सम्पन्न किया। किसी राजपूत राजकुमारी के साथ अकबर का यह प्रथम विवाह था। हरखाबाई जिनको **मरियम उज्जमानी** (संसार की माँ) की उपाधि दी गयी की संतान **सलीम** हुआ।

अकबर ने हरखाबाई से विवाह के पश्चात् मालदेव की गाने वाली पत्नी टीपूमानोगुनो की पुत्री **रुकमावती** से विवाह किया था। महत्त्वपूर्ण है कि अकबर ने अपनी हिन्दू पत्नियों को पूरी धार्मिक स्वतंत्रता दी थी। जोधाबाई के महल में राम और हनुमान की आकृति का अंकन हुआ है। इसके पश्चात् अकबर ने **बीकानेर** के राय कल्याणमल एवं **जैसलमेर के हरराय** के राजपूत वंश में भी विवाह किया था। उसने भारमल को **आगरा का प्रभारी** गुजरात अभियान के समय बनाया गया। अकबर ने उसके पुत्र भगवानदास को **लाहौर** का संयुक्त सूबेदार सईद खाँ के साथ फिर अकेले बनाया। भगवानदास की पुत्री **मानबाई** का विवाह सलीम से हुआ तथा उसके पुत्र **मानसिंह** को 7000 की मनसबदारी दी गयी। अकबर ने प्रशासन में कछवाहा राजपूतों को वरीयता दिया। आईन-ए-अकबरी में वर्णित 27 राजपूत शासकों में 13 कछवाहा थे।

अकबर की राजपूत नीति सफल रही। उसने हिन्दुस्तान की तलवारी भुजा कहे जाने वाले राजपूतों के अहम को सन्तुष्ट कर उन्हें महत्त्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया। मुगल साम्राज्य के प्रबल विरोधी को साम्राज्य के सहायक उपकरण में तब्दील कर दिया गया। इसी कारण **कर्नल टाड** ने अकबर को **राजपूत स्वतंत्रता का प्रथम सफल विजेता** घोषित किया।

Scanned with CamScanner

गुजरात विजय (1572) के निम्नलिखित कारण थे–

(i) वैदेशिक व्यापार को गति देने हेतु यहाँ के भड़ौच बन्दरगाह पर अधिकार करना अनिवार्य था।

(ii) पुर्तगालियों को नियन्त्रित करना क्योंकि वे हज यात्रियों को लूटते थे।

(iii) गुजरात समस्त मुगल विद्रोहियों खासकर मिर्जाओं की शरणस्थली बन गया था।

(iv) अकबर एक अखिल भारतीय साम्राज्य निर्माण करने को इच्छुक था। अतः उसके इस अभियान को भी साम्राज्यवाद
की परिधि में ही रखा जाना चाहिए। महत्त्वपूर्ण है कि इसी गुजरात तक पहुँचने के लिए राजपूताना का पतन अनिवार्य था।
इसी समय अकबर ने मुल्लाओं को बचन दिया था कि वह गुजरात में महदवी आंदोलन बन्द करा देगा परन्तु विजय पश्चात
उसने ऐसा कुछ नहीं किया। गुजरात का समकालीन सुल्तान **मुजफ्फर तृतीय** था जिसका संरक्षक **एतियाद खाँ** था। एतियाद
खाँ ने ही अकबर को गुजरात विजय हेतु आमंत्रित किया था। अकबर गुजरात जीत लेता है। दिसम्बर 1572 ई. को **सरनाल के**
युद्ध में इब्राहीम मिर्जा को पराजित किया गया। इसी समय अकबर ने भगवानदास को एक **निशान एवं नक्कारा** प्रदान किया।
इसी युद्ध में भगवानदास का छोटा पुत्र भूपतराय मारा गया। भूपतराय की मृत्यु का शोक मनाने हेतु अकबर ने हरखाबाई को आमेर
भेज दिया। उसने **मिर्जा अजीज कोका** को गुजरात का **सूबेदार** बनाया और **टोडरमल** को गुजरात की लगान व्यवस्था का
दायित्व सौंपा। परन्तु, अकबर के आगरा पहुँचते ही वहाँ पुनः विद्रोह हो गया। अब्दुल्ला सुल्तानपुरी के साथ **भारमल** को आगरा
का प्रभारी बनाकर **9** या **11 दिनों** में ही अकबर अहमदाबाद आ गया जिससे विद्रोहियों की रीढ़ टूट गयी। इसी समय अकबर
ने पुर्तगाली वायसराय दोम एंटोनियो दे नोरोन्हा के दूत **एंटोनियों काब्राल** से कार्टाज प्राप्त किया था।

विशेष–(1) इतिहासकार **स्मिथ** ने 'द्वितीय गुजरात अभियान' को **ऐतिहासक द्रुतगामी आक्रमण** कहा है।

(2) आरिफ कंदहारी के अनुसार, "खंबायत (कैम्बे) में ही अकबर ने पहली बार समुद्र (ओमान की खाड़ी) देखा था।"

(3) गुजरात विजय के उपलक्ष्य में ही अकबर ने सीकरी का नाम **फतेहपुर** सीकरी किया। इसी विजय की स्मृति में बुलन्द
दरवाजे का निर्माण हुआ था।

सखरेज का युद्ध (1584)–आगे चलकर अब्दुर्रहीम को गुजरात का सूबेदार बनाया गया जिसने 1584 ई. में सखरेज के
युद्ध में मुजफ्फर तृतीय को पराजित किया तत्पश्चात् **राजपीपला** में भी मुगलों ने उसे हराया दिया। इसी समय उसे खानखाना
की उपाधि मिली।

बिहार एवं बंगाल विजय– 1576 ई. में यहाँ के शासक **दाऊद खाँ** को हराकर सम्पन्न हुआ। दाऊद सुलेमान कर्रानी
का पुत्र था जिसकी मृत्यु 1572 ई. में हो गयी थी। बंगाल के सूबेदार मुनीम खाँ ने दाऊद को 3 मार्च 1575 ई. को **तुकरोई**
युद्ध में पराजित किया। अन्त में **राजमहल युद्ध** (जुलाई 1576) में दाऊद को बंगाल के सूबेदार हुसैनेकुली खान-ए-जहाँ ने
पराजित किया और मार डाला। महत्वपूर्ण है कि दाऊद खाँ की मृत्यु से 236 वर्ष (1340-1576) पुराना बंगाल राज्य समाप्त
हो गया। यहीं पर **काकशाल विद्रोह** हुआ जिसे टोडरमल एवं अजीज कोका ने दबा दिया। कूच बिहार ने भी मुगल आधिपत्य
स्वीकार कर लिया।

काबुल अभियान–1581 ई. में शहजादा मुराद ने किया। महत्त्वपूर्ण है कि इतिहासकार **स्मिथ ने 1581** ई. के वर्ष को
अकबर का **सबसे संकटमय वर्ष** माना है। काबुल का शासक अकबर का सौतेला भाई मिर्जा मोहम्मद हकीम था जिसकी माता
मानचूचक **बेगम** थी। वह भारत का सिंहासन प्राप्त करना चाहता था। अकबर पहला भारतीय शासक था जिसने काबुल शहर
में प्रवेश किया। उसके साथ **फादर मान्सराट** भी आया था। मुराद ने हकीम को हरा दिया जिसे अकबर ने माफ कर दिया अकबर
ने काबुल का सूबेदार **बख्तूंनिशाबेगम** को बनाया। यह पहली **मुस्लिम महिला सूबेदार** थी। इसके पश्चात् **मुगलानी बेगम**
की चर्चा मिलती है जिसको अहमदशाह अब्दाली ने 1750 ई. में पंजाब का सूबेदार बनाया था। 1585 ई. में हकीम की मृत्यु हो जाने
पर अकबर ने मानसिंह को काबुल को मुगल साम्राज्य में सम्मिलित करने हेतु भेजा। मानसिंह काबुल का पहला मुगल गवर्नर था।

Scanned with CamScanner

कश्मीर अभियान–यहाँ पर चाक वंश का शासन था। ... यूसुफ खाँ था। कश्मीर केसर के लिए प्रसिद्ध था। सर्वप्रथम **1585** ई. में मिर्जा शाहरूख एवं भगवानदास को कश्मीर भेजा गया। इन्होंने युसूफ खाँ से संधि कर ली, परन्तु, 1586 में अकबर ने कासिम खाँ को भेजकर कश्मीर का विलय कर लिया। यूसुफ खां एवं उनके पुत्र याकूब को मुगल दरबार में भेज दिया गया।

1591 ई. में **अब्दुर्रहीम खानखाना** ने **सिन्ध** जीता। सिन्ध को उन दिनों थट्टा कहा जाता था। भक्खर ऊपरी सिन्ध की राजधानी थी। सिन्ध के तैमूरी शासक **मिर्जा जानीबेग** ने खुद दरबार में आकर **बंद-ए-दरगाह** (दरबार का बंदा) की स्थिति स्वीकार की। वह अकबर की दीन-ए-इलाही के चुनिन्दा आध्यात्मिक शिष्यों (**इरादत-गजीनान**) में शामिल हो गया। उसे 3000 का मनसब और मुल्तान की जागीर दिया गया। इसी मिर्जा जानीबेग ने असीरगढ़ किले पर टिप्पणी की थी कि "यदि उसके पास असीरगढ़ जैसा किला होता तो वह 100 साल तक सिन्ध की रक्षा करता।"

1592 ई. में **ओडिशा, मानसिंह** ने विजित किया। प्रसन्न होकर अकबर ने मानसिंह को बिहार के साथ-साथ बंगाल का भी सूबेदार बना दिया।

कांधार– 1558 ई. में ही कांधार दुर्ग मुगलों के हाथ से निकल गया था। 1595 ई. में ईरानी सूबेदार मुजफ्फर हुसैन मिर्जा ने मुगल सूबेदार शाहबेग को स्वेच्छा से कांधार का किला दे दिया। हालांकि अकबर ने खानखाना को कांधार दुर्ग पर अधिकार करने हेतु भेजा था। कांधार पर अधिकार करने से मुगलों को एक वैज्ञानिक सीमा प्राप्त हुई।

बलुचिस्तान विजय–अकबर ने 1595 ई. में अफगानों द्वारा शासित बलुचिस्तान की विजय हेतु **मीर मासूम** को तैनात किया। उसने मकरान सहित पूरा बलुचिस्तान जीत लिया। मीर मासूम तलवार के साथ कलम का भी धनी व्यक्ति था। वह **तारीख-ए-सिन्ध** का लेखक था।

दक्षिण भारत

दक्षिण अभियान के निम्नलिखित कारण थे–

(i) अकबर पूरे देश पर प्रभुता का दावा करता था। वह 'राज्य के भीतर राज्य' की नीति का समर्थक नहीं था। इसीलिए मुगल बादशाह दक्कनी शासकों के लिए 'शाह' के स्थान पर **खान** शब्द का प्रयोग करते थे और उन्हे **मर्जबान** (स्थानीय सरदार) कहते थे। एक बार अकबर ने ऐन-उल-मुल्क को बीजापुर के शासक अलि आदिलशाह के मार्गदर्शन हेतु भेजा था। बीजापुर दक्कन का सबसे अधिक शक्तिशाली राज्य था।

(ii) इस समय दक्कन राजनीति का उबलता हुआ लावा था क्योंकि विभिन्न दक्कनी राज्यों में आये दिन युद्ध होते रहते थे।

(iii) यहाँ पर धर्म के नाम पर भी संघर्ष था। गोलकुण्डा ने शिया धर्म को राजधर्म बनाया तो अहमदनगर ने महदवी को। जब संघर्ष हो गया तो अहमदनगर ने पुनः शियापंथ को राजधर्म बना दिया। अतः अकबर के द्वारा प्रतिपादित 'सुलह कुल' की अवधारणा को इस संदर्भ में भी देखा जाना चाहिए।

(iv) दक्कन इसलिए भी जीतना जरूरी था कि यहाँ पर पुर्तगालियों का प्रभाव बढ़ता ही जा रहा था। 1580 ई. में अकबर ने एक सेना कुतुबउद्दीन खाँ के नेतृत्व में भेजी ताकि वह पुर्तगालियों को बन्दरगाहों से निकाल बाहर करें।

अन्ततः दक्षिण अभियान मुगल साम्राज्यवाद का ही अगला चरण था जिसके बीज इतिहास के गर्भ में ही निहित थे। उत्तर भारत जीता जा चुका था; अतः विजित करने हेतु अब दक्षिण ही शेष बचा था। अकबर ने सर्वप्रथम (1575 ई. में) **मीर हुसैन रिजवी** को एक 'भ्रमणशील दूत' के रूप में दक्कन की परिस्थितियों का पता लगाने हेतु भेजा था। एक अन्य मुगल दूत मीर मोहसिन ने रिपोर्ट दी थी कि दक्कन में अशान्ति एवं अस्थिरता है। मुगल अधीनता स्वीकार करने हेतु अकबर ने **फैजी** को अपना राजदूत बनाकर **खानदेश** भेजा था।

Scanned with CamScanner

खानदेश : स्थिति– नर्मदा एवं ताप्ती के बीच खानदेश राज्य बसा था।
संस्थापक–मलिक राजा अहमद फारूकी
स्थापना वर्ष – 1399 ई.
राजधानी–बुरहानपुर
विशेष–खानदेश का नाम अकबर ने **दाँदेश** रखा था।

दक्षिण के प्रवेश द्वार के नाम से विख्यात खानदेश पर 1562 ई. में पीर मुहम्मद खां ने आक्रमण किया तदुपरान्त 1576 ई0 ... यहाँ पर एक और मुगल हमला हुआ। परन्तु, कहीं और व्यस्त होने के कारण अकबर यहाँ कोई प्रभावी कार्यवाही नहीं कर पाया। ...पूर्ण है कि अकबर की दक्षिणी राज्यों से मुगल अधीनता स्वीकारने की अपील केवल खानदेश के समकालीन शासक **अलीरजा** ...ने ही स्वीकार की थी। वह मुगलों की तरफ से अहमदनगर के विरूद्ध युद्ध करते हुए मरा था। लेकिन, उसके पुत्र **मीरन बहादुर** ...स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया। उसने स्वयं को असीरगढ़ के दुर्ग में सुरक्षित कर लिया। अतः 1601 ई. में अकबर ने असीरगढ़ जीत ... जो कि अकबर के जीवन की अंतिम विजय थी। कहा जाता है कि अकबर ने असीरगढ़ के किले को सोने की कुन्जियों (दुर्ग रक्षक ...ब को घूस देकर) से खोला था। असीरगढ़ को दक्कन का सबसे शक्तिशाली दुर्ग माना जाता था। मुगल साम्राज्य की सबसे बड़ी तोपे ...स दुर्ग के आगे बेकार साबित हुई। इसी विजय के उपलक्ष्य में अकबर ने एक स्वर्ण सिक्का चलाया जिस पर **बाज** का अंकन था।

अहमदनगर

यहां का शासक **बुरहान उल मुल्क** था जिसकी हाल ही में मृत्यु हो गयी थी। चाँद बीबी बुरहान-उल-मुल्क की बहन थी। ...**चाँद खातून** या **चाँद सुल्ताना** भी कहा गया। **चाँद बीबी** बीजापुर की रानी थी परन्तु अपने भतीजे को प्रशासनिक कार्यों ...दद देने हेतु अहमदनगर आ गयी थी। इससे पूर्व उसने 1580 ई. में अपने पति की मृत्यु के पश्चात बीजापुर के प्रशासनिक ...ों का सफलतापूर्वक संचालन किया था। अहमदनगर में उसे **हब्शी गुट** का समर्थन प्राप्त था। 1599 ई. में चांद बीबी की ... हो गयी या फिर उसने आत्महत्या कर लिया।

शासक की मृत्यु के पश्चात् उसका अल्पव्यस्क पुत्र **बहादुर निजामशाह** शासक बनता है। चाँद बीबी एवं **मियां मंझू** ...शासन पर पकड़ मजबूत बनाने के लिए अपने-अपने पृथक दल बना लिया। मियां मंझू ने इसी समय मुगलों को अहमदनगर ...आक्रमण करने हेतु आमंत्रित कर दिया। अतः **1595** ई. में अकबर ने **मुराद** ...**अब्दुर्रहीम** को अहमदनगर जीतने हेतु भेजा। परन्तु, दोनों में मतभेद हो जाने ...उनको बुलाकर नयी जोड़ी **दानियाल** एवं **अबुल फजल** को भेजा गया। ...**पत** की लड़ाई (1597 ई.) में मुगलों ने दक्कनी सेना को पराजित किया। ...मदनगर से 1596 ई. में संधि हो गयी। संधि के तहत मुगलों को **बरार** सूबा ...अहमदनगर का दुर्ग प्राप्त हुआ। बरार के दुर्ग एलिचपुर पर मुगलों का अधिकार ...गया। मुगलों ने यहीं पर एक नया शहर **शाहपुर** बसाया जो उनका सैनिक ...यालय था। बदले में मुगलो ने बहादुर निजामशाह को अहमदनगर का शासक ...कार कर लिया। महत्त्वपूर्ण है कि **बरार, दौलताबाद** एवं बालाघाट तक का ... तथा **अहमदनगर के दुर्ग** भले ही मुगलों को प्राप्त हो गये हों लेकिन अभी ...हमदनगर का राज्य समाप्त नहीं हुआ था। अहमदनगर राज्य का मुगल साम्राज्य ...विलय **1633** ई. में **शाहजहाँ** द्वारा ही हो पाया। अकबर के दक्षिण अभियान ...फलस्वरुप मुगल सीमा नर्मदा से बढ़कर कृष्णा घाटी के ऊपर भीमा नदी तक ...ुंच गयी थी। उसने नवविजित प्रदेशों को अहमदनगर, बरार एवं खानदेश नामक ...न सूबों में संगठित किया। दानियाल को मालवा एवं गुजरात के साथ दक्कन के ... तीनों सूबों का प्रमुख बनाया गया। अकबर आगरा चला आया और इसी समय **दक्षिण का बादशाह** की उपाधि ली।

> **महत्वपूर्ण तथ्य**
>
> (1) सर्वप्रथम अकबर ने ही **मारवाड़** (जोधपुर) के उत्तराधिकार में हस्तक्षेप किया। उसने चन्द्रसेन को हटाकर रामराव को बैठाया।
>
> (2) अकबर ने ब्राह्मण **परतरायदास** को **विक्रमाजीत** की उपाधि दी। जहाँगीर ने उसे गुजरात का सूबेदार बनाया था।
>
> (3) अकबर ने ब्राह्मण **पुरुषोत्तम** को बख्शी बनाया था।
>
> (4) लेनपूल ने अकबर को **मुगल साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक** माना है।

Scanned with CamScanner

प्रमुख विद्रोह

अकबर के सरदारों में सबसे प्रमुख विद्रोही अब्दुल माली था। वह अकबर के राज्याभिषेक में सम्मिलित नहीं हुआ इसीलिए बैरम खाँ ने अब्दुल माली को लाहौर दुर्ग में कैद कर लिया था।

अब्दुल्ला ऊजबेक–अकबर के काल में पहला विद्रोह **1565** ई. में अब्दुल्ला ऊजबेक ने किया। इस विद्रोह में जौनपुर के सूबेदार **अली कुली खानजमा** एवं अफगान अमीर भी सम्मिलित थे। खानजमा ने बंगाल के सुल्तान सुलेमान कर्रानी से मित्रता कर ली थी जिसने **मनकली** एवं **काला पहाड़** के नेतृत्व में फौज भेजी थीं। इसी समय अकबर ने ओडिशा के शासक से मदद ली थी। ऊजबेकों ने मिर्जा हकीम को अपना बादशाह घोषित कर उसके नाम से सिक्के ढलवाया और खुतबा पढ़वाया था। 1567 ई. में अकबर ने कुछ समय हेतु **जौनपुर** को राजधानी बनाया और गोमती नदी पार कर ऊजबेक विद्रोहियों को परास्त किया। मुनीम खाँ के कहने पर अकबर ने ऊजबेक नेताओं को माफ कर दिया था।

बंगाल एवं बिहार में विद्रोह–1580 ई. में पूर्वी भारत में विद्रोह हुआ जिसका मुख्य कारण जागीरदारों को दाग व्यवस्था का सख्ती से पालन कराना था। इस असंतोष को कुछ काजियों एवं उलेमाओं ने हवा दी जो कि अकबर के उदार विचारों से प्रसन्न नहीं थे। इन्होंने काबुल के सुल्तान मिर्जा हकीम (अकबर का सौतेला भाई था) को अपना बादशाह घोषित कर दिया। 1581 ई. में **जौनपुर** के **काजी मुल्ला यजदी** ने अकबर के खिलाफ फतवा जारी कर दिया। बिहार में विद्रोहियों का नेता मीर मुइजुलमुल्क था। अकबर ने दोनों को मरवा दिया और इस विद्रोह को सफलतापूर्वक दबा दिया। दीवान-ए-अशरफ (अर्थ मंत्री) **शाह मंसूर** को सुल्तान मिर्जा हकीम से राजद्रोहात्मक पत्राचार करने के कारण मृत्युदण्ड दे दिया गया।

आसफ खाँ का विद्रोह–यह ईरानी (ताजिक) था जिसका पूरा नाम अब्दुल मजीद असफ खाँ था। वह गढ़कटंगा (गोण्डवाना) का विजेता था। अबुल फजल ने इसके विषय में कहा है कि "इसने ऐसे कारनामें किये कि उसके सामने तुर्क भी फीके पड़ गये थे।" **अकबर के काल में किसी ईरानी द्वारा किया गया यह एकमात्र विद्रोह था।** विद्रोह को दबा दिया गया।

रोशनाई एवं युसुफजई विद्रोह : पश्चिमोत्तर भारत में– रोशनाई लोग **बायजीद अफगान** ऊर्फ **पीर-ए-रोशन** के अनुयायी थे। अकबर के समय उन्होंने **जलाल** के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया जिसे सफलतापूर्वक दबा दिया गया। जलाल की आर्थिक मदद ट्रांस आक्सियाना का शासक अब्दुल्ला खाँ कर रहा था। युसुफजईयों का नेता **अब्दुल्ला खाँ ऊजबेक** था। **जैना खाँ** एवं **बीरबल** ने इस विद्रोह को दबा दिया। हालांकि इसी विद्रोह का दमन करते समय बीरबल की मृत्यु हो गयी।

सलीम का विद्रोह–अकबर जब दक्षिण के लिए प्रस्थान कर रहा था तब उत्तर-भारत का प्रबन्ध उसने सलीम को सौंपा और उसे मेवाड़ पर आक्रमण करने का आदेश दिया। परन्तु, सलीम 1599 ई. में इलाहाबाद आ गया और **स्वतंत्र शासक** की भाँति दरबार लगाने लगा। उसने अपने नाम का खुतबा पढ़वाया और सिक्का चलवाया। इसी समय सलीम ने गोआ के **पुर्तगालियों** से सैनिक सहायता प्राप्त करने का असफल प्रयत्न किया। परन्तु, **सलीमा बेगम** ने मध्यस्थता कर पिता एवं पुत्र में मेल करा दिया। अकबर ने उच्च कोटि के मनोचिकित्सक राजा सलिवाहन से सलीम का इलाज करवाया। सलीम का विद्रोह अकबर के काल का अन्तिम विद्रोह था।

अकबर की धार्मिक नीति

मध्यकालीन राजाओं में अकबर प्रथम था जिसने धार्मिक सहिष्णुता की नीति को धर्म-निरपेक्षता के शिखर तक ले गया। सूफी विचारधारा वहदत उल वजूद पर आधारित **सुलह-ए-कुल** (सबके साथ मेल मिलाप की नीति) का पाठ उसने अपने गुरु **अब्दुल लतीफ** से सीखा था। अब्दुल लतीफ इतने उदार थे कि उनको फारस में सुन्नी एवं भारत में शिया समझा जाता था। **मुल्ला पीर मुहम्मद** अकबर के अन्य शिक्षक थे। उसको नाजिर उल मुल्क की उपाधि मिली थी। अकबर की धार्मिक नीति मंगोलों की **यासा-ए-चंगेजी** परम्परा से भी प्रभावित थी। यशा का अर्थ है– 'सभी प्रकार के धार्मिक भेद-भावों की अस्वीकृति।' अकबर की धार्मिक नीतियों का विकास विभिन्न चरणों में हुआ। प्रारम्भ में वह **रूढ़ीवादी** फिर **उदारवादी** अन्ततः **सुधारवादी** बन गया।

Scanned with CamScanner

जैसा कि बताया जा चुका है कि प्रारम्भिक चरण में अकबर रूढ़िवादी था और वह **अब्दुल्ला सुल्तानपुरी** एवं सद्र-उस-सुदूर **अब्दुन्नबी** जैसे उलेमाओं के प्रभाव में था। अब्दुन्नवी का अकबर बहुत आदर करता था और एक बार उसके चप्पल भी उठाया। इसने एक बार दरबार में अकबर को केसरिया अंगरखा पहनने के कारण डाँटा था। परन्तु, वह एक भ्रष्ट एवं धर्मान्ध व्यक्ति था जिसकी जेल में जनता ने हत्या कर दी थी। मिर्जा अजीज कोका ने मक्का से पत्र भेजकर अकबर की धार्मिक नीतियों की कटु आलोचना की थी।

1573 ई. में अकबर शेख मुबारक तथा 1574 की शुरुआत में फैजी तथा उसी वर्ष के अंत में अबुल फजल से सर्वप्रथम मिला। इनके संगत के परिणामस्वरूप अकबर के ऊपर तसव्वुफ (सूफीवाद) का प्रभाव बढ़ने लगा। वह धीरे-धीरे संकीर्ण रूढ़िवादी विचारों से हटता गया। 1578 ई. में अकबर को एक आध्यात्मिक अनुभव **झेलम** तट पर स्थित भेड़ा नगर में कमरगाह (शिकार खेलने) के समय हुआ। वह स्थान जहाँ यह घटना हुई **मक्का-ए-खुर्द** (छोटा मक्का) कहलाया।

इबादतखाना (पूजा गृह)

निर्माण वर्ष–जनवरी 1575

स्थिति–फतेहपुर सिकरी में।

धार्मिक चर्चा का दिन–प्रत्येक **वृहस्पतिवार** की रात में

इबादतखाना सर्वधर्म संसद बनी–1578 ई. में। इसी वर्ष अकबर ने इबादतखाना के द्वार सभी धर्मावलम्बियों के लिए खोल दिया। महत्वपूर्ण है कि इन धार्मिक चर्चाओं में किसी **बौद्ध भिक्षु** ने भाग नहीं लिया था।

इबादतखाना बन्द– 1581 में लगभग बंद तथा **1582** ई. में पूर्णतया बन्द हो गया।

इबादतखाना फतेहपुर सिकरी में निर्मित एक **आयताकार** कक्ष था जो कि अब्दुल्ला नियाजी नामक सूफी संत की कोठरी के पास स्थित था। प्रो. राय चौधरी ने इबादतखाना को **सर्व धर्म संसद** कहा।

इबादतखाना में विभिन्न धर्मों का प्रतिनिधित्व–अब्दुल्ला सुल्तानपुरी उर्फ मखदूम-उल-मुल्क तथा अब्दुन्नवी ने कट्टरपंथी मुसलमानों का प्रतिनिधित्व किया। उदार मुसलमानों का प्रतिनिधित्व शेख मुबारक एवं उसके दोनों पुत्रों (फैजी एवं अबुल फजल) ने किया। बदायूनी के अनुसार अकबर ने **शेख चाय लड्ढा** से चिल्ल-ए-माकूस की कला सीखी।

हिन्दू धर्म–का प्रतिनिधित्व **पुरूषोत्तम** एवं **देवी पण्डित** ने किया। अकबर ने इनसे **पुनर्जन्म सिद्धाँत** को ग्रहण किया। यह हिन्दू धर्म का ही प्रभाव था कि अकबर माथे पर तिलक लगाया और 1604 ई. में अपनी माँ मरियम मकानी की मृत्यु के बाद अपना मुण्डन करवाया। वह विश्व की समस्याओं और अध्यात्मवाद को समझने के लिए वृन्दावन में विट्ठलेश्वर जैसे गोसाई संतों के पास जाता था।

पारसी धर्म–का प्रनिधित्वि नवसारी (सूरत) के **दस्तूर मेहरजी राणा** ने किया। अकबर ने सूर्य पूजा एवं अग्नि पूजा के पारसी सिद्धांत को स्वीकार किया। अकबर ने उनको नौसारी में घेलखड़ी जमीन प्रदान की। तानसेन ने इस अवसर पर पारसी **राग सारंग** में गीत लिखे जो दोपहर बाद गाये जाते थे। अकबर पारसियों के पवित्र सुद्रेह या सदरी और कुश्ती धारण कर राजसिंहासन पर बैठने लगा। मेहरजी के प्रभाव के कारण अपने दरबार में अबुल फजल की देख-रेख में 24 घण्टे अग्नि जलाने का आदेश दिया। उसने प्राचीन पारसी पत्रों को भी व्यवहार में लाना शुरू कर दिया।

जैन धर्म– बुद्धिसागर प्रथम जैन गुरु था जो (1568 ई.) अकबर के दरबार में आया लेकिन, इबादतखाना में जैन धर्म का प्रतिनिधित्व सर्वप्रथम **हीरविजय सूरी** ने किया जिनको अकबर ने गुजरात (तप-गच्छ) से बुलवाया था। अकबर ने हीरविजय सूरी को **जगतगुरू** की उपाधि दी थी। जैन धर्म के अन्य विद्वान **जिनचन्द्र सूरी, शान्तिचन्द्र, विजयसेन सूरी, भानुचन्द्र** आदि के संपर्क में अकबर आया था। अकबर ने भानुचन्द्र को **उपाध्याय**, विजयसेन सूरी को **काली सरस्वती** तथा नंदीविजय

को **खुशफहम** (तीव्र बुद्धि) की उपाधि दी थी। जिनचन्द्र सूरी पैदल ही कैम्बे से लाहौर तक की यात्रा कर अकबर से लाहौर
में मिले थे। अकबर ने उनको **युग प्रधान** की उपाधि दी थी। यही जैनी 1592 में अकबर की कश्मीर यात्रा में उसके साथ थे।
भानुचन्द्र ने सूर्य के एक हजार नामों पर संस्कृत में **सूर्यसहस्त्रनाम** टीका लिखी और अकबर को उन नामों का महत्व समझाया।
1568 ई. में अकबर ने अपने दरबार में श्वेतांबर एवं दिगम्बर जैनियों का शास्त्रार्थ करवाया था। जैनियों के अहिंसा सिद्धान्त से
प्रभावित होकर अकबर ने 6 माह के पशुओं, भेड़ो, घोड़ों का वध निषेध किया। अकबर ने मुगल साम्राज्य के छह सूबों में जहाँ
जैन अधिक संख्या में थे, 'पर्यूषण पर्व' में पशु-वध निषिद्ध कर दिया। अकबर ने सिन्धु नदी में चार माह हेतु मछलियों का शिकार
निषिद्ध कर दिया था। एकबार रोगमुक्त होने पर अकबर ने 500 गायें जैन मुनियों को दिया था। सिद्धिचन्द्र एवं भानुचन्द्र असीरगढ़
विजय में अकबर के साथ थे। 1605 में अकबर की मृत्यु के समय भी वे उपस्थित थे। सिद्धिचन्द्र जहाँगीर के दरबार में भी
रहे। अकबर ने सौराष्ट्र में शत्रुंजय पहाड़ी पर स्थित आदिश्वर (जैन) मन्दिर हरिविजय को समर्पित कर दिया जिसकी पुष्टि यहाँ
उसके द्वारा स्थापित शिलालेख से होती है।

ईसाई–इनका प्रतिनिधित्व गोवा के **पुर्तगालियों** ने किया।[1] **रुडोल्फ एक्वाविवा, एन्टोनी मौनसरेट** तथा **फ्रांसिस**
एनरिक्वेज के साथ पहली बार ईसाई मिशन इबादतखाना में आया था। यह प्रतिनिधिमण्डल रुडोल्फ एक्वाविवा के नेतृत्व में
गोवा के सेन्ट जेवियर चर्च से आया था। एनरिक्वेज पहले फास का मुसलमान था जिसने धर्म परिवर्तन कर ईसाई बन गया था।
उसे फ़ारसी भाषा का अच्छा ज्ञान था। वह शिष्टमण्डल के साथ दुभाषिये के रूप में भेजा गया था। मौंसरेट बीमार हो जाने के
कारण मार्ग में ही रुक गया। अतः केवल दो सदस्य ही सीकरी पहुँचे। कुछ समय बाद ही मौंसरेट दरबार में आया। पुर्तगालियों
की मदद से अकबर स्पेन के राजा फिलिप द्वितीय एवं पोप को दूतमण्डल भेजना चाहता था। इस हेतु अकबर ने सैयद मुजफ्फर
के नेतृत्व में दूतमण्डल का गठन किया मांसरेट उसका सहायक नियुक्त हुआ। परन्तु, किसी कारणवश यह दूतमण्डल गोवा से
आगे न बढ़ पाया।

प्रतिनिधिमंडल ने मुगल दरबार में 3 वर्ष व्यतीत किया। अकबर ने **वैनेडिक्ट-डि-गोएज (बेनारिक्ट)** को दार-
ए-गूंज की उपाधि दिया। **वैनेडिक्ट** भारत में एक पुर्तगाली सैनिक के रूप में आया था परन्तु बाद में वह पादरी बन गया। ईसाइयों
से अकबर ने नैतिकता, दया एवं प्रेम का भाव सीखा। उसने **काम्बे, लाहौर, आगरा** एवं **हुगली** में गिरजाघर बनवाने की अनुमति
दी। आगरा में गिरजाघर के निर्माण में राजकुमार सलीम ने उदारता से सहयोग दिया था और वह **अकबर बादशाह का गिरजा**
के नाम से प्रसिद्ध हो गया। अकबर ने सलीम को भी सलाह दी कि वह ईसाई पादरियों के प्रवचनों को सुने।

आर. पी. त्रिपाठी का मत है कि "इबादतखाना ने अकबर को यश के बदले अपयश ही दिया" जो कि सत्य नहीं। भले
ही अकबर ने **1582** ई. में इबादतखाना बन्द करा दिया। परन्तु, इसी के माध्यम से वह यह जान पाया कि **सभी धर्मों में सत्य**
के कुछ अंश विद्यमान हैं। इबादतखाना बन्द हो जाने के बाद अकबर ने अपने शयन कक्ष में विद्वानों से चर्चा करने लगा। उसने
पुरुषोत्तम एवं देवी के साथ समागम किया। शेख ताजुद्दीन एवं यज्द के विद्वान मुल्ला अहमद से अपने शयन कक्ष के बाहर चर्चा
की थी। अकबर के अनुसार, "ईश्वर निराकार (बे-सूरत) है और उसे मस्तिष्क के महानतम प्रयास (चिरा-दस्तिए-ख्याल) से ही
जाना जा सकता है।" इसी का प्रभाव है कि वह ईद के साथ गैर-इस्लामिक त्योहारों जैसे-दशहरा, जन्माष्टमी एवं नौरोज भी
मनाने लगा। बदांयूनी के अनुसार, "अकबर संस्कृत में सूर्य के एक हजार नामों का जाप करना; माथे पर टीका लगाना; राखी
बनवाना और अपने जीवन में दो बार (जीजी अनगा एवं हमीदाबानों की मृत्यु पर) हिन्दुओं की तरह सर भी मुंडवाया।" उसने
गैर-इस्लामिक लोगों की धार्मिक अपंगता को दूर किया जो कि एक राष्ट्रीय शासक की पहचान थी।

खुतबा पढ़ना–अकबर ने फतेहपुर सिकरी के जामा मस्जिद के **मुख्य** पुरोहित 'बैज' को हटकार **स्वयं 22 जून, 1579**
को खुतबा पढ़ा। इस खुतबे की रचना **फैजी** द्वारा कविता के रूप में की गयी थी।

1. 1577 ई. में पुर्तगाली सेनानायक **पीद्रो तवारेज** अपनी पत्नी सहित फतेहपुर सीकरी आया और अकबर से भेंट की थी।

महजर (ऐलान या अर्जी)

घोषणा–सितम्बर 1579 ई.

प्रारूप–शेख मुबारक ने महजर को तैयार किया था।

स्रोत– अबुल फजल ने अकबरनामा में महजर दस्तावेज के मूल पाठ को शामिल नहीं किया है जबकि बदायूंनी एवं निजामुद्दीन अहमद ने किया है।

विशेष–इसमें अकबर को **अमीर-उल-मोमीन** (ईमानदारों का नेता) एवं **इमाम-ए-आदिल** (न्यायप्रिय शासक) कहा गया था।

महजर क्या नहीं था–इतिहासकार **स्मिथ** ने इसे अनुल्लंघनीयता की राजाज्ञा या समरथ को अमोघत्व (doctrine of Infallibility) कहा है। कहते हैं कि इससे अकबर ने अपने सिर पर भ्रमातीतता का सेहरा बांध लिया था। वहीं **बदायूंनी** का कथन है, "अकबर स्वयं को **इंसान-ए-कामिल** (पूर्ण मानव) मानने लगा, केवल शेख मुबारक ने इस पर स्वेच्छा से हस्ताक्षर किया अन्यथा उसने उलेमाओं से बलपूर्वक हस्ताक्षर करवाया।'' हालांकि स्मिथ एवं बदांयूनी दोनों के कथन पूर्वाग्रह से युक्त एवं असत्य हैं। सर्वप्रथम शेख मुबारक तत्पश्चात् अबुल फजल ने अकबर को **मुजतहिद** कहा है।

महजर क्या था–7 प्रमुख उलेमाओं के हस्ताक्षर से युक्त एक घोषणापत्र था। अब्दुन्नबी, अब्दुल्ला सुल्तानपुरी, शेख मुबारक, जलाउद्दीन मुल्तानी, गाजी खाँ बदख्शी आदि के इस पर हस्ताक्षर थे। फैजी एवं अबुल फजल का इस पर हस्ताक्षर नहीं था। इसमें कहा गया था कि उलेमाओं में किसी बात पर मतभेद होने पर अकबर किसी एक विचार को स्वीकारने में स्वतंत्र होगा। दूसरे इसमें यह भी वर्णित था कि कुरान से सुसंगत एवं देशहित में यदि अकबर कोई नया आदेश पारित करे तो उसका पालन सभी को अनिवार्य होगा। ध्यातव्य है कि महजर का उद्देश्य आलिमों (मुसलमान विद्वान) एवं उलेमाओं के बीच फूट डालना नहीं था। **एस.एम.जफर** ने महजर का अर्थ 'सर्वोच्चता का निर्णय' बताया। वह इसे इंग्लैण्ड के सम्राट जॉन के मैगनाकार्ट के समतुल्य मानते हैं। वहीं **सैयद रिजवी** महोदय महजर को सुलह कुल की प्रथम प्रभावकारी घोषणा मानते हैं।

तौहीद-इलाही (1582) या दैवीय एकेश्वरवाद

1582 ई. में काबुल अभियान से लौटने के पश्चात् अकबर ने दीनेइलाही का स्वरूप प्रस्तुत किया। शाहजहाँ के शासन काल में **मोहसिन फानी** ने अपनी कृति **दबिस्तान-ए-मजाहिब** में इसे दीन-ए-इलाही कहा और सर्वप्रथम इसकी दस विशेषताओं का उल्लेख किया है। बदांयूनी ने इसे दीने-इलाही एवं तौहीद-ए-इलाही दोनों कहा है। अबुल फजल ने तौहीद-ए-इलाही का उल्लेख आइन-ए-अकबरी के 'आइन-ए-रहनुमाई' (आईन-77) में किया है। इब्न-ए-अरबी द्वारा प्रतिपादित वहदत-उल-वजूद की अवधारणा ही दीनेइलाही का मुख्य रुप से आधार था।

दीन-ए-इलाही का सदस्य **इलाही** कहलाता था। **रविवार** को दीक्षा दी जाती थी और मुरीद (शिष्य) बनाया जाता था। जो व्यक्ति सदस्य बनना चाहता था वह सर्वप्रथम अबुल फजल के पास जाता था। वही अभ्यर्थी को बारह-बारह के समूहों में अकबर के सम्मुख प्रस्तुत करवाता था। अतः एक बार में 12 को मुरीद बनाया जाता था। अकबर शिष्यों को अपना शिस्त (चित्र) एवं पगड़ी (कुला) प्रदान करता था। बदांयूनी के अनुसार, "प्रत्येक सदस्य को **चहारगाना-ए-इखलास** (भक्ति के चार चरण) अर्थात सम्पति, जीवन, सम्मान एवं धर्म का अर्पण बादशाह को करना होता था।"

चूंकि दीन-ए-इलाही के **12 प्रमुख सिद्धाँतों** की व्याख्या अबुल फजल ने किया है। इसी कारण वे दीन-ए-इलाही के **मुख्य पुरोहित** कहलाये। मोहसिन फानी ने इसके **10 गुणों** का उल्लेख किया है। इसमें कुल **18** या **19** प्रतिष्ठित सदस्य थे।[1] **बीरबल** (महेशदास) इसके एकमात्र हिन्दू सदस्य थे। **राजा भगवानदास** एवं **मानसिंह** ने इसका सदस्य बनने से इन्कार कर दिया था।

1. इसके **प्रतिष्ठित सदस्य थे– शेख मुबारक, फैजी, अबुल फजल, अब्दुस्समद, मिर्जा जानीवेग थट्टा** (सिन्ध का भूतपूर्व शासक), **बीरबल, सलीम, सुल्तान ख्वाजा** आदि।

Scanned with CamScanner

जीवित अवस्था में ही मृत्यु भोज देना होता था।

प्रमुख सिद्धान्त : (i) सदस्यों को जन्मदिन एवं जीवित अवस्था में ही मृत्यु भोज देना होता था।

(ii) कम उम्र की लड़कियों एवं अधिक उम्र की महिलाओं से विवाह न करना। एक पत्नी व्रत का पालन करना। इसमें पहली पत्नी की मृत्यु या बंध्या होने पर ही दूसरी शादी का प्रावधान था।

(iii) विधवा विवाह को प्रोत्साहन दें। हज यात्रा न करें क्योंकि इससे राज्य को हानि होती है। लेकिन, अकबर ने हज यात्रा पर रोक नहीं लगायी थी।

(iv) बादशाह के सम्मुख **1577-78 ई.** से प्रारम्भ **सिजदा एवं जमीनबोस** करें।

(v) शाकाहारी बनें और माँस के सेवन से बचें।

अन्य प्रावधानों में बहेलियों, मछुओं, कसाइयों और निम्न कोटि की जातियों के साथ भोजन की मनाही, दाढ़ी-मूंछ साफ रखना आदि थे।

दीन-ए-इलाही पर इतिहासकारों का मत

समकालीन बदांयूनी, मांनसराट एवं पादरी बारटोली (यह कभी भारत नहीं आया था) ने इसे **धर्म** बताया। बारटोली के अनुसार, "1582 में अकबर ने एक नये धर्म की घोषणा हेतु एक सभा बुलायी।" बारटोली ने इसे अकबर की दूरदर्शितापूर्ण धूर्तता बताया।

स्मिथ, ब्लाकमैन एवं बुल्जले हेग जैसे आधुनिक इतिहासकारों ने भी इसे धर्म माना है। उनके अनुसार यह "अकबर की मूर्खता का सबसे बड़ा प्रमाण है। वह सीजर एवं पोप दोनों एक साथ बनना चाहता था।" ब्लाकमैन ने इसे 'दिव्य धर्म का आदेश' बताया।

लेकिन, इन इतिहासकारों की अवधारणों का सूक्ष्मतम विश्लेषण करें तो यह खण्डित हो जाती है। क्योंकि, विश्व के किसी भी धर्म हेतु तीन चीजें– धर्मग्रन्थ, धर्मालाय एवं पुरोहित वर्ग का होना अनिवार्य होता है जिसका कि तौहीद-ए-इलाही में अभाव था। वास्तव में इसके माध्यम से अकबर एक ऐसी **आचार संहिता** लागू करना चाहता था जो कि सभी धर्मों को स्वीकार हो। **वस्तुतः दीन-ए-इलाही समस्त धर्मों की अच्छी बातों का समुच्चय था जैसा कि हमारा भारतीय संविधान है।**

रेलीजस पालिसी आफ दी मुगल एंपयरर्स के लेखक **श्रीराम शर्मा** ने ही अन्तिम रूप से इस मत का खण्डन किया कि अकबर दीन-ए-इलाही नाम के नये मजहब की स्थापना करना चाहता था। अकबर की मृत्यु के पश्चात् दीन-ए-इलाही लगभग समाप्त हो गया। हालांकि जहाँगीर ने मुरीद बनाने एवं शस्त (मंत्र) देना जारी रखा परन्तु कुछ समय के बाद उसने छोड़ दिया।

दीन-ए-इलाहीः अकबर की दूरदर्शिता या मूर्खता

विद्वान इतिहासकार **स्मिथ** ने **दीन-ए-इलाही को अकबर की मूर्खता का स्मारक बताया, बुद्धिमत्ता का नहीं।** वास्तव में यह दूरदर्शिता थी या बुद्धिमत्ता इसकी वास्तविक पहचान अकबर के उद्देश्यों से ही हो पायेगी कि आखिर वह इसके माध्यम से क्या प्राप्त करना चाहता था?

(1) इसका उद्देश्य था लोगों के मस्तिष्क पर धार्मिक कट्टरता के प्रभाव को कम करना तथा कुछ सामान्य कार्यक्रमों के आधार पर एक वृहद नागरिकता का निर्माण करना।

(2) इसके माध्यम से अकबर साम्प्रदायिक, नस्लवादी तथा क्षेत्रीय विभाजन के मुद्दों को समाप्त करना चाहता था।

(3) इसके माध्यम से वह अभिजात्य प्रशासक वर्ग जिसका गठन विभिन्न जातियों, वर्गों तथा धर्मों द्वारा हुआ था के बीच संतुलन स्थापित करना चाहता था। इसके माध्यम से एक ऐसे अमीर वर्ग का गठन करना भी था जिसे प्रत्यक्ष रूप से साम्राज्यवादी उद्देश्यों से जोड़ा जा सके। उसने इसके द्वारा अमीर वर्ग को बादशाह एवं बादशाहत से जोड़ना चाहा।

Scanned with CamScanner

(4) इसके माध्यम से अकबर यह भी साबित करना चाहता था कि **धर्म एक व्यक्तिगत आस्था की विषयवस्तु** है। अतः इसके प्रचार के लिए **दबाव या जोर जबरदस्ती अनुचित** है। दीन-ए-इलाही के प्रचार के लिए अकबर ने **सम्राट अशोक** की तरह न ही सरकारी मशीनरी को लगा दिया और ना ही उसकी तरह ऐसा दावा किया कि "**600 योजन** का क्षेत्र धम्म के माध्यम से जीत लिया हूँ।" ना ही उसने प्रचार कार्यक्रम में **फिरोज तुगलक** जैसा लालच दिया जैसा कि **अफीफ** बताता है, "हिन्दू दूर-दूर से आते हैं और इस्लाम स्वीकार करते बदले में धन-दौलत एवं पद फिरोज से प्राप्त करते थे।" और ना ही कभी अकबर ने दीन-ए-इलाही या मौत में से एक के चयन का प्रावधान रखा जैसा कि **औरंगजेब** के समय दिखता है। जब उसने गुरु तेगबहादुर एवं संभाजी के सामने इस्लाम या मौत में से एक का विकल्प रखा था। यह अकबर की 'धार्मिक सहनशीलता' का ही प्रतिफल था कि जहाँगीर को अपनी आत्मकथा में कहना पड़ा कि, "**अकबर के राज्य में सुन्नी एवं शिया एक ही मस्जिद में आपस में मिलते थे। सभी अपनी-अपनी उपासना पद्धति के अनुसार पूजा करते थे।**"

(5) अन्त में अगर हम युगबोध देंखे तो इस समय पश्चिम एशिया, मध्य एशिया यहाँ तक कि दुनियाँ को सभ्य बनाने की जिम्मेदारी उठाने वाले यूरोप में भी धर्म के नाम पर 'खूनी धर्मयुद्ध' प्रारम्भ हो चुका था जिसकी आँच दक्षिण-भारत की कुछ स्वतंत्र राज्यों में पहुँच भी गयी थी। जहाँ सिया, सुन्नी, महदी आदि का भेद प्रखर होता जा रहा था। ऐसे में दीन-ए-इलाही दूरदर्शिता पूर्ण नीति नहीं थी तो क्या थी? इस तथ्य को स्मिथ महोदय नहीं समझ सकें। महत्वपूर्ण है कि उसकी सुलहकुल की नीति सिर्फ भारत पर ही लागू नहीं होती थी अपितु उसका स्वरुप सार्वभौमिक था। खुद अकबर ने अपने समकालीन शासक अब्बास अव्वल को पत्र भेजकर उससे धार्मिक जुल्मों को त्यागकर सुलहकुल अपनाने की सिफारिस की थी। इसी आधार पर अकबर ने अब्दुल्ला उजबेक के समानधर्मी होने के कारण उसके फारस के शियाओ का कंधार विजित करने के प्रस्ताव को भी अस्वीकार कर दिया था। अकबर ने अब्दुल्ला उजबेक को कहलवा भेजा कि भले ही सफावी शिया हैं परन्तु वे सैयद अर्थात् पैगम्बर के वंशज हैं। उसने अब्दुल्ला को स्पष्ट शब्दों में मना कर दिया कि कानून एवं धर्म को किसी राज्य पर आक्रमण करने के लिए पर्याप्त कारण नहीं बनाया जा सकता है।

यूरोपियों से सम्बन्ध

थामस स्टीविन्स—मुगल काल में भारत आने वाला यह पहला अंग्रेज (1579) था। वह 40 वर्ष तक गोवा में ही रहा। संभवतः भारत में इतने दीर्घकाल तक रहने वाला वह पहला अंग्रेज था।

राल्फ फिच—यह 1588-91 ई. के बीच भारत में रहा। अकबर के काल में आगरा एवं फतेहपुर सीकरी पहुँचने वाला पहला अंग्रेज व्यापारी **राल्फ फिच** था। अतः उत्तर भारत का प्रथम अंग्रेज यात्री वही था। उसे **पायनियर** (श्रीगणेश करने वाला) कहा गया है। वह महारानी एलिजावेथ का एक पत्र जो अकबर को सम्बोधित था लेकर आया। **न्यूबैरी** के नेतृत्व में फिच **जेम्स स्टोरी** (चित्रकार) एवं **विलियम लीड्स** (रत्न विशेषज्ञ) **टाइगर** नामक जहाज से भारत आये थे। लीड्स ने अकबर के अधीन रत्न विशेषज्ञ के रूप में नौकरी प्राप्त कर ली। इन यूरोपीय यात्रियों का गुजरात में पुर्तगालियों द्वारा अपहरण हो गया था। गोवा में पादरी थामस स्टीविन्स द्वारा जमानत देने पर और उसके सद्प्रयत्नों से इन बन्दियों को पुर्तगालियों ने मुक्त कर दिया। राल्फ फिच पहला अंग्रेज यात्री है जिसने भारत के लोगों के विषय में लिखा। उसके अनुसार, "**फतेहपुर, आगरा से बड़ा था तथा आगरा एवं फतेहपुर लण्डन से भी बड़े हैं।**"

जान मिल्डेनहाल (1599-1606)—अकबर की समकालीन इंगलैण्ड की शासिका **एलिजाबेथ** थी। उसी के काल में 1600 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना हुई थी। जान मिल्डेनहाल 1599-1606 के बीच दो बार अकबर के दरबार में आया। प्रथम बार वह 'हेक्टर' नामक जहाज से आया था। वह रानी एलिजाबेथ का दूत नहीं था लेकिन उसने आपको सदैव उसके दूत के रूप में ही प्रदर्शित किया। उसकी मृत्यु अजमेर में हुई लेकिन उसे दफन आगरा में किया गया। भारत आकर उसने एक स्कूल के अध्यापक से फारसी का अध्ययन किया था। उसने गुजरात से व्यापार करने हेतु फरमान प्राप्त करने का प्रयास किया।

Scanned with CamScanner

मोंसराट—यह पुर्तगाली पादरी फादर एक्वाविवा के साथ 1578 ई. में अकबर के दरबार में आया था। **काबुल अभियान** में वह अकबर के साथ था। अतः उसने पादशाह के सैनिक लश्कर का आंखों-देखा बड़ा मनोहारी वर्णन किया है। अकबर ने मोंसराट को **मुराद** का शिक्षक नियुक्त किया था। इसी ने मुगल शहजादे एवं शहजादियों की शिक्षा व्यवस्था का उल्लेख किया है। मोंसराट **बालनायी सम्प्रदाय** का उल्लेख करता है। उसके अनुसार, ''अकबर यहाँ खुले बाल एवं नंगे पाव आता था।'' मोंसराट के अनुसार, ''अकबर की प्रबल इच्छा थी कि उसे ईश्वर (पैगम्बर) माना जाय क्योंकि वह चमत्कार कर सकता है और रोगियों को रोग मुक्त।'' उसने अकबर के दरबार की कार्यवाही का रिकार्ड रखने की प्रथा, सती प्रथा, मांडू के रथसप्तमी उत्सव, नर की होली एवं मुहर्रम का वर्णन किया है। वह लाहौर शहर का अत्यन्त सजीव वर्णन करता है। मोंसराट के अनुसार, ''लाहौर शहर में इतने लोग रहते थे कि इधर से उधर निकलते वक्त उनके कंधे एक दूसरे से रगड़ खाते थे।'' उसका कथन है, ''सम्पत्ति के बेधड़क उपयोग से अभिजातों को रोकने के लिए राजा उन्हें दरबार में बुलाता था, उनको निरंकुश आदेश देता था जैसे कि वे उसके दास हों।'' मोंसराट अकबर के शासन काल में निर्मित बहुत से पुलों का वर्णन करता है।

गोल्डी—यह यात्री अकबर के काल में आया था।

ईसाई मिशनरी—अकबर के दरबार में ईसाई मिशन कुल **3** बार आया था। प्रथम प्रतिनिधिमण्डल 1580 ई. में फतेहपुर सीकरी पहुँचा जिसके सदस्य एक्वाविवा, मान्सराट एवं एनरिक्वेज थे। 1591 ई. में दूसरा मिशन लाहौर में आया जिसके सदस्य **एडवर्ड लैटोन** एवं **क्रिस्टोफर डी वागा** थे। उन्होंने लाहौर में एक पाठशाला भी स्थापित की थी। तीसरा मिशन 1595 ई. को लाहौर में अकबर से मिला जिसके सदस्य **जैरोम जैवियर, इमेन्युअल, पिनहैरो** एवं **वैनेडिक्ट-डि गोएज** थे।

लोक कल्याणकारी कार्य

(1) बदांयूनी के अनुसार अकबर ने **फतेहपुर सीकरी** में हिन्दुओं के लिए **धर्मपुरा**, मुसलमानों एवं जोगी लोगों हेतु क्रमशः **खैरपुरा** एवं **जोगीपुरा** जैसे भोजनालय केन्द्रों का निर्माण किया। अकबर ने **भिक्षावृत्ति** खत्म करने का भी उपाय किया था।

(2) अकबर ने विवाह की उम्र लड़का **16 वर्ष** एवं लड़कियों की **14 वर्ष** निर्धारित की थी। अबुल फजल के अनुसार अकबर मध्यकालीन भारत का पहला शासक था जिसने विवाह की उम्र निर्धारित किया था। बाल विवाह रोकने हेतु **तुरबेग** नामक अधिकारियों की नियुक्ति की थी। विवाहों के पंजीकरण के लिए कार्यालय खोला गया।

(4) **सती प्रथा** एवं **शिशु हत्या** पर रोक लगाया। 1587 ई. में **विधवा पुर्नविवाह** को कानूनी बनाया। अकबर ने मारवाड़ के मोटा राजा (उदयसिंह) की बेटी को सती होने से बचाने हेतु खुद मारवाड़ पहुँच कर उसे रोका था। **बहुपत्नी** विवाह की प्रथा को अस्वीकृत करते हुए कहा कि ''यह पुरुषों के स्वास्थ्य का विनाश करता है और उसके घर को दुःखों से भरता है। रिश्ते के भाई-बहनों, नजदीकी रिश्तेदारों तथा बड़ी औरतें एवं नौजवानों के बीच विवाह को अस्वीकृत करते हुए कहा यह सभी प्रकार की शालीनता के विरुद्ध है।'' उसने विवाहों के लिए माता-पिता की स्वीकारोक्ति के साथ दूल्हा और दुल्हन की आपसी सहमति आवश्यक बना दिया। अन्तर्जातीय विवाहों को मान्यता दी तथा राजपूतों में प्रचलित कन्या वध पर रोक लगा दिया। अकबर ने **आदेश दिया कि हरम में निवास करने वाली बेगमों की नामों का उल्लेख सार्वजनिक रूप से न किया जाय।** अपितु उनके जन्मस्थान, देश या शहर पर आधारित किसी विशेषण के आधार पर उनका नामकरण हो।

12 वर्ष की आयु से पहले **खतना** (सुन्नत) करने को रोका। अकबर ने यह भी निर्दिष्ट कर दिया की शव को किस दिशा में लिटाया जाय। बदांयूनी बताता है कि अकबर ने फतेहपुर सीकरी नगर के बाहर वैश्याओं के रहने हेतु **शैतानपुरी** बसाया था। अकबर ने नगरों में मदिरा का विक्रय तथा वैश्याओं का निवास निषिद्ध घोषित कर दिया था। उसने नियम भी बना दिया था कि इच्छुक व्यक्ति सरकारी अनुमति से वेश्याओं को अपनी जीवनसंगिनी बना सकते थे। 1597 में उसने कश्मीर में 5 अन्यायपूर्ण प्रथाओं का उन्मूलन किया था। अकबर ने रविवार के दिन **पशु-बध** पर रोक लगा दिया था।

(5) अकबर ने टोडरमल से कहा था, ''**ईश्वर पूजा कमजोरों की देखभाल करने से श्रेष्ठ नहीं।**'' उसका मत था कि ''**अहमदी कैश (मुहम्मदी सिद्धांत) से उत्तराधिकार में पुत्री को लघुत्तर हिस्सा मिलता है, यद्यपि यह बेहतर होगा कि कमजोर को बड़ा हिस्सा मिले।**'' अकबर ने बेटी के लिए सम्पत्ति में बराबर हिस्से की बात की।

Scanned with CamScanner

(6) **शैक्षणिक सुधार**—राष्ट्रीय भावनाओं को ध्यान में रखकर अकबर ने शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में विस्तार किया। अपने पुत्रों को **हिन्दी** की शिक्षा देने की व्यवस्था की। उसने मदरसों में हिन्दू अध्यापकों की नियुक्ति की।

अकबर से संबंधित महत्त्वपूर्ण तिथिवार परीक्षोपयोगी जानकारी

1562– में दास प्रथा एवं जबरन इस्लाम स्वीकार करना निषिद्ध किया। 1582 ई. में अकबर ने अपने गुलामों को आजाद कर दिया। 1594 में गुलामों के व्यापार पर नये सिरे से पाबन्दी लगा दिया।

1563–में अकबर **मथुरा** गया जहाँ उसे **तीर्थयात्रा कर** की जानकारी हुई। अतः इसी वर्ष तीर्थयात्रा कर हटा दिया।

1564–में नरहरि के कहने पर जजिया हटाया। अब्दुन्नबी के कहने पर 1575 में जजिया फिर लगा दिया, जिसे अन्तिम रूप से **1579** ई. में हटाया। इसीलिए बदांयूनी जजिया हटाने की तिथि 1579 देता है।

1573-74 (शासन के 18वें वर्ष) **–**घोड़ों को दागने की व्यवस्था शुरू किया।

1574-75–सार्वजनिक रिकार्ड कार्यालय या शाहीलेखागार (इतिहास लेखन विभाग) का फतेहपुर सीकरी में गठन।

1575–मध्य एशिया से प्रभावित **मनसबदारी व्यवस्था** की शुरूआत।

सुधार समिति – अकबर ने 1575 में एक चार सदस्यीय सुधार समिति का गठन किया। शाहबाज खाँ, आसफ खाँ द्वितीय, राय पुरुषोत्तम दास तथा राय रामदास इस समिति के सदस्य थे।

1577-78–सिजदा एवं पैबोस (जमींबोस) की शुरूआत की।

1580 (शासन के 24वें वर्ष)– (i) साम्राज्य का **12** प्रान्तों में विभाजन। (ii) टोडरमल की **आइन-ए-दहसाला** की शुरूवात।

1583-84–इलाही या **फसली संवत** की शुरूवात। यह संवत सौर दिवस पर आधारित था। इलाही संवत का प्रारंभिक विचार अबुल फजल ने दिया था लेकिन इसे प्रामाणिक एवं वैज्ञानिक तरीके से प्रस्तुत करने का श्रेय फतुल्लाह शिराजी को जाता है।

1588 – **गज-ए-इलाही** या बीघा-ए-इलाही की शुरुआत

1589 – अकबर ने कश्मीर की पहली यात्रा की।

1591 – में सती प्रथा निषेध किया।

अकबर के ...

महत्वपूर्ण तथ्य

(1) **झरोखा दर्शन, सिजदा** एवं **जमींबोस** की शुरूआत करने वाला अकबर पहला मुगल शासक था।

(2) अकबर **मुनिम खाँ** को बैरम खाँ की तरह **खानबाबा** या **बाबा अम** (मेरे पिता) कहता था।

(3) **देवी, शेख ताजुद्दीन** एवं यज्द का **मुल्ला मुहम्मद** अकबर के शयन कक्ष के बाहर धार्मिक चर्चा करने वाले विद्वान थे।

(4) अकबर ने तैमूरी शासक **मिर्जा सुलेमान** को अपने दरबार में संरक्षण दिया था।

(5) **अकबर ही वह मुगल बादशाह था जिसने मक्का एवं मदीना को विजित करने हेतु उजबेकिस्तान के शासक अब्दुल्ला खान उजबेक से समझौता किया था।**

(6) **अकबर ने बेगमों के नामों को सार्वजनिक करने की प्रथा को समाप्त कर दिया था।**

(7) अकबर एवं औरंगजेब ही वह दो मुगल बादशाह थे जिनके खिलाफ फतवा जारी हुआ था।

Scanned with CamScanner

जहाँगीर (1605-1627)

मूल नाम–सलीम। अकबर प्यार से इसे **शेखुबाबा** बुलाता था।

जन्म–हरखाबाई से उत्पन्न सलीम का जन्म शेख सलीम चिश्ती की कुटिया में 30 अगस्त 1569 ई. को हुआ था।

राज्याभिषेक–अकबर की मृत्यु के आँठवें दिन **मुहम्मद जहाँगीर बादशाह गाजी** नाम से अपना राज्याभिषेक 3 नवम्बर, 1605 (**वृहस्पतिवार**) को आगरा किले में करवाया। लेकिन, वाकियाते जहाँगीरी के अनुसार वह 12 अक्टूबर 1605 को ही गद्दी पर बैठ गया था।

विशेष–(1) जहाँगीर के सिंहसनारोहण में **कोई अभिषेक नहीं, कोई शपथ नहीं तथा कोई धर्मोपदेश नहीं** को सम्मिलित किया गया था। **उसने स्वयं के हाथों से मुकुट अपने सिर पर रखा था।**

(2) जहाँगीर ने कुछ समय बाद अपने नाम से मुहम्मद शब्द हटाकर **नूरूद्दीन (प्रकाश)** जोड़ा। इस बदलाव का श्रेय वह भारतीय ऋषियों को देता है।

सलीम अकबर की ज्येष्ठ जीवित सन्तान था। उसका लालन-पालन एवं अध्ययन फतेहपुर सीकरी में हुआ। शिक्षा हेतु उसे सर्वप्रथम **अब्दुर्ररहीम खानखाना** के संरक्षण (अतालिक) में रखा गया जिनसे सलीम ने **तुर्की** भाषा सीखा। उसने प्रमुख धर्मशास्त्री शेख अब्दुल नबी से भी शिक्षा प्राप्त की थी। सलीम को फारसी का भी अध्ययन कराया गया। महत्त्वपूर्ण है कि अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-जहाँगीरी उसने **फारसी** में ही लिखी थी। जहाँगीर एक लक्ष्यबेधी एवं शक्तिशाली आखेटक था। 1581 ई. में काबुल आक्रमण उसका प्रथम सैनिक अभियान था। सलीम अकबर की मृत्यु के समय उसकी एकमात्र जीवित सन्तान था।

जहाँगीर की पत्नियाँ एवं पुत्र :

मानबाई– आमेर के कछवाहा राजपूत भगवानदास की पुत्री एवं मानसिंह की बहन थी। सलीम का पहला विवाह 1585 ई. में इसी से हुआ। इस विवाह में अकबर सम्मिलित नहीं हो पाया क्योंकि वह उस समय लाहौर में था। पुत्र **खुसरो** के जन्म के पश्चात् मानबाई को **शाहबेगम** कहा जाने लगा। 1604 ई. में इसने अफीम खाकर आगरा के किले से कूद कर **आत्महत्या** कर लिया। उसे **खुल्दाबाद** में दफनाया गया।

जगत गोसाई या **जोधाबाई** या **भानमती**–यह मारवाड़ के मोटा राजा उदयसिंह की पुत्री थी जिसकी उपाधि **मलिका-ए-जहाँ** थी। **खुर्रम** (शाहजहाँ) इसका पुत्र था।

साहिबे-जमाल– जहाँगीर के तीसरे पुत्र **परवेज** की माँ थी। एक बार परवेज ने रोगी जहाँगीर के स्वास्थ्य सुधार हेतु उसकी शय्या की तीन बार परिक्रमा की थी ठीक वैसे ही जैसे बाबर ने हुमायूं के लिए किया था।

जहाँगीर का चौथा पुत्र **शहरयार** एक रखैल की सन्तान था। शहरयार का उपनाम **नैशुदनी** (निखट्टू) था। जहाँगीर का सबसे छोटा पुत्र **जहाँदार** बचपन में ही मर गया था। जहाँगीर के अनुसार वह एक धार्मिक व्यक्ति एवं जन्मजात मूर्ख था।

इतिहासकारों का मत है कि अकबर अपने अन्तिम समय में सलीम के पुत्र खुसरो को बादशाह बनाने के विषय में सोचने लगा जिसका समर्थन **मानसिंह** एवं **अजीजकोका** ने किया था। परन्तु, **सैय्यद खाँ चगताई** एवं **शेख फरीद बुखारी** ने विरोध कर इसे चगताई परम्परा के विरूद्ध बताया। उनका मत था कि पिता की जीवित अवस्था में ही पुत्र को बादशाह नहीं बनाया जा सकता। हालांकि इस समय तो नहीं लेकिन औरंगजेब के बादशाह बनते ही यह चगताई परम्परा टूट गयी। क्योंकि, वह शाहजहाँ के जीवित रहते ही बादशाह बन गया था। शासक बनने के पश्चात् जहाँगीर ने फरीद बुखारी को मीर बख्शी का पद और **साहिब उस-सेफ-वा-लकलाम** (कलम तथा तलवार का स्वामी) की उपाधि तथा चित्रकार अब्दुल समद के पुत्र शरीफ खाँ को वजीर का पद एवं अमीर-उल-उमरा का **खिताब दिया।** अबुल फजल के हत्यारे ओरछा के वीरसिंह बुन्देला को **3000** का मनसब दिया गया।

Scanned with CamScanner

जहाँगीर ने आगरा किले के **शाहबुर्ज** में 30 गज लम्बी **जंजीरी न्याय व्यवस्था** (जंजीर-ए-अदली) शुरू की। इसमें 60 घण्टियाँ लगी थी।

आइने-जहाँगीरी—तुजुके-जहाँगीरी में वह बताता है कि शासक बनने के पश्चात् पहली राजाज्ञा के रूप में उसने 12 अध्यादेश जारी किया जिनको आइने-जहाँगीरी (जहाँगीरी कानून) कहा गया। वाक्यात-ए-जहाँगीरी में इन अध्यादेशों को दस्तूर-उल-अमल कहा गया है। प्रमुख 12 अध्यादेश निम्नलिखित हैं–

(1) **जकात, तमगा** एवं **मीर-बहरी** नामक कर हटा दिया जाय।

(2) जिन सड़कों पर चोरी अथवा डकैती होती है वहाँ के जागीरदारों को आदेश दिया गया है कि वे वहाँ पर आबादी बसायें। सड़कों के किनारों पर सराय, मस्जिद, कुएँ आदि का निर्माण करवायें और खेती को प्रोत्साहन दें।

(3) मृतकों के उत्तराधिकारियों को स्वतन्त्रतापूर्वक उनकी सम्पत्ति का उत्तराधिकार दिया जाय। यदि किसी मृतक का उत्तराधिकारी न हो तो उसकी सम्पत्ति का प्रयोग इस्लामिक नियमों के अनुसार मस्जिद, कुओं तथा तालाबों के निर्माण में व्यय किया जाय। व्यापारियों की गांठों को मार्ग में उनकी अनुमति के बिना न खोली जाय।

(4) शराब, तम्बाकू एवं अन्य मादक वस्तुएं न बनायी जाय न बेची जाय। यद्यपि जहाँगीर स्वयं शराब पीता था।

(5) मकानों पर अधिकार तथा अंग-भंग का निषेध किया जाय। कोई व्यक्ति दूसरे के घरों में न घूसे।

(6) सरकारी अधिकारी प्रजा से बलपूर्वक उसकी भूमि न छीने अर्थात् **धसबी का निषेध** किया जाय। बिना बादशाह की आज्ञा के जागीरदार एवं अधिकारी आपस में वैवाहिक संबंध स्थापित न करें।

(7) नगरों में अस्पतालों का निर्माण हो तथा वहाँ **हकीमों** की व्यवस्था की जाय।

(8) **वीरवार** (वृहस्पतिवार) जो कि मेरे सिंहासनारोहण का दिन था और **रविवार** जो कि मेरे पिता (अकबर) का जन्मदिन था, इन दो दिनों पशु बध न किया जाय।

(9) चूंकि रविवार को मेरे पिता शुभ दिन मानते थे और इसी दिन सृष्टि का आरम्भ हुआ इसलिए रविवार दिन के प्रति सम्मान प्रदर्शित किया जाय।

(10) जहाँगीर ने घोषणा की कि उसके पिता के समय से कार्यरत मनसबदार एवं जागीरदार अपने पदों पर बने रहेंगे।

(11) **आइमा (ऐम्मा)**[1] भूमि जो कि मददेमाश के रूप में जिन धार्मिक संस्थाओं को प्रदान की गयी है वह उन्हीं के पास बनी रहेगी और उनको अधिग्रहित नहीं किया जाय। दूसरे सद्र-ए-जहाँ को आदेश दिया गया है कि वह प्रतिदिन निर्धनों की देखभाल करें।

(12) कारागारों में बन्द कैदियों को मुक्त किया जाय।

इसके अतिरिक्त उसने किसी को बलात मुसलमान न बनाने **हिजड़ों** के व्यापार का निषेध तथा **द्युत क्रीड़ा** (जुआ) बंद करवा दिया। हालांकि बाद में उसने केवल दीपावली के दिन जुआ खेलने की अनुमति दे दी थी। **जहाँगीर खुद दीपावली के दिन जुआ खेलता था जो तीन रातों तक चलता था।** मार्च 1606 ई. में जहाँगीर ने अपने शासन का प्रथम नौरोज मनाया।

अभियान

मेवाड़ से युद्ध एवं सन्धि—मेवाड़ अभियान जहाँगीर का पहला सैनिक अभियान था। मेवाड़ का तत्कालीन शासक राणा प्रताप का पुत्र **अमरसिंह** था। 1605-06 ई. में जहाँगीर ने परवेज एवं सगर को मेवाड़ से युद्ध करने भेजा। जहाँगीर ने महाराणा प्रताप के भाई सगर को राणा की उपाधि देकर चित्तौड़ में प्रतिष्ठित किया था। दोनों पक्षों के बीच **देवार के दर्रे** में एक अनिर्णित युद्ध हुआ। **अब्दुल्ला खाँ** जिसे जहाँगीर ने **फिरोजजंग** की उपाधि दी थी 1611 ई. में हुए रानपुर युद्ध में अमरसिंह के पुत्र करनसिंह से पराजित हो गया। इसी कारण जहाँगीर ने अब्दुल्ला खाँ को **गुरैजजंग** की उपाधि दी। इसके पश्चात् **राजा बसु** को भेजा गया। उसे भी कोई सफलता नहीं मिली। 1614 में मेवाड़ से युद्ध करने हेतु खुर्रम एवं अजीज कोका को भेजा और

1. जिसे यह भूमि प्राप्त होती थी उसे **एअमास** कहा जाता था और इन्हीं को जहाँगीर ने **लश्कर-ए-दुआगो** (दुआ करने वाली फौज) कहा था।

Scanned with CamScanner

खुद जहाँगीर ने अजमेर में डेरा डाला। अजीज कोका से खुर्रम का मतभेद होने पर जहाँगीर ने मेवाड़ युद्ध की जिम्मेदारी खुर्रम पर डाल दी। जहाँगीर ने युद्ध को जेहाद की संज्ञा दी थी। अमरसिंह ने **शुभकरण** एवं **हरिदास** को मैत्री दूत के रूप में अजमेर में जहाँगीर के पास भेजा। अतः **1615 ई. में मेवाड़ संधि हुई जो कि जहाँगीर के समय की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना थी।** इस संधि के तहत राणा अमरसिंह ने मुगल अधिपत्य स्वीकार कर लिया। राजा की इस शर्त को भी इस संधि में स्वीकार किया गया कि उसकी जगह उसका पुत्र **करण** मुगल दरबार में रहेगा जिसे 5 हजार की मनसबदारी दी गयी। मुगल वंश में वैवाहिक संबंध बनाये या न बनाये यह राणा की मर्जी। सबसे महत्त्वपूर्ण प्रावधान इस संधि का यह था कि जहाँगीर ने मेवाड़ एवं चित्तौड़ का किला राणा को दे दिया लेकिन वह चित्तौड़ दुर्ग की **किलेबन्दी नहीं** करेगा। इस सन्धि के पश्चात् खुर्रम को **शाह** की उपाधि मिली। जहाँगीर ने अमरसिंह एवं करनसिंह की दो संगमरमर की मूर्तियां आगरा राजमहल के उद्यान में लगवाया। अमरसिंह का छोटा लड़का कुंवर भीम खुर्रम के साथ दक्कन में साम्राज्य की सेवा में लगा। यद्यपि जहाँगीर के ही काल में राणा जगतसिंह ने चित्तौड़गढ़ के प्राचीरों की थोड़ी बहुत मरम्मत करायी थी, लेकिन जहाँगीर ने उसकी अनदेखी कर दी थी।

कांगड़ा विजय–अकबर ने कांगड़ा दुर्ग पर अधिकार करने के लिए खानेजहाँ को नियुक्त किया परन्तु वह असफल रहा। 1620 में खुर्रम एवं राजा विक्रमजीत बघेल ने इस किले को जीत लिया। इस युद्ध को भी जेहाद की संज्ञा दी गयी। कांगड़ा से जहाँगीर दुर्गा के ज्वालामुखी मंदिर में गया। इसी समय **चंबा** के राजा ने भी उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

जहाँगीर की अन्य विजयों में– 1611 ई. में ओडिशा का **खर्दा**, 1613 ई. में उत्तर-पूर्व में **कूचबिहार** एवं **कामरूप**, 1615 ई. में बिहार का खोखर प्रदेश और 1620 ई. में कश्मीर में **किश्तवार** विजय प्रमुख हैं।

अहमदनगर–का प्रधानमंत्री **मलिक अम्बर** एवं सेनापति **मलिक राजू** था। अहमदनगर की नवीन राजधानी **खिरकी** थी। 1608 ई. में जहाँगीर ने अब्दुर्रहीम खानखाना को दक्षिण भेजा। इन्होंने मलिक अम्बर को हरा दिया परन्तु, खानखाना पर घूस लेने का आरोप लगा। अतः उनको बुला लिया गया। 1610 में खानेजहाँ लोदी एवं राजा मानसिंह को दक्षिण भेजा गया। 1616 ई. में जहाँगीर ने **शाह खुर्रम** को दक्षिण भेजा और खुद **1617 ई. में माण्डू** में अपना पड़ाव डाला। बीजापुर के सुल्तान अली आदिलशाह ने मध्यस्थता कर मुगल एवं मलिक अम्बर के बीच संधि करा दी। संधि के तहत बालाघाट की जागीर एवं अहमदनगर का दुर्ग पुनः मुगलों को मिल गया। महत्वपूर्ण है कि अहमदनगर का दुर्ग मलिक अम्बर ने 1610 में मुगलों से छीन लिया था। इसी विजय के उपलक्ष्य में जहाँगीर ने शाह खुर्रम को **शाहजहाँ** की उपाधि, 30 हजार का मनसब एवं गुजरात की सूबेदारी दी। खानखाना को बरार, खानदेश एवं अहमदनगर का सूबेदार बनाया गया। गुजरात के सूबेदार के रूप में शाहजहाँ ने जामवंश के अधीनस्थ काठियावाड़ के उत्तरी तट पर अधिकार स्थापित किया था।

मलिक अम्बर

इथियोपिया के हरारे में जन्मा एक अबीसीनियाई (हब्शी) था। उसके माता-पिता ने उसे बगदाद के गुलाम बाजार में बेच दिया था। मलिक अम्बर का उत्थान अहमदनगर के प्रसिद्ध मंत्री चंगेज खां की सेवा में हुआ। वह कुछ समय बीजापुर एवं गोलकुंडा के सेवा में भी रहा परन्तु बाद में मुर्त्तजा निजामशाह द्वितीय को अहमदनगर का शासक बनवा कर वह खुद उसका पेशवा बन गया था। मलिक अम्बर ही जहाँगीर की दक्षिण विजय में सबसे बड़ी बाधा था। **मण्डेर (नांदेर) के युद्ध (1601-02) में मलिक अम्बर का पहली बार मुगलों से प्रत्यक्ष युद्ध हुआ।** मलिक राजू के कारण उसे दो बार अहमदनगर छोड़कर मुगल सेवा में जाना पड़ा। उसने अहमदनगर की राजधानी क्रमशः परेन्द्र, जुनार, दौलताबाद और अन्ततः खिरकी या खिड़की बनायी। मलिक अम्बर ने बीजापुर की राजधानी **नौरसपुर** को जला दिया था। इसने फारस (पर्शिया) से व्यापारिक संबंध बनाया और जंजीरा द्वीप में **नौसेना** का निर्माण कर सीदियों को इसकी देख-रेख हेतु नियुक्त किया। **मलिक अम्बर** ने दक्षिण में **टोडरमल** की भू-राजस्व व्यवस्था को लागू किया। उसने अहमदनगर में इजारे या ठेके के स्थान पर **जब्ती प्रणाली** लागू की। महत्त्वपूर्ण है कि शिवाजी की लगान व्यवस्था मलिक अम्बर की भू-राजस्व व्यवस्था पर ही आधारित थी। **वर्गी-गिरी** (गोरिल्ला) युद्ध का **जनक** मलिक

Scanned with CamScanner

अम्बर को ही माना जाता है। उसने छापामार युद्ध करने हेतु बड़ी संख्या में मराठा दस्तों (बर्गियों) की नियुक्ति की थी। 1624 ई. में उसने तथा शाहजी (शिवाजी के पिता) ने **भातवाड़ी** या मरवाड़ी के युद्ध में मुगलों को पराजित किया। **1626** ई. में मलिक अम्बर की मृत्यु हो गयी।

कन्धार–जहाँगीर का समकालीन पर्शिया (फारस) का शासक **शाह अब्बास प्रथम** था। उसने जहाँगीर के दरबार में अपना राजदूत भेजकर मित्रता भी दर्शाया। जहाँगीर ने भी अपने चित्रकार **बिशनदास** को फारस (ईरान) भेजा था जिसने शाह अब्बास का रूपचित्र बनाया था। परन्तु, **1622 ई.** में कान्धार मुगल साम्राज्य से बाहर हो गया। शाहजहाँ के विद्रोह के कारण जहाँगीर कन्धार को पुनः प्राप्त करने का प्रयत्न न कर सका।

नूरजहाँ

वास्तविक नाम–मेहरून्निसा

जन्म–1577 ई. में **कान्धार** में एक वृक्ष के नीचे उस समय हुआ जब उसके माता-पिता अपनी मातृभूमि फारस से भारत प्रवास की यात्रा पर थे।

उपाधि–नूरमहल; नूरजहाँ; बादशाह बेगम

पिता–मिर्जा गयास बेग उर्फ **एतमाद्-उद-दौला**

माता–अस्मत बेगम। इन्होंने ही गुलाबी इत्र का आविष्कार किया था जिसे **रोगन-ए-जहाँगीर** कहा गया।

भाई–अबुल हसन था जिसे जहाँगीर ने क्रमशः **इतिकाद खान** एवं **आसफ खाँ** की उपाधि दी थी। आसफ खाँ अर्थशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र का विद्धान और शाहजहाँ का श्वसुर था। इब्राहिम खाँ नूरजहाँ का दूसरा भाई था। मुहम्मद शरीफ उसका सबसे बड़ा भाई था जिसे खुसरों की मदद करने के कारण जहाँगीर ने मरवा दिया था।

प्रथम पति–अली कुली इस्ताजलू था। इसे जहाँगीर ने **शेर अफगन** की उपाधि दी थी।

पुत्री–लाड़ली बेगम थी जिसका विवाह जहाँगीर के पुत्र **शहरयार** से हुआ।

नूरजहाँ मिर्जा ग्यास बेग की दूसरी पुत्री थी। मिर्जा ग्यास बेग को अकबर ने काबुल का दीवान बनाया। शासक बनने के बाद जहाँगीर ने इसे एतमाद्-उद्-दौला की उपाधि और आधे राज्य का दीवान का बना दिया। इसके पुत्र आसफ खाँ को पहले खान-ए-सामा अन्त में **वकील** पद जहाँगीर ने दिया। मेहरून्निसा का विवाह अलीकुली से हुआ। लाडली बेगम इसी की संतान थी। परन्तु, शीघ्र ही अलीकुली की मृत्यु हो गयी। इसके पश्चात् मेहरून्निसा अकबर की विधवा सलीमा बेगम की सेविका बनी। अन्ततः **42** वर्ष की उम्र में जहाँगीर ने **34** वर्षीय विधवा मेहरून्निसा से 1611 ई. में विवाह कर लिया। यह पहले नूरमहल फिर नूरजहाँ और अन्ततः **1613** ई. से बादशाह बेगम के नाम से जाने जानी लगी। सिक्कों पर मुद्रालेख के रूप में उसकी सरकारी उपाधि 'बादशाह बेगम' अंकित रहती थी। जहाँगीर ने इसे शासन करने तथा बादशाहत के चिह्न धारण करने का भी अधिकार दिया था। नूरजहाँ जहाँगीर के साथ शिकार पर जाती थी, आत्मकथा में जहाँगीर नूरजहाँ की बन्दूक से बाघों के शिकार का उल्लेख किया है तथा उसके अचूक निशाने का प्रशंसा की है। जहाँगीर का कथन था, **"मुझे एक सेर शराब और आधा सेर माँस के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहिए, मैंने बादशाहत नूरजहाँ को सौंप दिया है।"** नूरजहाँ ने अपने नाम से सिक्के जारी किया, पट्टमहिषी बनी और **झरोखा दर्शन** देने लगी। नूरजहाँ **फारसी** में कविताएँ भी लिखती थी। सांस्कृतिक स्तर पर फारस (ईरान) एवं भारत उसी के सक्रिय प्रयासों से और निकट आये। इसी हेतु जहाँगीर ने मुहम्मद हुसैन चलबी को शाही व्यापार आयुक्त नियुक्त किया था। नूरजहाँ ने फारसी परम्पराओं पर आधारित नये फैशन चलाया जैसे अपने द्वितीय विवाह के अवसर पर **नूरमहली** नामक वस्त्र बनाया था। गुलाबी इत्र के निर्माण में इसका भी योगदान था। इसलिए कुछ इतिहासकार इसे ही इत्र का आविष्कारक मानते हैं। **मुहम्मद हादी** के अनुसार, **"नूरजहाँ सभी पीड़ित तथा निस्सहाय लड़कियों के लिए एक आश्रय स्थल थी।"** मोतमिद खान के अनुसार उसने **500** अनाथ लड़कियों का विवाह करवाया था। नूरजहाँ ने बहुत सी सरायें बनवायी थी। पीटर मुंडी आगरा में **नूरमहल सराय** का उल्लेख करता है जबकि नूरमहल सराय **जालन्धर** (पंजाब) में था।

Scanned with CamScanner

जुन्टा (जनता) गुट–इसे **नूरजहाँ गुट** भी कहा जाता है। इस गुट का उल्लेख इतिहासकार बेनीप्रसाद ने **हिस्ट्री ऑव जहाँगीर** में किया है। उनका मत टामस रो के विवरण पर आधारित है जो कि 'चार व्यक्तियों वाले के गुट' का उल्लेख करता है। उनके अनुसार **1622** ई. तक यह गुट प्रभावी रहा। इस गुट में आसफ खाँ, एतमादउद्दौला एवं खुर्रम सम्मिलित थे। आगे चलकर आसफ खाँ एवं खुर्रम (शाहजहाँ) इस गुट से निकल गये। ध्यान रहे कि **जहाँगीर** एवं **महावत खां** इस गुट के सदस्य **नहीं** थे। महावत खाँ ने एक बार जहाँगीर से निवेदन किया भी कि वह अपने आप को नूरजहाँ की मण्डली के प्रभाव से मुक्त करें क्योंकि बादशाह के लिए यह एक लज्जा की बात है। **मुतमिद खाँ** कहता है, **''हिन्दुस्तान की सबसे अच्छी जागीर उन लोगों के हाथ में है जो नूरजहाँ के सहयोगी एवं रिस्तेदार हैं। अन्ततः नूरजहाँ की प्रभुसत्ता इस सीमा पर पहुँच गयी कि सम्राट केवल नाम का बादशाह रह गया।''**

1626-27 ई. में जहाँगीर स्वास्थ्य सुधार हेतु कश्मीर गया था। कश्मीर से लौटते समय **भीमवार** नामक स्थान पर 1627 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी। इसे लाहौर के **शाहदरा** में रावी नदी के किनारे दफना दिया गया। इस समय शहरयार लाहौर में (इसे नूरजहाँ बादशाह बनाना चाहती थी) और शाहजहाँ **दक्षिण** के **जुन्नार** में था (इसे आसफ खाँ बादशाह बनाना चाहता था)। आसफ खाँ ने आगरा की गद्दी खाली न रहे इसीलिए खुसरो के पुत्र **बुलाकी** को **दावरबख्श** की उपाधि देकर (इसे समकालीन इतिहासकारों ने **बलि का बकरा** कहा है) बादशाह घोषित कर दिया। उसने **बनारसीदास** नामक दूत के माध्यम से सूचना भेजवाया और शाहजहाँ को तुरन्त आगरा बुलाया। आसफ खाँ ने लाहौर पर आक्रमण करके शहरयार को अंधा करवा दिया। लाहौर में शाहजहाँ के नाम का खुतबा पढ़ा गया। शाहजहाँ ने नूरजहाँ को दो लाख रूपया वार्षिक पेंशन देकर राजनीति से पृथक कर दिया। 1645 ई. में नूरजहाँ की मृत्यु हो गयी उसे लाहौर में जहाँगीर की कब्र के साथ ही एक मकबरे में दफनाया गया।

महत्वपूर्ण तथ्य

(1) बीजापुर के सुल्तान आदिलशाह तथा शेख सलीम चिश्ती के पौत्र **इस्लाम खाँ** को जहाँगीर ने फर्जंद (पुत्र) की उपाधि दी थी।

(2) सर्वप्रथम जहाँगीर ने ही मराठों को मनसबदारी (उमरा वर्ग) में शामिल किया। उसके अनुसार, **''मराठे कठोर परिश्रमी और दिलेर लोग हैं और देश में प्रतिरोध के आधार हैं।''**

(3) जहाँगीर ने गुरू अर्जुन देव के मित्र लाहौर के निवासी **मियां मीर** से सानिध्य स्थापित किया था।

(4) **एक बार किसी असाध्य बीमारी से ठीक होने के कारण जहाँगीर ने अपना कान छेदवा लिया।** इसकी देखा-देखी पुरूषों में भी कान छेदवा कर रत्न पहनना फैशन बन गया।

(5) **मुहम्मद-बिन-तुगलक,** अकबर, **जहाँगीर** एवं **शाहजहाँ** गंगाजल पीते थे। परन्तु, किसी भी स्रोत से औरंगजेब द्वारा गंगाजल पान किये जाने की पुष्टि नहीं होती।

जहाँगीर के काल में हुए विद्रोह

खुसरो का विद्रोह (1606)–जहाँगीर के शासन काल में **प्रथम विद्रोह** उसके पुत्र खुसरो ने किया। खुसरो को **हुतात्मा सन्त** कहा गया था। इसी के विद्रोह के समय जहाँगीर ने कहा था, **''राजत्व पुत्र तथा जमाता, किसी पर विचार नहीं करता। राजा का कोई संबंधी नहीं होता है।''** जहाँगीर ने उसे आगरा के किले में नजरबन्द करवा दिया था। परन्तु, खुसरो यहाँ से निकलकर **तरनतारन** में **गुरू अर्जुनदेव** से मिला जिन्होंने उसकी आर्थिक मदद की और बादशाह बनने का आशीर्वाद दिया। सूफी संत **निजाम थानेश्वरी** खुसरो को छोड़ने कुछ दूर तक उसके साथ चले थे। खुसरो **भैरोवाल के युद्ध** में जहाँगीर से पराजित हुआ, महावत खाँ ने उसे अंधा कर दिया। खुसरो को आसफ खाँ की अभिरक्षा (custudy) में रखा गया। 1620 ई. में दक्षिण जाने से पूर्व शाहजहाँ की खुसरो को अपने अभिरक्षा में रखने की माँग को जहाँगीर ने स्वीकार कर लिया। मार्च 1622 **ई.** में **बुरहानपुर** में खुसरो की हत्या कर दी गयी। शाहजहाँ ने पिता को **कहलवा भेजा** कि भाई जान की पेट दर्द से मृत्यु हो गयी। जहाँगीर ने खुसरो के शव को बुरहानपुर से निकलवाकर आगरा मंगवाया। तत्पश्चात् इलाहाबाद के **खुल्दाबाद** (खुसरोबाग) में इस अभागे पुत्र को उसकी अभागी माँ (मानबाई) के बगल में दफना दिया गया।

Scanned with CamScanner

खुसरो के विद्रोह के एक माह पश्चात् बीकानेर के राजा **रायसिंह** ने एक ज्योतिषी की जहांगीर के शासन काल के अल्पायु ...ने की भविष्यवाणी से प्रभावित होकर विद्रोह कर दिया जिसे दबा दिया गया।

बंगाल विद्रोह—जहांगीर के समय अफगानों ने बंगाल में दो बार विद्रोह किया। **1599 ई. में** अफगान **उस्मान खाँ** ने ...द्रोह किया जिसे मानसिंह ने दबा दिया। 1612 ई. में उसने पुनः विद्रोह कर दिया। उस्मान खान को समकालीन इतिहासकारों ने 'अन्तिम अफगान' कहा है। बंगाल में दूसरा विद्रोह **मूसा खाँ** ने किया जिसे **12 भुइंया का विद्रोह** भी कहा जाता है। बंगाल में शान्ति-व्यवस्था स्थापित करने हेतु जहाँगीर ने मुगलों के संरक्षक संत शेख सलीम चिश्ती के पोते **इस्लाम खान** को 1608 ई. में बंगाल का सूबेदार बनाया। इसने **राजमहल (अकबरनगर)** को बंगाल की राजधानी बनाया और समस्त अफगान विद्रोहियों को परास्त किया। इसके बाद उसने राजधानी ढाका स्थानांतरित कर दी। जहाँगीर ने पराजित अफगान सरदारों के साथ उदारता का व्यवहार किया और उनको बड़े पैमाने पर ऊंचे-ऊंचे पद देने की नीति प्रारम्भ कर अमीर वर्ग में जोड़ लिया। उसकी मेलवाली ...से अब से अफगान साम्राज्य के प्रमुख मित्र बन गये। जहाँगीरी दौर का प्रमुख अफगान मनसबदार **खान-ए-जहाँ लोदी** था जिसने दकन में यशस्वी कार्य किया। जहाँगीर उसका बहुत आदर करता था।

शाहजहाँ का विद्रोह (1623-26)—का तात्कालिक कारण कन्धार का 1622 ई. में निकल जाना था। शाहजहाँ कन्धार पुनः जीतने नहीं जाना चाहता था। अतः नूरजहाँ ने शहरयार के **मनसब में वृद्धि** करवा कर उसे कन्धार जाने वाली सेना का नेतृत्व दिलवा दिया। शाहजहाँ ने अपने मुख्य सलाहकार अब्दुर्रहीम खानखाना के सहयोग से विद्रोह कर दिया। शाहजहाँ का मुख्य सहायक **अब्दुल्ला खाँ** था जो उसे छोड़कर सन्यासी बन गया था। **1623 ई.** में आगरा के निकट **बिलोचपुर** की लड़ाई में **महाबत खाँ** ने शाहजहाँ को हरा दिया। शाहजहाँ दक्षिण में मुगल साम्राज्य की राजधानी बुरहानपुर भाग गया। इसी समय उसने पुर्तगालियों एवं गोलकुण्डा के सुल्तान से मदद मांगी जो कि नहीं मिली। अहमदनगर का मलिक अम्बर शाहजहाँ की मदद को तैयार हो गया परन्तु महाबत खाँ ने एक बार फिर उनकी संयुक्त सेना को हरा दिया। अन्त में जहाँगीर ने शाहजहाँ को माफ कर दिया लेकिन उसके दो पुत्रों **दारा** (10 वर्ष) एवं **औरंगजेब** (8 वर्ष) को जमानत के रूप में अपने पास मंगवा लिया। शाहजहाँ को दक्षिण में रहने और जीवन-यापन हेतु **बालाघाट की जागीर** दे दी गयी। दोनों पुत्र पूरे आठ वर्ष तक नूरजहाँ की निगरानी में रहे।

महाबत खाँ

मूल नाम– जमान बेग

उपाधि– महाबत खाँ; यह उपाधि जहाँगीर ने दी थी।

विशेष– जहाँगीर द्वारा शुरू **दो अस्पा सेह अस्पा** पाने वाला पहला मनसबदार महाबत खाँ था।

महाबत खाँ का विद्रोह (1626)

महाबत खाँ ने कश्मीर में झेलम तट पर जहाँगीर को बन्दी बना लिया परन्तु, नूरजहाँ ने जहाँगीर को छुड़वा लिया। दरअसल महाबत खाँ तुर्की नहीं जानता था। इसी का लाभ उठाकर नजरबन्द जहाँगीर एवं नूरजहाँ ने षड्यन्त्र कर महाबत खाँ की सेना में विद्रोह करा दिया। महाबत खाँ भाग कर मेवाड़ पहुँचा तदुपरान्त दकन में शाहजहाँ के पास चला गया।

जहाँगीर धार्मिक नीति—सहिष्णुतापूर्ण थी। उसने पुर्तगाली फादर जेवियर से ईसाई धर्म की शिक्षा ग्रहण की थी। वह उज्जैन के वेदान्तविद् **जदरूप गोसाई** से कई बार मिला। बाद में जदरूप मथुरा चले गये, जहाँ जहाँगीर उससे दो बार पुनः मिला वह इस हिन्दू संत से अत्यधिक प्रभावित था। **श्रीकान्त** को हिन्दुओं का न्यायाधीश नियुक्त किया। जहाँगीर शिवरात्रि को योगियों से साक्षात्कार करता था।[1] जैनियों को संरक्षण दिया तथा **जैन सिद्धिचन्द्र** को **नादिर-ए-जमा** की उपाधि दी। एक

1. अकबर भी शिवरात्री के दिन आगरा में लगने वाले मेले में **योगी-साधुओं के साथ सत्संग करता और उनके साथ ही भोजन करता** था। [देखें वी.एन. लुणिया 'अकबर महान' पृष्ठ संख्या– 201]

Scanned with CamScanner

बार राजपूत अनूपराय ने जहाँगीर की चीते से प्राण रक्षा की तो प्रसन्न होकर जहाँगीर ने उसे **अनिराय 'सिंहदलन'** की उपाधि तथा अपनी पालकी में बैठने का स्थान दे दिया। उसने गुरू अर्जुनदेव के मित्र **मियां मीर** से सानिध्य स्थापित किया था। 1612 ई. में जहाँगीर ने पहली बार राखी (जिसे वह **निगाहदाश्त** कहता था) बंधवाया। उसे वेदान्त के अनुयायियों के बीच शान्ति मिलती थी। वेदान्त को जहाँगीर **तसव्वुफशास्त्र** कहता था। **1613 ई. से जहाँगीर ने नियम बनाया कि हर रात सुपात्र एवं दरवेश लोग व्यक्तिगत रूप से मिलें ताकि उसे उनकी अवस्था की जानकारी मिल सके।** उसने ईसाई मिशनरियों को आर्थिक सहायता प्रदान की तथा पंजाब और संभवतः गुजरात में भी गोहत्या बंद करवा दी। वृंदावन के चैतन्य पंथियों को पांच बार अनुदान दिया। हरिद्वार एवं अजमेर का पुष्कर क्षेत्र मदद-ए-माश के रूप में ब्राह्मणों को दे दिया।

अकबर की सुलहकुल नीति को जारी रखा और राजनीति में धर्म को हावी नहीं होने दिया। इसी कारण उसने नक्शबन्दी सिलसिले के **शेख अहमद सरहिन्दी** को ग्वालियर दुर्ग में तथा लाहौर के अफगान शेख **इब्राहिम बाबा** को चुनार दुर्ग में बन्दी बनाकर रखा। विद्रोही शहजादा खुसरो की मदद करने के कारण गुरू अर्जुनदेव को मृत्युदण्ड दिया और थानेश्वर के शेख निजाम को मक्का भेज दिया। हालांकि कभी-कभी, उसकी नीति में विचलन भी देखा गया जैसे उसने गुजरात के जैनियों को उनके नेता मानसिंह सहित साम्राज्य से निकल जाने को कहा। 1617 ई. में गुजरात में सभी जैन मन्दिर बन्द करवा दिया। पुर्तगालियों से नाराज होने के कारण आगरा एवं लाहौर में स्थित गिरजाघर तथा पादरियों को दिये जाने वाले भत्ते भी कुछ समय के लिए बंद करवा दिया। अजमेर में बराह अवतार की मूर्तियाँ नष्ट करना, कांगड़ा में इस्लाम के अनुसार कर्मकांड करना आदि घटनाएं अपवादस्वरूप ही थी। मोटे तौर पर उसने सदैव धर्मसहिष्णुतापूर्ण नीति का अनुसरण किया।

Scanned with CamScanner

शाहजहाँ (1627-1658)

जन्म– 5 जनवरी, 1592; **लाहौर** में

मृत्यु– जनवरी 1666 ई.; आगरा के **शाहबुर्ज** में

मूल नाम– शिहाबुद्दीन

उपाधि/उपनाम– खुर्रम अर्थात् खुशी देने वाला। अकबर ने यह नाम रखा था।

मुजहिद- समकालीन इतिहासकारों ने कहा

इस्लाम का रक्षक– शाहजहाँ ने स्वयं को घोषित किया था

विश्व-भेदी किरण; विश्व का विजेता (स्वामी)– उसके जन्म के अवसर पर दरबारी कवियों ने कहा

शाह; शाहजहाँ– मेवाड़ संधि के बाद 'शाह' एवं अहमदनगर से संधि के बाद शाहजहाँ की उपाधि जहाँगीर से पाया।

बे-दौलत- अपने अन्त समय में जहाँगीर ने शाहजहाँ को बेदौलत (भाग्यहीन) कहा।

अबुल मुजफ्फर शिहाबुद्दीन मोहम्मद साहबे किरानेसानी– आगरा में सम्पन्न राज्याभिषेक (1628 ई.) के अवसर उसने यह उपाधि धारण की।

विशेष– शाहजहाँ का काल **मुगल साम्राज्य का स्वर्णयुग** कहलाता है।

पत्नी– शाहजहाँ का पहला विवाह फारस के मुजफ्फर हुसैन सफवी की पुत्री से हुआ था। अर्जुनमन्दबानो बेगम इसकी दूसरी एवं सर्वप्रिय पत्नी थी जिसकी उपाधि **मलिका-ए-जमानी** एवं **मुमताज** थी। शाही मुहर उसी के अधिकार में रहती थी। सतीउन्निसा खानम मुमताज की सलाहकार तथा मानवीय कार्यों में उसकी परामर्शदात्री थी। 1631 ई. में बुरहानपुर में मुमताज की मृत्यु हो गयी।

शिक्षक– शाहजहाँ का पहला शिक्षक **मुल्ला कासिम बेग तबरीजी** था। लेकिन, वह सर्वाधिक प्रभावित **हकीम अली गिलानी** से था जिससे उसने चिकित्साशास्त्र की शिक्षा पायी थी। अकबर की पत्नी **रुकय्या बेगम** के द्वारा पाले जाने के कारण वह तुर्की में पढ़ तथा लिख सकता था। लेकिन डा. बनारसी प्रसाद सक्सेना महोदय का मत है कि जहाँगीर के बारम्बार प्रयास के बावजूद तुर्की भाषा के प्रति उसकी उदासीनता बनी रही।

1608 ई. में उज्जैन में एक जागीर तथा हिसार फिरोजा की सरकार (जागीर) जो प्रायः मुगल युवराज को ही दी जाती थी, खुर्रम को दी गयी। उसे लाल तम्बू लगाने की आज्ञा के साथ शाही मुहर का संरक्षण भी प्राप्त हुआ। शासक बनने के पश्चात् शाहजहाँ ने **आसफ खाँ** को **चाचा** की उपाधि दी। उसे **प्रधानमंत्री** का पद पुनः मिला। आसफ खाँ का प्रशासन में इतना अधिक प्रभाव था कि समकालीन यात्रियों ने उसे **द्वितीय सम्राट** की संज्ञा दी है। वह 14 वर्ष तक शाहजहाँ का वकील रहा। शाहजहाँ ने उसे मोहर-ए-उजुक (शाही **मोहर**) भी सौंप दी थी। **महाबत खाँ** को अजमेर की सूबेदारी तथा **खानखाना** की उपाधि मिली। शाहजहाँ अपने प्रत्येक पुत्र को 500 रुपया प्रतिदिन देता था जब तक वह मनसब के लिए योग्य न हो जायें।

महत्वपूर्ण तथ्य

(1) **शाहजहाँ हिन्दू माँ की सन्तान होते हुए भी अपना विवाह किसी हिन्दू महिला से नहीं किया।**

(2) **डा. बनारसी प्रसाद सक्सेना** के अनुसार, **"जहाँगीर का इतिहास खुर्रम की विजयों का इतिहास है।"**

(3) एक **कन्धार** (कन्दहार) का दुर्ग दक्षिण में तेलंगाना के बालाघाट में था जिसे **सर्वप्रथम** शाहजहाँ द्वारा विजित किया गया।

(4) शाहजहाँ को अपने दो पुत्रों, **दाराशिकोह** (10 वर्ष) एवं **औरंगजेब** (8 वर्ष) को जहाँगीर के पास जमानत के रूप में रखना पड़ा था।

Scanned with CamScanner

मीर जुमला

मूल नाम – **मोहम्मद सईद**

उपाधि – **मोअज्म खाँ**; शाहजहाँ ने यह उपाधि दी थी

मोहम्मद सईद का जन्म अर्दिस्तान में हुआ था। ईरान के शेख-उल-इस्लाम के अत्याचार से पीड़ित होकर वह गोलकुण्डा चला आया। वह ईरान का हीरे का ... और गोलकुण्डा के मीर जुमला (प्रधानमंत्री) पद पर था। औरंगजेब मीर जुमला को अपना **दार्शनिक** एवं **गुरु** कहता था।

शाहजहाँ के काल में होने वाले विद्रोह

(1) **खानेजहाँ लोदी का विद्रोह (1628)**– इस अफगान मनसबदार का ... नाम **पीर खान** था। जहाँगीर ने खानेजहाँ को **खानखाना** की उपाधि दी थी। अधिकांश इतिहासकारों का मत है कि शाहजहाँ के काल में होने वाला प्रथम विद्रोह यही था। उसे ख्वाजा अबुल हसन ने हरा दिया। परन्तु खानेजहाँ लोदी ... भाग गया। अप्रत्यक्ष रूप से यह विद्रोह अहमदनगर के पतन का कारण बना। खानेजहाँ कलिन्जर के समीप तालसेहोंडा से लड़ते हुए मारा गया।

(2) **जुझारसिंह बुन्देला का विद्रोह (1628)**– बुन्देलखण्ड की राजधानी ओरछा थी। बुन्देलों का मुगलों के खिलाफ होने वाला यह **पहला विद्रोह** था। ... कुछ इतिहासकार बुन्देलों की पहली मुठभेड़ अकबर के काल में **मधुकरशाह** बुन्देला का मानते हैं। जुझार सिंह, बीरसिंह बुन्देला का पुत्र था। बीरसिंह बुन्देला ने अबुल फजल की हत्या से प्राप्त पैसे से मथुरा में केशवदेवराय मन्दिर का निर्माण करवाया। **औरंगजेब** ने इस विद्रोह को दबा दिया।

(3) **महोबा के चम्पतराय का विद्रोह**– शाहजहाँ के समय चम्पतराय ने विद्रोह किया। अन्त में दोनों पक्षों के बीच सुलह हो गयी। परन्तु, बादशाह औरंगजेब के काल में चम्पतराय के पुत्र छत्रसाल ने विद्रोह कर दिया।

> **कोहिनूर हीरा (Mountain of Light)**
>
> (1) इस हीरे का मूल्य सारे संसार के दैनिक व्यय का आधा था। यह हीरा वारांगल की **गोलकुण्डा खान** से निकला था। **खफी खाँ** के अनुसार तेलंगाना के शासक प्रतापरुद्रदेव ने यह हीरा काफूर को दिया जिसने अलाउद्दीन खिलजी को और उसने मुबारक खिलजी को सौंप दिया। यह कोहिनूर का पहला साक्ष्य था।
>
> (2) इसका दूसरा उल्लेख **1526** ई. में मिलता है, जब हुमायूँ ने आगरा में रुके ग्वालियर के विक्रमजीत के परिवार से कोहिनूर प्राप्त कर बाबर को दे दिया जिसे बाबर ने पुनः उसे ही दे दिया।
>
> (3) शाहजहाँ को मीर जुमला ने कोहिनूर हीरा दिया जिसे उसने मयूर सिंहासन में लगवाया था।
>
> (4) 1739 ई. में **नादिरशाह** मयूर सिंहासन ईरान लेता गया वहीं इसे कोहिनूर नाम मिला।
>
> (5) 1813 ई. रणजीत सिंह को विस्थापित अफगान शासक **शाहशुजा** ने लाहौर में **कोहिनूर** भेंट किया। मार्च 1849 ई. में अंग्रेजों का पंजाब पर अधिकार हो गया। अन्तिम शासक दलीपसिंह ने कोहिनूर इंग्लैण्ड की महारानी को दे दिया।

(4) **पुर्तगाली**– अब्दुल हमीद लाहौरी के अनुसार, "1632 ई. में मुगल सूबेदार **कासिम अली खाँ** ने बंगाल में पुर्तगालियों को हरा-कर उनके मुख्य **अड्डे हुगली पर अधिकार कर लिया।**" पुर्तगालियों के दमन का कारण धार्मिक एवं राजनीतिक दोनों था। ... पुर्तगालियों ने नमक के व्यापार पर एकाधिकार कर लिया था। दूसरे वे लोगों को जबरन ईसाई बनाते थे। तीसरे उसका पुर्तगालियों से व्यक्तिगत झगड़ा भी था। क्योंकि, विद्रोही शाहजहाँ बंगाल में जाकर पुर्तगालियों से एक बार मदद मांगी जो कि नहीं मिली थी। बताया जाता है कि पुर्तगालियों पर आक्रमण करने के लिए उसे मुमताज महल ने भी प्रेरित किया था।

(5) मालवा में खाता खेड़ी के **भागीरथ** नामक भील ने विद्रोह कर दिया जिसे मालवा के सूबेदार नसीरी खाँ ने दबा दिया। इसके पश्चात् छोटा नागपुर के **राजा प्रताप** के विद्रोह का दमन किया गया।

(6) नूरपुर के जमींदार **जगतसिंह** ने विद्रोह किया। वह राणा वसु का पुत्र था। जगतसिंह पराजित हुआ और शाहजहाँ ने उसे क्षमा कर दिया।

(7) **सिख**– शाहजहाँ के समय सिखों के छठे गुरु **हरगोविन्द** (1606-1645) थे। हरगोविन्द को जहाँगीर ने ग्वालियर दुर्ग में कुछ वर्ष बन्दी बनाकर रखा था। जब उनका जहाँगीर से **अच्छे संबंध** बन गये तो उन्हें शाही सेवा में ले लिया गया। लेकिन, जब शाहजहाँ बादशाह बना तो इन दोनों के बीच संबंध बिगड़ने शुरु हो गये। गुरु हरगोविन्द एवं शाहजहाँ के बीच करतारपुर में युद्ध हुआ था।

(8) **जसरूप मथिया**– इसने भरे दरबार में शाहजहाँ के वध करने का विफल प्रयास किया था।

Scanned with CamScanner

अभियान

शाहजहाँ ने 1631 ई. में अहमदनगर के विरुद्ध सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से **शेख मुइनुद्दीन** को दूत बनाकर बीजापुर भेजा था। उसने **शाह अली बेग** को इसी समय दूत बनाकर गोलकुण्डा भेजा और अब्दुल्ला कुतुबशाह से कुछ हीरों की मांग की थी। परन्तु, दोनों दूत असफल रहे।

अहमदनगर विजय (1633)– यहाँ के शासक मुर्तजा निजामशाह जिसे लोग **दीवाना** कहते थे की हत्या फतह खाँ ने कर हुसैन निजामशाह को सुल्तान बना दिया। विजयनगर के भूतपूर्व शासक **रायल ने** शाहजहाँ से दक्कन के मामले में हस्तक्षेप की मांग की थी। शाहजहाँ ने महावत खाँ को भेजा और स्वयं दक्षिण के **बुरहानपुर** में 1630 ई. में अपना पड़ाव डाला। यहीं पर दो वर्षों तक उसने विद्रोही खानजहाँ लोदी एवं अहमदनगर के शासक के विरुद्ध सैनक कार्यवाहियों का मार्गदर्शन किया। उसने अहमदनगर के वजीर फतह खाँ को घूस देकर दौलताबाद के दुर्ग को पा लिया। वस्तुतः दौलताबाद के दुर्ग का पतन अहमदनगर राज्य का पतन था। सुल्तान हुसैन निजामशाह को बन्दी बनाकर ग्वालियर के दुर्ग में भेज दिया गया। 1634 ई. में महावत खाँ की मृत्यु हो गयी। इसके कारण शाहजहाँ को 1635-36 में दूसरी बार दक्षिण आना पड़ा। इस बार उसके साथ 18 वर्षीय औरंगजेब भी था। इसी समय शाहजी भोंसले ने अहमदनगर में एक कठपुतली निजाम बनाकर उसका संरक्षक बन बैठा। उसने **शाहगढ़** को नये सुल्तान की राजधानी बनायी। मुगल सेना ने शाहजी भोंसले को पराजित किया और महोली के किले में नजरबन्द कर दिया। अन्त में उसने अहमदनगर के 6 दुर्ग मुगलों को सौंपकर समझौता कर लिया। शाहजहाँ ने शहजादा मुराद के अनुरोध पर शाहजी को 5000 का मनसब और पूना क्षेत्र में एक जागीर दे दी। बाद में उसने शाहजी को बीजापुर के सुल्तान की सेवा में शामिल होने की भी अनुमति दे दी।

1636 ई. के पश्चात शाहजहाँ की दक्षिण नीति काफी हद तक सफल रही। दूसरे शाहजहाँ ने स्वयं काफी समय दक्षिण में व्यतीत किया था इसलिए उसे दक्षिण का व्यक्तिगत अनुभव भी प्राप्त था। एक राजकुमार के रूप में शाहजहाँ के जीवन का सर्वाधिक उपयोगी काल दक्षिण में ही बीता था। 1636 ई. में शाहजहाँ ने शेख अब्दुल लतीफ को एक पत्र के साथ गोलकुण्डा भेजा था। इसी समय उसने तीन सेनापतियों खानेजमाँ, खानेजहाँ एवं खानेदौराँ को तीन ओर से बीजापुर पर आक्रमण करने का आदेश दिया। लेकिन, **1636** ई.में शाहजहाँ ने दक्षिण की शेष बची दोनों शक्तियों बीजापुर एवं गोलकुण्डा से **ऐतिहासिक संधि** कर ली। संधि के तहत इन दोनों राज्यों को सुदूर दक्षिण तक प्रादेशिक विस्तार की छूट प्राप्त हुई। जो भी नया प्रदेश वे यहां जीतेंगे वह बीजापुर एवं गोलकुण्डा के बीच **2:1** में विभक्त होगा। इस संधि में शाहजहाँ ने यह भी वादा किया कि वह बीजापुर एवं गोलकुण्डा कभी नहीं जीतेगा। कुरान की शपथ दिलाकर शाहजहाँ ने गोलकुण्डा से एक अलग समझौता यह भी किया कि वह खुतबे से शाह-ए-ईरान का नाम निकालकर शाहजहाँ का डाले और वह सदैव मुगलों के प्रति निष्ठावान बना रहेगा। 1656 ई. में इसी अब्दुल्ला कुतुबशाह ने अपनी माता को शहजादा औरंगजेब के पास संधि करने हेतु भेजा। उसने रंगीर का जिला दिया और अपनी पुत्री का विवाह औरंगजेब के पुत्र शहजाद मुहम्मद सुल्तान से कर दिया। महत्वपूर्ण है कि इस विवाह में शहजादा स्वयं उपस्थित न था। इसके पश्चात् 1657 ई. में बीजापुर के सुल्तान से संधि हुई। संधि के तहत उसने **बीदर, कल्याणी** एवं **परेन्दा** मुगलों को सौंप दिया। जब 1652 ई. में औरंगजेब को दूसरी बार दक्षिण का सूबेदार बनाया गया तो उसके साथ पारसी **मुर्शिदकुली खाँ** को दक्षिण का दीवान नियुक्त किया गया। मूल रूप से मुर्शिद कुली खाँ, अली मर्दान खाँ का साथी था। वह अलिमर्दान खाँ के साथ ही आकर भारत में बस गया था। औरंगजेब एवं मुर्शिद ने सम्मिलित रूप से दक्षिण की भू-राजस्व व्यवस्था को सुधारा। दक्षिण में मुर्शिद कुली की मालगुजारी सम्बन्धी बन्दोबस्त **मुर्शिद कुली खाँ की धारा** कहलायी। मुर्शिदकुली खाँ को **दक्षिण का टोडरमल** कहा जाता है। क्योंकि, उसने यहाँ टोडरमल की पैमाइश तथा कर निर्धारण प्रणाली को लागू किया था।

छोटा तिब्बत– शाहजहाँ के समय में जफर खाँ द्वारा जीता गया।

1634 एवं 1637 ई. में दो हमलों द्वारा **वृहत्तर तिब्बत** अर्थात **बाल्टिस्तान** की राजधानी स्कर्दू पर नियंत्रण स्थापित कर लिया गया। शाहजहाँ का असम के अहोम शासकों से भी संघर्ष हुआ था। कूच बिहार के शासक के नियंत्रण पर मुगलों

Scanned with CamScanner

...सम में प्रवेश किया। शाहजहाँ ने कामरुप के शासक बलिनारायण को 1638 ई. में पराजित किया था। 1638 की संधि ...बार नदी अहोमों एवं मुगलों के बीच की सीमा मान ली गयी। **गुवाहाटी** मुगलों के नियंत्रण में आ गया। 1654 में **कुमायूँ** 1656 ई. में **गढ़वाल** ने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली।

कन्धार– भारत एवं ईरान (फारस) के बीच झगड़ा का सबसे बड़ा कारण कन्धार का दुर्ग था। कन्धार को **भारत का** ...द्वार कहा जाता था। अफगानिस्तान में भारत प्रवेश के उसके दो द्वार काबुल एवं कंधार थे। सर्वप्रथम 1507 ई. में बाबर ...र्गुनियों से कन्धार जीता परन्तु यह शीघ्र ही उसके हाथ से निकल गया। इसके पश्चात् उसने 1522 में कन्धार फारसी सूबेदार ...म अब्दुल बाकी को घूस देकर पा लिया। इस समय फारस का शासक **शाह इस्माइल** सफावी था। सफावी स्वयं को सूफी ...पैगम्बर का वंशज बताते थे। बाबर ने कन्धार कामरान को सौंप दिया। बाबर की बहन खानजादा बेगम फारसियों द्वारा कैद ...ली गयी थी, लेकिन शाह ने उसे सम्मानपूर्वक बाबर के पास भेजवा दिया। इसी समय उजबेकों के खिलाफ मुगल-सफावी ...त्री की नींव पड़ी। हुमायूँ ने ईरान के शाह तहमास्प की मदद से इसे जीता परन्तु उसे न सौंपकर अपने पास रख लिया। 1558 ...में अकबर के काल में कन्धार पुनः निकल गया। **1595** ई. में अकबर ने इसे पुनः मुगल साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया। ...तु **1622** ई. में ईरान के **शाह अब्बास प्रथम** (1587-1629 ई.) ने इसे फिर हस्तगत कर लिया। शाह अब्बास प्रथम ...मृत्यु के बाद साममिर्जा **शाह सफी** (1629-1642) शासक बना। वह शाहजहाँ को अपना **चाचा** कहता था। शाहजहाँ समय-...समय पर उसे सलाह भी देता था। 1639 ई. में ईरान के सूबेदार **अली मर्दान खाँ** ने स्वेच्छा से कन्धार का दुर्ग मुगलों को सौंपकर ...गल सेवा में भर्ती हो गया। उसे पहले कश्मीर का फिर पंजाब का सूबेदार बनाया गया। 1642 ई. में **शाहअब्बास द्वितीय** फारस ...का शासक बना। उसने **1649** ई. में सदा के लिए कन्धार मुगलों से विजित कर लिया। हालांकि शाहजहाँ एवं शाहअब्बास द्वितीय ...के बीच राजदूतों **(एल्ची या साफिर)** का आदान-प्रदान होता रहा। ईरान से बेहरी बेग भारत आया तो शाहजहाँ ने मीर बरका ...को फारस भेजा। कन्धार पुनः प्राप्त करने के लिए शाहजहाँ ने कुल तीन अभियान भेजा। इनमें से पहला (1649) एवं दूसरा (1652) ...अभियान औरंगजेब के नेतृत्व में हुआ। तीसरे अभियान (1653) का नेता दाराशिकोह था जिसे इसी समय शाहजहाँ ने 'शाह बुलन्द ...इकबाल' की उपाधि दी थी। इसी समय दारा ने घोषणा की,'' **जो कोई अब तक न कर सका वह मैं करके दिखाऊँगा सात ...दिनों के भीतर कन्धार जीत लूंगा।''** हालांकि तीनों अभियान असफल रहे।

मध्य-एशिया अभियान (1646)– सतीश चन्द्र महोदय के अनुसार जो कि मान्य मत भी है, ''शाहजहाँ का मध्य एशिया ...के बल्ख (नगरों की जननी) एवं **बदख्शाँ** (अरब दिरगम) पर आक्रमण करने का एकमात्र उद्देश्य यही था कि **वह यहाँ मित्र ...शासकों को रखना चाहता था।** वहीं आर्शीवादी लाल श्रीवास्तव महोदय का मत है कि वह अपने पूर्वजों की मातृभूमि ट्रान्स ...आक्सीयाना पर अधिकार स्थापित करना चाहता था। अब्दुल हमीद लाहौरी के अनुसार, ''बल्ख एवं बदख्शाँ शाहजहाँ के खानदान ...के पुश्तैनी राज्य तो थे ही तथा उसके महान पूर्वज तैमूर का घर और राजधानी प्राप्त करने की कुंजियाँ थे।'' हालांकि यह सही ...नहीं है क्योंकि अकबर से लेकर औरंगजेब तक मुगल विदेश नीति का सर्वेक्षण करें तो उन सभी शासकों की विदेश नीति मुख्यतः ...भारत केन्द्रित थी, और उसका सबसे बड़ा सरोकार भारत की सुरक्षा थी ना कि समरकंद की प्राप्ति। मुगल बादशाहों में केवल ...बाबर ही ऐसा था जिसकी समरकंद जीतने की हार्दिक इच्छा रही। भारत में विजयोपरान्त बाबर समरकंद के तैमूरों की धन से ...सहायता करता था। पानीपत में विजय के पश्चात् बाबर ने हुमायूँ को बदख्शाँ भेजा ताकि वह बल्ख एवं समरकंद विजित कर ...ले। परन्तु, हुमायूँ केवल हिसार ही जीत सका इसीलिए उसने अभियान दल को वापस बुला लिया और तब तक के लिए अभियान ...को स्थगित कर दिया जब तक वह स्वयं उसका नेतृत्व करने की स्थिति में न हो। इसके पश्चात् उसकी मृत्यु हो गयी।

शाहजहाँ के बल्ख अभियान को मुगल विदेश नीति की पराकाष्ठा मानी गयी है। इस समय बल्ख एवं बदख्शाँ बुखारा के ...उजबेग शासक **नजर मुहम्मद खान** के राज्य का भाग था। जबकि समरकन्द की गद्दी पर इमाम कुली राज्य करता था। बल्ख ...को, मुराद ने जीत लिया परन्तु वह वापस चला आया। शाहजहाँ ने बल्ख में सिक्के चालू करवाकर उत्सव मनवाया। उसके पश्चात् ...प्रधानमंत्री सादुल्ला खान गया तथा उसकी सिफारिश पर **औरंगजेब** को भेजा गया। शाहजहाँ स्वयं काबुल में रुका ताकि सैन्य ...संचालन पर नियंत्रण रख सके। परन्तु औरंगजेब भी असफल होकर लौटा। अतः मध्य-एशिया पर नियन्त्रण स्थापित करने का ...शाहजहाँ का प्रयत्न असफल रहा। सर यदुनाथ सरकार के अनुसार, ''बल्ख में शाहजहाँ के मूर्खतापूर्ण युद्ध का अन्त हुआ। ...यही वह भयंकर मूल्य है, जो आक्रामक साम्राज्यवाद भारत से उत्तर के पार के युद्धों के लिए चुकाता है।'' खुद समकालीन लाहौरी ...का भी मत है कि बदख्शां के संसाधन एक बड़े मुगल सरदार के वेतन के लिए भी पर्याप्त नहीं थे।

Scanned with CamScanner

शाहजहाँ की धार्मिक नीति– इसकी धार्मिक नीति को मोटे तौर पर दो चरणों में बाँटकर देख सकते हैं। प्रथम चरण में वह एक कट्टर मुसलमान शासक नजर आता है–

(1) शाहजहाँ ने हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिए **पृथक विभाग** बनाया। ऐसे धर्मान्तरण के पश्चात भी उस व्यक्ति का अपने पिता की सम्पत्ति पर अधिकार बना रहेगा। हिन्दुओं को मुसलमानी ढंग से वस्त्र पहनने पर रोक लगा दिया।

(2) **इलाही** संवत के स्थान पर हिजरी संवत चलाया। सम्राट के चित्र पर पगड़ी लगाने की मनाही कर दी।

(3) शाहजहाँ ने कश्मीर में हिन्दुओं एवं मुसलमानों के बीच विवाह पर रोक लगा दिया।

(4) युद्ध बन्दियों को मुसलमान बनाने की प्रथा पुनः प्रारम्भ की तथा 1633 ई. से नये मंदिरों के निर्माण पर रोक लगा दिया।

(5) शाहजहाँ ने सूफी एवं अन्य धर्मतत्वज्ञों को सिजदा न करने की छूट दी थी। अन्त में 1636 ई. में सिजदा एवं पैबोस को खत्म किया क्योंकि यह गैर-इस्लामिक प्रथा थी। उसने इसके स्थान पर **चहार-तस्लीम** की प्रथा शुरु की।

(6) शाहजहाँ ने इसी चरण में स्वयं को **इस्लाम का रक्षक** घोषित किया और प्रशासन में मुसलमानों को प्राथमिकता दी। यही कारण है कि समकालीन इतिहासकारों ने शाहजहाँ को **इस्लाम का मुजहिद** (नवसंस्कारकर्त्ता) एवं **शरीयत का स्तम्भ** बताया।

लेकिन, शाहजहाँ की धार्मिक नीति हिन्दू विरोध नीति नहीं थी। यद्यपि इसमें इस्लाम के प्रति अधिक आस्था अवश्य प्रकट की गयी थी। आगे चलकर वह दारा एवं जहाँआरा के प्रभाव से धार्मिक नीति के द्वितीय चरण (उदारता) की ओर मुड़ गया था। **सरस्वती** उपाधि धारक **कविन्द्राचार्य** ने शाहजहाँ से बनारस एवं इलाहाबाद में तीर्थयात्रा कर समाप्त करवाया। उसने पंजाब एवं कश्मीर के हिन्दू-मुसलमानों को **विवाह कर** से मुक्त कर दिया। दक्षिण पर चढ़ाई के समय शाहजहाँ ने शराब चम्बल में फेंकवा दिया और सोने एवं चाँदी के शराब के प्यालों को तुड़वाकर दीन-दुःखियों में बंटवा दिया। बाबर की तरह उसने भी शराब न पीने की प्रतिज्ञा की हालांकि इस प्रतिज्ञा पर वह कभी अटल नहीं रहा। मंदिरों में समय-सूचक घड़ियाल बजाने की छूट दी। उसने **शांतिदास** को जैनियों के लिए पोशाला (विश्राम गृह) बनवाने के लिए भूमिदान दिया।

शाहजहाँ : स्वर्णयुग

शाहजहाँ का काल मुगल काल का स्वर्णयुग था या नहीं; इस पर इतिहासकारों के बीच मतैक्य नहीं है। **एल्फिन्सटन, मोरलैण्ड, खफी खाँन, राय भारमल** एवं **ट्रेवर्नियर** आदि आधुनिक एवं समकालीन विद्वानों ने उसके युग को स्वर्णयुग का दर्जा दिया है। शाहजहाँ के समकालीन लुब्ब-बुत-तवारीखे हिन्द के लेखक वृन्दावन के अनुसार, "गत शासनकाल में जो व्यय होता था वह इस समय का चौथाई भी नहीं था। फिर भी बादशाह के पास इतना धन-संग्रह हो गया था जितना उसके पूर्वज वर्षों में भी एकत्र नहीं कर सकते थे।" लुब्ब-अत-तवारीख का लेखक भारमल लिखता है कि, "जिन परगनों से अकबर के शासन काल में तीन लाख की आय होती थी उससे अब दस लाख वसूल होता है।" खफी खाँ के अनुसार, "भले ही अकबर महान विजेता तथा व्यवस्थापक था किन्तु अपने देश की व्यवस्था, वित्त प्रबन्ध तथा प्रत्येक विभाग के सम्यक संचालन की दृष्टि से उसकी तुलना शाहजहाँ से नहीं हो सकती।" **एल्फिन्सटन तो शाहजहाँ के काल को सम्पूर्ण भारतीय इतिहास में सर्वाधिक समृद्धि का काल मानता है। उनके अनुसार, "शाहजहाँ जैसा महान प्रतापी सम्राट पहले कभी पैदा नहीं हुआ था।"** डा. एस. आर. शर्मा ने स्पष्टतया उसके काल को मुगल काल का स्वर्णयुग माना है। मनूची ने उसकी न्याय-व्यवस्था को निष्पक्ष मानते हुए प्रशंसा की है। दूसरी तरफ इतिहासकारों का एक ऐसा वर्ग भी है जो शाहजहाँ के स्वर्णयुग को एक भ्रम (Mith) करार देते हैं। इसमें इतिहासकार **स्मिथ, एडवर्ड एवं गैरट** तथा **सर विलियम फोरर्सटर** प्रमुख है। लेनपूल ने तो अकबर के काल को ही 'मुगल साम्राज्य का स्वर्ण युग' माना है। शाहजहाँ के सबसे बड़े आलोचक **स्मिथ** के अनुसार, "शाहजहाँ मनुष्य एवं शासक, दोनों ही रुपों में असफल रहा था।" इतिहासकारों का ऐसा वर्ग भी है जो इन दोनों मतों के बीच एक सन्तुलित दृष्टिकोण ले के चलते हैं। इसमें सर यदुनाथ सरकार एवं डा. ए.एल. श्रीवास्तव को सम्मिलित किया जा सकता है। श्रीवास्तव महोदय का मत है कि, "शाहजहाँ का शासन काल मुगल इतिहास का स्वर्णयुग नहीं था लेकिन, कला और कला में भी वास्तुकला के संदर्भ में स्वर्णयुग था।" महत्वपूर्ण है कि यही मत स्वीकार्य भी है। यदुनाथ सरकार ने भी स्वर्णयुग स्वीकार किया है लेकिन इसी के साथ वह यह भी लिखते है कि, "शाहजहाँ के शासन काल में मुगलवंश की अवनति का बीजारोपण हो चुका था। समृद्धि के पीछे पतन के बीज थे।"

Scanned with CamScanner

उत्तराधिकार युद्ध

शाहजहाँ की मुमताज से **कुल 14** संतान उत्पन्न हुए थे। इनमें से सात जीवित रहें जिनका विवरण निम्नलिखित हैं–

दाराशिकोह : उपाधि– संस्कृत-ए-कलन्दर; शाहबुलन्द इकबाल। स्टेनले लेनपूल ने इसे **लघु अकबर** कहा है। दाराशिकोह को उसके विरोधियों ने **रईसुल मुलहिद** (धर्मद्रोहियों का सरदार) तथा **दुश्मनेदीनेमुबाइन** कहा। शाहजहाँ ने दारा को अपना उत्तराधिकारी (वली अहद) घोषित कर दिया था।

1615 ई. में दारा का जन्म अजमेर के **तारागढ़** दुर्ग में हुआ था। औरंगजेब से पराजित होने के पश्चात् दारा ने तारागढ़ दुर्ग में ही शरण लिया था। दाराशिकोह को मुगल साम्राज्य की सबसे बड़ी 60,000 जात एवं 40,000 सवार की मनसबदारी दी गयी। वह पहले इलाहाबाद तदुपरांत पंजाब (लाहौर) का सूबेदार बना। परन्तु, दारा हमेशा शाहजहाँ के निकट रहता था। 1654 ई. में उसे 'सुल्तान बुलंद इकबाल' की उपाधि एवं शाहजहाँ के बगल में बैठने के लिए 'सुनहला आसन' प्रदान किया गया। उसकी पत्नी **नादिराबेगम** एवं पुत्र **सुलेमान शिकोह** था। **जानी बेगम** दारा की पुत्री थी जिसे जहाँआरा ने अपनी पुत्री की तरह पाला था। दारा की कब्र देखकर विलियम स्लीमैन ने उचित ही कहा था, "यदि वह राजसिंहासन पर बैठने के लिए जीवित रहता तो देश का स्वरुप तथा उसके साथ-साथ भारत का भाग्य भिन्न होता।" (विस्तृत अध्ययन हेतु देखें पेज 171)

शाहशुजाँ– शाहजहाँ का द्वितीय पुत्र था जो कि **बंगाल का** सूबेदार था और धार्मिक दृष्टि से शिया था। महत्वपूर्ण है कि उत्तराधिकार युद्ध में सर्वप्रथम शाहशुजा ने स्वयं को तत्कालीन राजधानी राजमहल में बादशाह घोषित किया और अपने सिर पर ताज रख लिया था।

औरंगजेब– शाहजहाँ का तृतीय पुत्र एवं छठवीं संतान था। उत्तराधिकार युद्ध शुरु होने के समय वह दक्षिण का **सूबेदार** था। उसका सहायक मीर जुमला था जिसे औरंगजेब अपना गुरु कहता था। औरंगजेब ने एक चाल के तहत मीरजुमला (जो कि इस समय तोपखाने एवं युद्ध सामग्री का प्रमुख था) को गिरफ्तार कर लिया। उत्तराधिकार युद्ध आरम्भ होने से पूर्व औरंगजेब ने नक्शबंदी सिलसिले के **शेख बुरहानुद्दीन** एवं शेख अब्दुल लतीफ जैसे संतों से आशीर्वाद लिया। मार्च 1658 ई. को बुरहानपुर से वह उत्तर की ओर चला। **उसने स्वयं को बादशाह घोषित नहीं किया अपितु आगरा जाने का उद्देश्य बिमार पिता के दर्शन की इच्छा बताया।** दारा एवं शाहजहाँ औरंगजेब को पाखंडी तो औरंगजेब दारा को 'विधर्मी' कहता था।

मुराद– शाहजहाँ का सबसे छोटा पुत्र था। 1624 ई. में उसका जन्म रोहतास में हुआ था। वह गुजरात का सूबेदार था। उसकी उपाधि **कुलकलंक** एवं बेवकूफ राजनीतिज्ञ की थी। उत्तराधिकार का युद्ध औरंगजेब के साथ गठबन्धन बनाकर लड़ा। बर्नियर के अनुसार, "दारा को हराने के बाद मुराद को पूरा राज्य देकर स्वयं फकीर बनने तथा मक्का जाने का औरंगजेब ने वादा किया।" अतः मालवा में उसने औरंगजेब से संधि कर ली थी। उसने स्वयं को बादशाह घोषित कर अपने दीवान अलीनकी की हत्या कर दी थी।

पुत्रियाँ : जहाँआरा

उपनाम – मख्फी (गुप्त)

उपाधि – साहिबा-तुज-जमानी

शाहजहाँ की जीवित सन्तानों में सबसे ज्येष्ठ यही थी। उसका जन्म 1614 ई. को अजमेर में हुआ था। यह कवियत्री थी जो कि मख्फी नाम से कविताएँ लिखती थी। जहाँआरा को **सूरत** से राजस्व प्राप्त होता था। 1645 ई. में वह बुरी तरह से जल गयी अन्त में आरिफ नामक दास के द्वारा बनायी गयी मलहम से ही वह ठीक हुई। जहाँआरा, दाराशिकोह की चहेती बहन थी। शाहजहाँ ने उसको **साम्राज्य की प्रथम महिला** का खिताब दिया जिसे औरंगजेब ने भी बरकरार रखा। वह स्वेच्छा से अपने पिता के साथ कैद में रही। औरंगजेब ने भी उसकी इस इच्छा का सम्मान किया। औरंगजेब द्वारा लगाये गये जजिया का विरोध जहाँआरा ने किया था। यह एक सूफी महिला और कादिरिया सिलसिले के मियां मीर एवं मुल्ला शाह बदख्शी की शिष्या थी। उसने अनेक चिश्ती सूफियों के जीवन वृत्त को लिखा था। जनवरी 1681 ई. में जहाँआरा की मृत्यु हुई। औरंगजेब ने मृत्योपरान्त उसे साहिबा-तुज-जमानी की उपाधि दी। जहाँआरा बेगम को निजामुद्दीन औलिया के मकबरे में दफनाया गया था।

Scanned with CamScanner

रोशनआरा एवं गौहनआरा– अन्य पुत्रियाँ थी जो कि क्रमशः औरंगजेब एवं मुराद को सुल्तान बनाना चाहती थीं। रोशनआरा आगरा में औरंगजेब के लिए गुप्तचरी किया तो वहीं गौहन आरा मुराद की जासूस थी।

उत्तराधिकार का युद्ध– बर्नियर का कथन है कि "मुगल देश का आदर्श था कि राजत्व रक्त सम्बन्ध का आदर न करता। वे भाई जो इस समय एक-दूसरे के विरुद्ध घातक संघर्ष में रत थे का नारा था– तख्त या तख्ता; सिंहासन या कफन।" सितम्बर 1657 ई. में शाहजहाँ के बीमार पड़ते ही उसके पुत्र जो कि एक ही माँ की सन्तान थे भातृघातक युद्ध की तैयारी करने लगे। कुल 5 युद्ध क्रमशः हुए– बहादुरपुर युद्ध, धरमत युद्ध, सामूगढ़ युद्ध, खजुवा युद्ध और देवराई युद्ध। इनमें से **सामूगढ़ का युद्ध निर्णायक सिद्ध हुआ।** इस समय चारों भाईयों की अवस्था-दाराशिकोह (43 वर्ष), शाहशुजा (41 वर्ष), औरंगजेब (39 वर्ष) एवं मुराद (33 वर्ष)।

बहादुरपुर युद्ध

तिथि– फरवरी 1658

शाहशुजा ने बनारस के पास दाराशिकोह के प्रतिनिधि मिर्जा राजा जयसिंह एवं सुलेमान शिकोह से बहादुरपुर का युद्ध किया। शाहशुजा पराजित हुआ और बंगाल वापस चला गया।

धरमत युद्ध

तिथि– अप्रैल 1658

औरंगजेब एवं मुराद ने उज्जैन के पास धरमत में दाराशिकोह के प्रतिनिधि जसवन्तसिंह एवं कासिम खाँ को हरा दिया।धरमत विजय की स्मृति में औरंगजेब ने **फतेहाबाद** नगर की स्थापना की। इसी धरमत युद्ध में जसवन्त सिंह ने मुगल शिविर को लूटा और युद्ध के बीच से ही जोधपुर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने किले में घुसने नहीं दिया।

सामूगढ़ युद्ध

तिथि– 8 जून 1658

आगरा के पास हुए सामूगढ़ युद्ध में दाराशिकोह युद्ध हेतु खुद उपस्थित हुआ। परन्तु, वह औरंगजेब एवं मुराद की सम्मिलित सेना से हार गया। इसी युद्ध में दारा के बांये भाग का सेनापति रुस्तम खाँ मारा गया। औरंगजेब ने तुरन्त आगरा किले पर अधिकार किया और अपने सहयोगी भाई मुराद की हत्या करवा दी। तदुपरान्त 21 जुलाई, 1658 ई. को उसने दिल्ली पर अधिकार कर स्वयं को बादशाह घोषित कर दिया।

खजुवा युद्ध

तिथि– जनवरी 1659

इलाहाबाद के पास हुए खजुवा युद्ध में औरंगजेब, मीर जुमला एवं जसवन्त सिंह ने शाहशुजा को हरा दिया। शाहशुजा भागकर अराकान पहुँचा जहाँ अराकानियों ने उसकी हत्या कर दी।इस युद्ध में जसवन्त सिंह ने औरंगजेब को धोखा दिया और मुगल शिविर लूटकर भाग गया।

देवराई युद्ध

तिथि– मार्च 1659

अजमेर के पास हुए देवराई युद्ध में दारा, औरंगजेब की सेना से हार गया। **उसे बोलन** दर्रे में एक अफगान सरदार ने धोखे से बंदी बना लिया। दारा को दिल्ली की सड़को पर नग्न करके घुमाया गया। **इस दृश्य** का प्रत्यक्षदर्शी बरनियर था। औरंगजेब ने एक **विशेष न्याय समिति** गठित की जिसने दारा को विधर्मी घोषित कर मृत्युदण्ड दे दिया।दारा के साथी सूफी शेख **सरमद** को भी मृत्युदण्ड दिया गया। **उसके पुत्र सुलेमान शिकोह जो कि गढ़वाल भाग गया था जहर देकर मरवा दिया गया।**

Scanned with CamScanner

शाहजहा का अन्य उपलब्धियाँ

(1) **लोक कल्याणकारी कार्य**– शाहजहाँ ने **रानी नहर** का निर्माण लाहौर तक करवाया। उसने अलीमर्दान खाँ से फिरोज तुगलक द्वारा निर्मित **नहर-ए-शाह** की मरम्मत करवाया और उसका नाम **नहर-ए-बहिश्त** रखा। **मोरलैण्ड** के अनुसार "**शाहजहाँ का युग किसानों के लिए शान्ति का युग था।**" शाहजहाँ को **कृषकों का हितैषी** माना गया है।

(2) गंगाधर एवं गंगालहरी के लेखक जगन्नाथ पण्डित शाहजहाँ के **राजकवि** थे।

(3) शाहजहाँ स्वयं बहुत अच्छा गायक था। वह फलित ज्योतिष में विश्वास रखता था।

(4) राज्याभिषेक के 20 वें वर्ष शाहजहाँ ने मनसबदारी व्यवस्था में सुधार करते हुए **सीसमाहा** एवं **सीमाहा** लागू किया।

(5) **भूमिकर** उसने **1/2 (50 प्रतिशत)** किया जिससे उसके काल में राज्य की आय बढ़कर **40** करोड़ रुपया प्रतिवर्ष हो गयी। शाहजहाँ ने जब्ती प्रथा को स्थगित कर दिया।

(6) शाहजहाँ के ही समय से लगान वसूलने के लिए भूमि **ठेके पर (इजारेदारी)** दिये जाने लगे। उसने साम्राज्य का 7/8 वाँ भाग इजारे में बाँट दिया तथा खालसा भूमि का क्षेत्र इसी अनुपात में घट गया था।

(7) जहाँगीर ने **बीकानेर** के उत्तराधिकार विषय में हस्तक्षेप किया था। शाहजहाँ के समय **जैसलमेर** में उत्तराधिकार का विवाद उठा था। शाहजहाँ ने जोधपुर (मारवाड़) में अमरसिंह के दावों को अनदेखा करके उसके छोटे भाई जसवन्त सिंह को टीका दे दिया था।

औरंगजेब आलमगीर (1658-1707 ई.)

- औरंगजेब का शाब्दिक अर्थ **ताज को सुशोभित करने वाला** होता है।

जन्म– 1618 ई.; उज्जैन के निकट **दोहद** में

मूल नाम– मुहीउद्दीन

उपाधि/उपनाम : बहादुर– पन्द्रह वर्ष की उम्र में औरंगजेब द्वारा सुधाकर एवं सुन्दर नामक हाथियों को नियंत्रित करने के कारण शाहजहाँ ने यह उपाधि दी।

आलमगीर– औरंगजेब की उपाधि थी।

शाही पोशाक में एक दरवेश– सादा रहन-सहन एवं शराब न पीने के कारण उसे शाही दरवेश कहा गया।

जिन्दा पीर– औरंगजेब इस्लामिक कानूनों का अक्षरक्षः पालन करता था इसीलिए उसे जिन्दा पीर कहा गया।

हाफिज– पहला एवं आखिरी बादशाह था जिसे सम्पूर्ण कुरान कण्ठस्थ था।

अबुल मुजफ्फर मुहिउद्दीन मुहम्मद औरंगजेब बहादुर आलमगीर बादशाह गाजी– राज्याभिषेक के अवसर पर यह उपाधि धारण की।

शिक्षक– मीर हाशिम गीलानी एवं अब्दुल लतीफ सुल्तानपुरी। वजीर सादुल्ला खाँ एवं मुल्ला शेख अहमद उसके अन्य शिक्षक थे। औरंगजेब बात-चीत में हिन्दी की लोकप्रिय कहावतों का प्रयोग करता था।

अनुयायी– औरंगजेब नक्शन्दी सिलसिले के मीर मासूम का शिष्य था।

विशेष– पहला मुगल बादशाह था जिसका **दो बार राज्याभिषेक** हुआ। प्रथम राज्याभिषेक जुलाई 1658 ई. को आगरा में एवं द्वितीय जिसे वास्तविक राज्याभिषेक माना जाता है दिल्ली में जून 1659 ई. को सम्पन्न हुआ। इस समय विभिन्न देशों के राजदूत जैसे ईरान, बुखारा, पुर्तगाली, फ्रांसीसी (बर्नियर), डच सरकारों के प्रतिनिधि आदि उपस्थित थे। शाहजहाँ सबका स्वागत कर रहा था और प्रत्येक को आठ हजार रुपया नगद भेंट किया। औरंगजेब ने आदेश दिया कि सभी सरकारी अभिलेखों में उसके शासन की शुरुआत 23 मई 1658 के प्रथम दिन से जोड़ी जाय।

औरंगजेब **40 वर्ष** की उम्र में चगताई परम्परा को तोड़ते हुए बादशाह बना, क्योंकि पिता अभी जीवित था। यही कारण है कि दिल्ली राज्याभिषेक के अवसर पर काजियों ने उसके सिर पर ताज रखने से मना कर दिया। अतः काजी **अब्दुल बहाब गुजराती** ने औरंगजेब के समर्थन में फतवा जारी कर उसके सिर पर ताज रख दिया। औरंगजेब ने उसे अपना प्रधान काजी एवं सद्र बनाया। वह उसका 'अति सम्मानित काजी' था। महत्वपूर्ण है कि यही वह काजी (सद्र) था जो चोरी-छुपे शराब पीता और अपना निजी व्यापार करता था। **सद्र अब्दुल बहाब ने ही गोलकुण्डा अभियान के समय औरंगजेब के खिलाफ फतवा जारी किया था।**

Scanned with CamScanner

औरंगजेब की धार्मिक नीति– **1663 ई.** में **तीर्थ यात्रा** कर लगाया एवं सती प्रथा पर रोक लगा दिया। शासन काल के 11वें वर्ष दरबार में गायन पर **प्रतिबंध** (1669 ई.) लगा दिया। लेकिन, वाद्य संगीत और नौबत के वादन पर कोई रोक नहीं लगाया था। सरकारी संगीतकारों की छुट्टी कर दी गयी। इसी समय संगीत का जनाजा दरबारियों ने निकाला था।

मनूची के अनुसार, "दरबार में संगीत का निषेध होते हुए भी औरंगजेब बेगमों एवं शहजादियों के लिए महल में संगीत एवं नृत्य होने देता था तथा इस आयोजन के लिए वह गायिकाओं और नर्तकियों की नियुक्ति करता था।" महत्वपूर्ण है कि औरंगजेब खुद **वीणा वादन** में निपुण था। भारतीय शास्त्रीय संगीत पर फारसी में सबसे अधिक पुस्तकें औरंगजेब के ही काल में लिखी गयी। अकबर द्वारा प्रारम्भ **झरोखा दर्शन** को 1669 ई. में तथा शासन काल के 12वें वर्ष (1670) में **तुलादान** को बन्द करवा दिया। लेकिन, सामाजिक जनमत के दबाव के फलस्वरूप उसे तुलादान मनाने की छूट देनी पड़ी। ज्योतिषियों को पंचांग तैयार करने से मना कर दिया गया। लेकिन, शाही परिवार का ऐसा कोई भी सदस्य नहीं था जिसने इस आदेश का उल्लंघन न किया हो। **मनूची** बतलाता है कि नर्त्तकियों एवं वेश्याओं को विवाह कर लेने या राज्य छोड़ देने की आज्ञा दी गयी। 1679 ई. में हिन्दू शासकों को टीका देने की प्रथा बन्द कर दिया। जबकि प्रशासन में **सर्वाधिक हिन्दू अधिकारी (33%)** इसी समय नियुक्त हुए थे। वहीं शाहजहाँ के काल में उनकी संख्या (25%) ही थी। औरंगजेब ने पेशकार एवं करोड़ी का पद मुसलमानों के लिए आरक्षित कर दिया। परन्तु, इस पद हेतु योग्य मुसलमानों की पर्याप्त संख्या न होने के कारण उसे सरदारों के दबाव में इस नियम में संशोधन करना पड़ा। लेकिन उसने हिंदू राजाओं एवं अन्य लोगों को नौकरी से निकालने से इनकार कर दिया। इसी औरंगजेब ने एक बार कहा था, **"दुनियाबी मामलों में धर्म का क्या लेना-देना?**

Scanned with CamScanner

धार्मिक आचारों को धर्मांधता से जोड़ने का क्या मतलब? आपके लिए (उलमा) आपका मजहब है, मेरे लिए मेरा।'' नियम बनाया कि राजपूत एवं मराठों को छोड़कर अन्य हिन्दू घोड़े एवं पालकी की सवारी नहीं करेंगे। **दरबार में होली, दशहरा एवं दीवाली मनाना बन्द करा दिया।** उसने हिन्दुओं को यमुना के किनारे और अहमदाबाद में साबरमती के किनारे मुर्दा जलाने की मनाही कर दी थी। 1665 ई. में व्यापार के क्षेत्र में विभेदक कर लगाया जैसे मुसलमानों पर 2.5% एवं हिन्दुओं पर 5% चुंगी कर आरोपित किया। 1667 ई. में उसने मुसलमानों को चुंगी कर से पूर्णतया मुक्त कर दिया था। परन्तु, जब उन्होंने हिन्दु व्यापारियों के समान को अपना बताकर लाभ लेना शुरू कर दिया तो औरंगजेब ने पुनः मुसलमानों पर ढाई प्रतिशत की चुंगी लगा दी। **उसने गुरुवार की रात को पीरों की मजारों पर दीये जलाने की प्रथा बन्द करा दिया।** किफायत के कदम के रूप में इतिहास लेखन विभाग बन्द करा दिया और 1671 ई. में बादशाह, शहजादों और बेगमों के खर्चों में कटौती कर दिया। **दरबारियों को रेशमी अंगरखें वस्त्र पहनने की मनाही कर दी।** 1669 ई. में मुहर्रम बन्द करवा दिया। मुस्तफाबाद में गर्म पानी के पवित्र चश्में को बन्द कर दिया था। 1670 ई. में अपना जन्मदिवस मनाना बन्द करवा दिया।

मन्दिर– 1661 से 1669 ई. के बीच अनेक मन्दिर तोड़े गये। सर्वप्रथम सोमनाथ मन्दिर क्षतिग्रस्त किया गया। इसके पश्चात् मथुरा के केशवराय मन्दिर, बनारस का विश्वनाथ मन्दिर तथा 1680 में अबूतुराव द्वारा जयपुर में मन्दिरों को तोड़ा गया। हालांकि मन्दिरों को तोड़ने का प्राथमिक उद्देश्य विद्रोहियों के मनोबल को नष्ट करना था। परन्तु, इसमें औरंगजेब की धार्मिक रूढ़िवादिता से भी इन्कार नहीं किया जा सकता।

जजिया

लागू करने की तिथि– शासन काल के 22वें वर्ष, 12 अप्रैल 1679 ई. को जजिया लगाया

सर्वप्रथम लागू– जजिया सबसे पहले **मारवाड़** में लागू किया गया जिसे औरंगजेब ने **दारूल हर्ब** घोषित किया था। मेवाड़ ने जजिया के बदले 3 जिला (**माण्डल, वेदनौर** एवं **आदलपुर** या पुर) दिया था। **जहाँआरा बेगम ने औरंगजेब द्वारा जजिया लगाने का विरोध किया था।** जजिया की वसूली के लिए गैर-मुसलमानों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया– प्रथम श्रेणी के लिए 48 दिरहम (13 रुपया), द्वितीय श्रेणी के लिए 24 दिरहम (6 रुपया) तथा तृतीय श्रेणी के लिए 12 दिरहम (3 रुपया) निश्चित किया गया।

लगाने का कारण– समकालीन इतिहासकार ईश्वरदास नगर एवं साकी मुस्ताद ने लगाने का कारण हिन्दुओं का उत्पीड़न करना बताया है। वहीं **मनूची** आरोपित करने का मुख्य कारण रिक्त राजकोष को भरना बताता है। सर यदुनाथ सरकार ने इसके लगाये जाने का कारण हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करना बताया जबकि मनूची इसे दूसरा कारण मानता है। यदुनाथ का मत है कि औरंगजेब भारत को **दार-उल-हर्ब** (काफिरों का देश) से दार-उल-इस्लाम (मुसलमानों की भूमि) में परिवर्तित करना चाहता था। महत्वपूर्ण है कि यही मत खफी खाँ एवं मामूरी का भी था। **डा. सतीश चन्द्र महोदय का मत है कि ''जजिया का पुनः आरोपण गहराते हुए राजनीतिक संकट का सूचक था, विशेष कर दक्कन में बिगड़ते हुए हालात की वजह से।''** मनूची के अनुसार, ''व्यापारियों को जजिया प्रमाणपत्र साथ लेके चलना पड़ता था।'' औरंगजेब ने 'जजिया कोष' का निर्माण किया। जजिया से प्राप्त राशी इसमें रखी जाती थी। यह राशि उलेमाओं हेतु आरक्षित थी जिनमें इस समय काफी बेरोजगारी व्याप्त थी। इसीलिए ऐसा कहा जाता है कि जजिया उलेमाओं को दी गयी रिश्वत थी।

मूल्यांकन– औरंगजेब की धार्मिक पहलुओं पर इतिहासकारों ने पर्याप्त प्रकाश नहीं डाला है। वस्तुतः सिक्के का एक दूसरा पहलू भी था- औरंगजेब ने **पंथ भारती** (राजस्थान के सिवाना में), उज्जैन के **महाकाल मन्दिर,** देहरादून में गुरु **रामदास के गुरुद्वारे,** चित्रकूट के मन्दिरों, इलाहाबाद के मन्दिरों तथा **जखाबार के जोगियों** को प्रचूर मात्रा में राजस्व मुक्त भू-अनुदान दिया था। **वह हिन्दू बैरागी शिवमंगल दास महाराज का तत्त्व मीमांशा पर प्रवचन सुनने जाता था।** पंथ भारती के विषय में उसका मत था कि चूंकि वह यात्रियों को भोजन देता है इसलिए वह पूजा करने का अधिकारी है। उसने 1688-89 ई. में हैदराबाद की जजिया एक वर्ष हेतु तथा ईश्वरदास के अनुसार 1704 ई. में अकाल के कारण पूरे दशक की जजिया माफ कर दिया। औरंगजेब ने मक्का में धन भेजना बन्द करा दिया। क्योंकि उसका कथन था कि ''खुदा का नूर हर मुल्क में मौजूद है इसलिए वह पैसा भारत में ही वितरित किया जाय।''

Scanned with CamScanner

लेनपूल का यह मत सत्य नहीं है कि औरंगजेब धर्म के लिए अपना राजसिंहासन भी छोड़ने को तैयार था। अपितु यह सत्य है कि वह राजसिंहान के लिए राजनीति में धर्म का प्रयोग करने को तैयार था, और उसने किया भी। ध्यान रहे कि धार्मिक कट्टरता का सहारा लेने वाला धर्मभीरू औरंगजेब नहीं अपितु चतुर राजनीतिज्ञ बादशाह औरंगजेब था। वस्तुतः धार्मिक कट्टरता राजनीतिक आवश्यकता भी थी जिसकी पृष्ठभूमि का निर्माण 1657-58 ई. के उत्तराधिकार युद्ध ने ही कर दिया था। सीधी बात है यदि धर्म के आधार पर आप राजनीति में आये हैं तो अपने सम्पूर्ण कालावधि में आप उसे नहीं छोड़ सकते। यहि बात औरंगजेब पर भी लागू होती है।

औरंगजेब के काल में होने वाले विद्रोह

मथुरा में जाटों का विद्रोह– जाटों की कबायली किस्म **छाप** कहलाती थी। बताया जाता है कि शाहजहाँ ने जाटों के दमन के लिए आलम खाँ एवं मिर्जा ईसा खाँ को नियुक्त किया था किन्तु दारा के प्रभाव के कारण उनका दमन न किया जा सका।

गोकुल- औरंगजेब की धार्मिक नीतियों के विरुद्ध पहला विद्रोह 1669 ई. में तिलपत के जमींदार गोकुल ने किया। उसे सतनामियों का भी समर्थन प्राप्त था। **1669** ई. में गोकुल ने **मथुरा** के सूबेदार अब्दुन्नबी का वध कर दिया। अब्दुन्नबी ने मथुरा में जामा मस्जिद का निर्माण करवाया था।

राजाराम एवं **रामचेहरा**– 1686 ई. में जाटों के विद्रोह का नेतृत्व सिनसिनी के जमींदार राजाराम ने किया। उसने सिकन्दरा में अकबर के कब्र की हड्डियों को निकालकर जला दिया। राजाराम ने मुगल सेनापति युगीर खाँ को हरा दिया। सिनसीनी एवं सोघी राजाराम के विद्रोह का मुख्य क्षेत्र था जहाँ मिट्टी के दुर्ग बनाए गये थे।

चूड़ामन– के विद्रोह का केन्द्र **थीम** (थूण) था। वह राजाराम के पश्चात जाट विद्रोह का नेता बना। औरंगजेब ने आमेर के कछवाहा राजा **बिशनसिंह** को मथुरा का फौजदार बनाकर जाटों का विद्रोह दबाने हेतु नियुक्त किया। राजा बिशनसिंह ने राजाराम एवं उसके उत्तराधिकारी चूड़ामण को पराजित कर **सोनार** दुर्ग विजित कर लिया। उसने जाट विद्रोह को दबा दिया। कालान्तर में चूरामन ने मथुरा के पास जाट राज्य **भरतपुर** की स्थापना की। **जाट साम्राज्य संस्थापक** चूड़ामन को ही माना जाता है। भरतपुर की राजधानी **डींग** थी। बदनसिंह ने 1725 में डीग के किले का निर्माण करवाया था। 1721 ई. में चूड़ामन ने आत्महत्या कर लिया।

बदनसिंह– (1721-1756) अहमदशाह अब्दाली ने इसे **राजा** की उपाधि दी और इसके नाम में **महेन्द्र** जोड़ा। उसे जयपुर के राजा जयसिंह ने **ब्रजराज** की उपाधि दी थी।

सूरजमल– (1756-63) इसे **जाटों का अफलातून (प्लेटो)** या **जाटों का युलिसिस** भी कहा जाता है। पानीपत के तीसरे युद्ध में यही तटस्थ रहा था। इसने आगरा के समरूप नगरों का निर्माण डींग में करवाया। उसने मिट्टी का किला लोहगढ़ का निर्माण करवाया था। अंग्रेज सेनापति जनरल लेक ने डीग को जीत लिया था परन्तु भरतपुर के लोहागढ़ को वह जीतने में असफल रहा था।

- **सतनामी (मिनियास) विद्रोह–** सतनामी बैरागीपंथी थे जिनके विद्रोह का केन्द्र **नारनौल** था। यह मुख्यतः कृषक विद्रोह था। सतनामियों पर विजय प्राप्त करने हेतु औरंगजेब ने अपने हाथ से लिखे इबादत के शब्द एवं प्रतीक को सेना के झण्डे पर लगवा दिया। **राजा बिशनसिंह कछवाहा** ने इस विद्रोह को भी दबा दिया। इस विद्रोह का उल्लेख खफी खां एवं साकी मुस्तईद खाँ ने किया है। **मुस्तईद खाँ के अनुसार, "युद्ध में सतनामियों ने महाभारत की महान लड़ाई सा दृश्य प्रस्तुत किया।"**
- **सिक्ख विद्रोह–** जब औरंगजेब बादशाह बना तब हरराय सिखों के गुरू थे। औरंगजेब ने सिखों के 9वें गुरू तेगबहादुर को फाँसी दे दिया था। उनके पश्च्यात सिखों के 10वें एवं अन्तिम गुरू गोविन्द सिंह हुए (विस्तृत अध्ययन हेतु देंखे पेज 190)

Scanned with CamScanner

● **शहजादा अकबर का विद्रोह**– अकबर औरंगजेब का पुत्र था। वह पिता की राष्ट्र विरोधी और आत्मघाती नीति से असन्तुष्ट था। साम्राज्य को पुनः सही रास्ते पर लाने के उद्देश्य से उसने विद्रोह कर दिया। उसने औरंगजेब को स्पष्ट रूप से लिखा, "राज्य के क्लर्क तथा अफसरों ने व्यापारियों का ढंग अपना लिया है तथा पदों को सोने से खरीद रहे हैं और लज्जास्पद शुल्कों पर बेच रहे हैं। प्रत्येक आदमी जो नमक खाता है वह नमक के तहखाने को नष्ट करता है।" दुर्गादास राठौर एवं सिसोदिया राजपूतों की मदद से **11 जनवरी 1681 ई. में अकबर ने स्वयं को बादशाह घोषित कर दिया।** इस समय औरंगजेब अजमेर में था। यहीं **दोराहा** में पत्र के माध्यम से उसने अकबर की सेना में फूट डलवा दिया। दुर्गादास, अकबर को लेकर मराठा शासक शंभाजी के पास पहुँचा। वह पाली नामक गांव में शंभाजी से मिला और शंभाजी ने उसे संरक्षण प्रदान किया। परन्तु, अकबर यहाँ से फारस भाग गया और वहीं पर उसकी मृत्यु हो गयी। अकबर को औरंगजेब ने **भारत को व्याकुल करने वाला** कहा था।

उत्तर-पश्चिम सीमा पर होने वाले अफगान विद्रोह–

युसुफजाइयों का विद्रोह– इनका नेता **भागू** था जिसने 1667 ई. में विद्रोह कर दिया। रौशनाई नामक धार्मिक पुनरुत्थानवादी आंदोलन इसी से जुड़ा था। औरंगजेब ने जसवन्त सिंह को जमरूद का मुगल सूबेदार बनाया।

अफरीदियों का विद्रोह– 1672 ई. में होने वाले अफरीदि विद्रोह का नेतृत्व **अकमल खाँ** ने किया। उसने सुल्तान की उपाधि धारण कर ली थी। वह अफगान क्षेत्र से मुगल सत्ता के उन्मूलन के विरुद्ध बने संयुक्त संघ का नायक था। उसने मुगलों के खिलाफ सभी अफगानों के साथ देने का अनुरोध किया।

खुशहाल खाँ खटक– 1675 में ही इसने विद्रोह कर दिया था। खुशहाल खाँ एक कवि भी था। उसे औरंगजेब का 'जानी दुश्मन' कहा गया। पेशावर के शाही दरबार में बुलाकर उसे धोखे से मुगलों ने कैद कर लिया। इसको कुछ समय तक औरंगजेब ने दिल्ली तदुपरान्त रणथम्भौर के कारागार में कैदी बनाकर रखा। यूसफजइयों का विद्रोह समाप्त करने हेतु उसे उत्तर-पश्चिम भेजा गया परन्तु खुशहाल खाँ, अकमल खाँ से मिल गया। सीमान्त प्रदेश के विद्रोह को समाप्त करने हेतु औरंगजेब ने युगीर खाँ को मुगल सेनानायक बनाकर भेजा। अन्त में औरंगजेब ने स्वयं मुगल सेना का नेतृत्व किया। 1674 ई. में वह इस क्षेत्र में आया और **हसन अब्दाल** में डेरा डाला। अन्त में औरंगजेब ने अमीर खाँ को काबूल का सूबेदार बनाया। अमीर खाँ ने सीमावर्ती जातियों को व्यापक आर्थिक सहायता एवं आकर्षक पद प्रदान कर अफगानिस्तान पर नियन्त्रण स्थापित कर लिया। औरंगजेब सीमान्त प्रदेश के शासकों को प्रतिवर्ष 6 लाख रुपया वार्षिक देता था। सर यदुनाथ सरकार के अनुसार, "अफगान युद्ध का राजनीतिक प्रभाव हानिकारक रहा अफरीदियों तथा खट्टकों ने ही शिवाजी की अटूट सफलता को संभव बनाया। दरअसल दक्कन से सर्वोत्तम फौज को उत्तर-पश्चिम में भेजने के कारण शिवाजी दबाव से मुक्त हो गया। दूसरे आगामी राजपूत युद्ध में भी मुगलों द्वारा अफगानों का इस्तेमाल असंभव हो गया।"

● **बुन्देलखण्ड में विद्रोह**

विद्रोह का केन्द्र – ओरछा

चम्पतराय– ओरछा के शासक चम्पतराय ने 1661 ई. में औरंगजेब के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। परन्तु, मुगल आधिपत्य स्वीकार करने के स्थान पर उसने आत्महत्या कर लिया था।

छत्रसाल– चम्पतराय का पुत्र छत्रसाल औरंगजेब की तरफ से शिवाजी के विरुद्ध युद्ध करने हेतु दक्षिण गया। परन्तु, वह शिवाजी के व्यक्तिव से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि अपनी सेवायें शिवाजी को अर्पित कर दी। शिवाजी के कथनानुसार छत्रसाल ने बुन्देलखण्ड में विद्रोह कर दिया। 1675 ई. में उसने **पन्ना** पर अधिकार कर उसे अपनी राजधानी बनाया। 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् छत्रसाल बुन्देलखण्ड का स्वतंत्र शासक बन गया। 1721 ई. में उसकी मृत्यु हुई।

Scanned with CamScanner

राजपूत एवं औरंगजेब

मारवाड़

राजधानी– जोधपुर

वंश-राठौर

शासक– जसवन्त सिंह; अजीतसिंह

विशेष– औरंगजेब ने मारवाड़ के साथ **30 वर्षीय** युद्ध किया और सर्वप्रथम मारवाड़ का विलय किया क्योंकि सर्वप्रथम ...ड़ ही राजपूतों के विद्रोह का केन्द्र बना था।

दुर्गादास– को **राठौरों की वीरता का पुष्प** तथा **राठौड़ों का यूसिलिप्स** कहा जाता है। वह मारवाड़ का प्रधानमंत्री था।

शाहजहाँ ने 1643 ई. में जसवन्त सिंह को अजमेर का कार्यवाहक सूबेदार बनाया था। यद्यपि जसवन्त सिंह धरमत युद्ध ... औरंगजेब के विरुद्ध लड़ा तथा खजुवा युद्ध में उसके साथ विश्वासघात किया परन्तु, मिर्जा राजा जयसिंह ने देवराई युद्ध से ... मध्यस्थता कर दोनों के बीच समझौता करा दिया। शासक बनने के पश्चात औरंगजेब ने जसवन्त सिंह को 7000 जात एवं ...00 सवार का मनसब दिया। 1671 ई. में जसवन्त सिंह से गुजरात की सूबेदारी वापस ले ली गयी और उसे जमरुद का ...ेदार बना दिया गया। पृथ्वीसिंह जसवन्तसिंह की अनुपस्थिति में मारु (मारवाड़) का प्रशासन देखता था। औरंगजेब ने उसे ... खिलअत प्रदान की जिससे उसी दिन उसकी मृत्यु हो गयी। जसवन्त सिंह की 1678 ई. में जमरूद में मृत्यु हो गयी। ...ची एवं टाड के अनुसार औरंगजेब ने जसवन्त सिंह को विष देकर मरवा दिया। इसी समय लाहौर में उसके पुत्र अजीतसिंह ...न्म हुआ। परन्तु, औरंगजेब ने इसे शासक न स्वीकार कर जसवन्त सिंह के भाई इन्दर सिंह को 36 लाख रुपये लेकर ...ा दे दी। औरंगजेब अजीतसिंह को 'जाली या नकली बच्चा' मानता था। समकालीन राजस्थानी रचना **हुकुमत-री-बही** ... अनुसार औरंगजेब ने बालक अजीतसिंह को नूरगढ़ किले में नजरबन्द करा दिया। उसने इसके खर्च के लिए मारवाड़ के दो ...ने सोजत एवं **जैतरण** दे दिया। लेकिन, दुर्गादास राठौर ने नूरगढ़ से अजीतसिंह को निकालकर सफलतापूर्वक मारवाड़ लाया। ...तसिंह को माउण्ट आबू के सिरोही के कालिंदी गाँव के मन्दिर में गुप्त रूप से रखा गया। यहीं जयदेव की स्त्री के संरक्षण ... उसकी शिक्षा-दीक्षा सम्पन्न हुई। मेवाड़ के राणा राजसिंह ने अजीतसिंह के निर्वाह के लिए **केवला** की जागीर दिया। सितम्बर ...679 ई. में औरंगजेब ने इन्दर सिंह को मारवाड़ के सिंहासन से अपदस्थ किया और अजमेर में स्वयं आकर डेरा डाला। औरंगजेब ... मृत्यु के पश्चात् अजीत सिंह ने मारवाड़ में प्रवेश किया तथा 'जफर कुली' नामक शाही फौजदार को निष्कासित कर मारवाड़ ... पुनः अधिकार स्थापित कर लिया। बहादुरशाह प्रथम ने अजीत सिंह को मारवाड़ का शासक स्वीकार कर लिया। अकबर ...ी पुत्री **सफीयतुन्निसा** एवं पुत्र **बुलन्द अख्तर** को मारवाड़ में ही छोड़ गया था। दुर्गादास ने उनको अपने बच्चों की तरह ... और इन्हें मुस्लिम-संस्कृति के अनुसार शिक्षा दी। व्यस्क होने पर अजीतसिंह के विरोध के बावजूद दुर्गादास ने सफीयतुन्निसा ... औरंगजेब के पास भेज दिया।

मेवाड़

वंश– सिसोदिया

शासक– राणा राजसिंह

उपाधि – विजयकटकात की उपाधि राजसिंह ने औरंगजेब के विरुद्ध धारण की थी।

... औरंगजेब के विरुद्ध मेवाड़ एवं मारवाड़ ने आपस में गठजोड़ कर सिसोदिया-राठौर संघ बना लिया। राणा राजसिंह ...615 ई. की मुगल-मेवाड़ सन्धि का उल्लंघन करते हुए चित्तौड़ के दुर्ग का पुनः निर्माण करवा दिया। इसी कारण शाहजहाँ ...णा राजसिंह के खिलाफ कार्रवाई भी की थी। इसी को आधार बनाकर 1679 ई. में औरंगजेब अजमेर से प्रस्थान किया ... क्रमशः **देवारी, उदयपुर एवं चित्तौड़** पर अधिकार कर लिया। सेनापति हसन अली खाँ को राणा राजसिंह की खोज ...तथा शहजादा अकबर को चित्तौड़ के युद्ध संचालन का भार देकर औरंगजेब अजमेर चला गया। इसके पश्चात् उसने

Scanned with CamScanner

बंगाल से शहजादा आजम को बुलाकर चित्तौड़ में नियुक्त किया। लगभग इसी समय **रानी हाड़ी** (इनकों राठौरों एवं मेवाड़ के राणा राजसिंह का समर्थन प्राप्त था) का विद्रोह भी शान्त हो गया। रानी हाड़ी ने आत्मसमर्पण कर दिया उसके निर्वाह के लिए औरंगजेब ने बरन का परगना दे दिया।

औरंगजेब ने मेवाड़ पर **आजम** (पूर्व में देवारी से), **मोअज्जम** (उत्तर में राजसमुद्र से) एवं **अकबर** (पश्चिम में देसुरी से) के नेतृत्व में तीन तरफ से आक्रमण की योजना बनायी। परन्तु, इसी समय (जनवरी, 1681) अकबर ने विद्रोह कर दिया। राणा राजसिंह की मृत्यु के पश्चात् मेवाड़ ने आत्मसमर्पण कर दिया। बीकानेर के राजा स्यामसिंह ने मध्यस्थता कर नये शासक जयसिंह एवं औरंगजेब के बीच **उदयपुर की सन्धि (24 जून 1681)** करा दी। जयसिंह को राणा की उपाधि भी दी गयी। सन्धि के तहत् राणा जयसिंह ने चित्तौड़ के दुर्ग का पुनर्निर्माण न करवाने तथा मारवाड़ के राठौरों की सहायता न करने का वचन दिया था। जजिया से छूट पाने के लिए राणा को माण्डल, पुर तथा वेदनौर के परगने मुगलों को देने पड़े। 3 वर्ष बाद ये परगने पुनः राणा को मिल गये।

औरंगजेब की विजयें

असम (कामरूप)

वंश-सान वंश

राजधानी-गढ़गाँव

शासक– जयध्वज; चक्रध्वज

अहोम– मंगोल कबिले अहोम ने 13वीं सदी में एक शक्तिशाली राज्य स्थापित किया और कालान्तर में उनका हिंदूकरण हो गया था। असम नाम उन्हीं के नाम से व्युत्पन्न है। अहोम शासकों में सबसे महान **सुहुंगमुग** का राज्य था। उसने अपना नाम बदलकर **स्वर्गनारायण** कर लिया था। वैष्णव धर्म सुधारक शंकरदेव उसी के काल में हुए। औरंगजेब के समय 11 वर्षों में कुल 7 अहोम शासक हुए और इनमें से किसी की भी मृत्यु प्राकृतिक रूप से नहीं हुई।

शासक बनने के उपरान्त औरंगजेब का **प्रथम अभियान असम** पर हुआ। दरअसल उत्तराधिकार युद्ध के समय अहोम शासक ने कामरूप तथा मुगल क्षेत्रों की राजधानी गुवाहाटी पर अधिकार कर लिया था। बंगाल के सूबेदार मीर जुमला ने 1662 ई. में हुए एक जलयुद्ध में कामरूप एवं कुचविहार को जयध्वज से विजित कर लिया। उसकी राजधानी गढ़गांव पर मुगलों ने अधिकार कर लिया। दिसम्बर 1662 ई. में मीर जुमला ने दिलेर खाँ के माध्यम से जयध्वज के साथ संधि कर लिया। संधि के तहत वह प्रतिवर्ष 20 हाथी देने को राजी हुआ। मुगल सीमा बर नदी से बढ़कर ब्रह्मपुत्र की सहायक भराली नदी तक हो गयी। 1663 ई. में मीरजुमला की खीज्रपुर में (नाव पर) मृत्यु हो गयी। उसके बाद औरंगजेब ने अपने मामा शाइस्ता खाँ (आसफ खाँ का पुत्र) को बंगाल का सूबेदार बनाया। उसने भी अराकान के शासक को हराया। शाइस्ता खाँ ने बंगाल के पुर्तगालियों को हराया और 1663 ई. में चटगाँव एवं सोनद्वीप (संद्वीप) जीत लिया। चटगाँव का नाम **इस्लामाबाद** रखा गया। 1667 ई. में अहोम शासक चक्रध्वज ने पुनः असम पर अधिकार कर लिया।

लद्दाख– औरंगजेब के काल में लद्दाख जीता गया। इसी समय यहाँ पर पहली बार मस्जिद का निर्माण हुआ।

दक्षिण भारत– औरंगजेब ने सर्वप्रथम 'अमीर-उल-उमरा' शाइस्ता खाँ तथा जसवन्त सिंह को दक्षिण की समस्या के निदान हेतु भेजा। तदुपरान्त मोअज्जम, मिर्जा राजा जयसिंह तथा 1673 में बहादुर खाँ को क्रमशः दक्षिण का सूबेदार बनाकर भेजा गया। इसके बाद दिलेर खाँ दक्षिण का सूबेदार बना जिसने बीजापुर दरबार में औरंगजेब द्वारा नियुक्त वजीर 'सीदी मसूद' से गुलबर्गा में सन्धि की थी। उसके पश्चात् शाहआलम दक्षिण का सूबेदार नियुक्त हुआ। उसने बीजापुर के संरक्षक द्वारा औरंगजेब का नाम खुतबा में पढ़वाकर अपना अभियान निरस्त कर दिया। अतः औरंगजेब ने शहजादा आजम को दक्षिण का सूबेदार बनाया। अन्त में 1681 ई. में अकबर का पीछा करते हुए औरंगजेब स्वयं दक्षिण आया। उसने 8 सितम्बर 1681 को दक्कन के लिए अजमेर

Scanned with CamScanner

प्रस्थान कर 23 नवम्बर 1681 ई. को बुरहानपुर तथा 1682 ई. में अहमदनगर पहुँच गया। जैसे स्पेन नेपोलियन के लिए फोड़ा सिद्ध हुआ वैसे ही दक्षिण औरंगजेब के लिए नासूर सिद्ध हुआ। जीवन के अन्तिम 25 या 26 वर्ष उसने दक्षिण में ही बिता दिए। एस.आर.शर्मा का कथन है, "दक्षिण औरंगजेब के लिए एक कब्रिस्तान सिद्ध हुआ और जब 1707 ई. में उसे वहाँ दफनाया गया तो न केवल सम्राट की लाश ही बल्कि अन्य कई चीजें भी कब्र के नीचे दब गयी।"

बीजापुर– 22 सितम्बर **1686** में औरंगजेब ने बीजापुर का विलय कर लिया। नरसू पण्डित एवं यासू पण्डित बीजापुर के अधिकारी थे। बीजापुर का अन्तिम सुल्तान **सिकन्दर आदिलशाह** था जिसे दौलताबाद दुर्ग भेज दिया गया। यहीं 1700 ई. में उसकी विष देकर हत्या कर दी गयी।

गोलकुण्डा– 1672 ई. में यहाँ के शासक अब्दुल्ला कुतुबशाह की मृत्यु हो गयी। उसका उत्तराधिकारी **अबुल हसन** हुआ जो कि गोलकुण्डा का अन्तिम कुतुबशाही सुल्तान था। यहाँ पर **मदन्ना** एवं **अखन्ना** नामक भाइयों का शासक अबुल हसन पर अत्यधिक प्रभाव था। मदन्ना पण्डित उसका वजीर था। अपने सैनिकों में साहस का संचार करने के लिए औरंगजेब ने गोलकुण्डा विजय से पूर्व ही यहाँ पर मस्जिद का निर्माण करवाया, अपने नाम का खुतबा पढ़वाया, सिक्का चलवाया और मोहतसिब की नियुक्ति कर दी थी। गोलकुण्डा पर अधिकार करने के लिए औरंगजेब ने 'सुनहली कुंजी' का वही तरीका अपनाया जो अकबर ने असीरगढ़ हेतु प्रयोग किया था। अब्दुल्ला पनी नामक एक अफगानी सिपाही ने घूस लेकर किले का प्रवेश द्वार खोल दिया। सितम्बर 1687 ई. में गोलकुण्डा का विलय कर लिया गया। हालांकि सुल्तान अबुल हसन ने औरंगजेब से कहा था कि, "वह बादशाह के शरीर के प्रत्येक घाव के बदले एक करोड़ रुपया क्षतिपूर्ति के रूप में देगा।" औरंगजेब ने सुल्तान को दौलताबाद के दुर्ग में डाल दिया। गोलकुण्डा का सेनापति **अब्दुर्रज्जाक लारी** था जिसने अपनी वीरता से औरंगजेब को अत्यधिक प्रभावित किया। उसे मुगल सेवा में ले लिया गया।

बीजापुर एवं गोलकण्डा विजित करते ही औरंगजेब सबसे बड़े मुगल साम्राज्य का स्वामी बन गया। मुगल साम्राज्य की सीमाएँ अब दक्षिण भारतीय प्रायद्वीप में समुद्र तट तक फैल गयी। 1690 ई. तक वह अपनी शक्ति की पराकाष्ठा पर पहुँच गया तथा काबुल से लेकर चटगाँव और काश्मीर से लेकर कावेरी तक विस्तृत सम्पूर्ण भारत का स्वामी था। 1705 ई. में औरंगजेब ने वाकिनखेड़ा दुर्ग जीता। औरंगजेब द्वारा दक्षिण में जीता गया अन्तिम दुर्ग **बाजिन्गेरा (वजनजीरा)** था।

मराठा

राजाराम को हटाकर **शम्भाजी (1680-89)** क्षत्रप बना। एक बार शंभाजी अपनी पत्नी यशुबाई के साथ औरंगजेब के सैन्यों के माध्यम से बहादुरगढ़ में मुगलों के पक्ष में चला गया था। परन्तु, जब औरंगजेब ने उसे गिरफ्तार करने का आदेश दिया तब वह भागकर बीजापुर एवं वहाँ से पन्हाला वापस आ गया। शंभाजी को औरंगजेब ने **नारकीय पिता का नारकीय पुत्र** कहा था। 1689 ई. में मुकर्रब खाँ ने **संगमेश्वर** के रंगमहल से शंभाजी एवं कवि कलश को पकड़ लिया। शंभाजी को भीमा नदी के किनारे मृत्युदण्ड दे दिया गया। उसकी पत्नी **येसुबाई** एवं पुत्र **शाहू** रायगढ़ दुर्ग में मुगलों के हाथ लगे। उनको औरंगजेब के पास भेज दिया गया। इसी समय से मराठों का **स्वतंत्रता संग्राम** शुरू हुआ और तब तक चला जब तक शाहू को मुगलों ने क्षत्रप स्वीकार नहीं कर लिया।

मराठों का स्वतंत्रता संग्राम कुल 20 वर्षो तक चला। **ब्रह्मगिरी**[1] से औरंगजेब ने मराठों के विरुद्ध युद्ध का संचालन किया। इस दौर में मराठों का नेतृत्व शाहू के चाचा **राजाराम** (1689-1700) ने किया। राजाराम के सहयोगी **परशुराम त्रम्बक, सन्ताजी घोरपड़े** एवं **धनाजी यादव** थे। सन्ता एवं धना इस युग के वीर थे। बताया जाता है कि उन्होंने औरंगजेब के पड़ाव तक अपने सफलतापूर्ण आक्रमण पहुँचा दिया था। शंकरजी मल्हार (सचिव), रामचन्द (आमात्य), नीलकंठ मोरेश्वर पिंगले (पेशवा) तथा प्रल्हाद निराजी के रूप में चार कुशल मराठा सरदारों ने मुगलों के विरुद्ध संघर्ष करने का संकल्प लिया। राजाराम के ही समय प्रतिनिधि पद का गठन हुआ। **सैद्धांतिक रुप से प्रतिनिधि का पद पेशवा से बड़ा होता था।** अतः अब से अष्टप्रधान में कुल

1. ब्रह्मगिरी जिसका नाम उसने ... रखा दक्षिण में उसकी सारी चढ़ाइयों का केन्द्र (बुनगाह) थी।

Scanned with CamScanner

प्रतिनिधि प्रहलाद निराजी था। 1701 ई. में परशुराम प्रतिनिधि बना। राजाराम ने रामचन्द्र नौ मंत्री हो गये। पूर्वी कर्नाटक में प्रथम प्रतिनिधि प्रहलाद निराजी था। ... बनाकर जिन्जी चला आया। यहाँ अपने रिश्ते के भाई तंजौर के शाहजी की मदद

अमात्य को **हुकूमतपनाह** (उप अभिवाहक) बनाकर जिन्जी चला आया। यहाँ अपने रिश्ते के भाई तंजौर के शाहजी की मदद से संघर्ष चालू रखा। **1689** ई. में **रायगढ़** पर जुल्फिकार के नेतृत्व में मुगलों का अधिकार हो गया। राजाराम की गतिविधियों का केन्द्र **जिंजी** (कर्नाटक में) था। राजाराम के इस आदेश से कि जो मराठा जितनी सम्पत्ति हस्तगत करेगा वह उसकी हो जायेगी उनमें एक नवीन ऊर्जा भर दी। इसी समय मुगल वजीर असद खाँ ने औरंगजेब को मराठों से सन्धि करने का परामर्श दिया जिसे उसने अस्वीकार कर दिया था। इसका प्रभाव यह हुआ कि प्रत्यक्ष साक्षी भीमसेन को लिखना पड़ा, "पूरे राज्य में सर्वत्र मराठों का पूर्ण प्राधान्य हो गया। लूटपाट द्वारा वे दरिद्रता से बच गये तथा बहुत धनी बन गये" मनूची की अनुसार, "आजकल मराठा सेनानायक पूर्ण आत्मविश्वास के साथ घूमते-फिरते हैं। उन्होंने मुगल सेनापतियों को त्रस्त कर दिया है। उन्होंने मुगल सेनापतियों के दाँत खट्टे कर उन्हें डरपोक एवं कायर बना दिया। अब मराठा सेना भी मुगल सेना की तरह सुसज्जित तथा उसी तरह प्रयाण करती हैं।" मुगल सेना ने जुल्फिकार के नेतृत्व में राजाराम को जिन्जी के किले में 8 वर्ष तक घेरे रखा। राजाराम सतारा पलायन कर गया और 1698-1700 तक सतारा में राजधानी रखा। 1700 ई. में सिंहगढ में राजाराम की मृत्यु हुई। **राजाराम ने कभी भी स्वयं को राजा घोषित नहीं किया।** वह कहता था कि मैं अपने भतीजे (शाहु) का प्रतिनिधि मात्र हूँ। राजाराम की मृत्यु के पश्चात् मार्च 1700 में परशुराम ने सतारा दुर्ग मुगलों को कुछ शर्तों पर सौंप दिया।

ताराबाई – 1700 से 1708 ई. तक मराठा आंदोलन का नेतृत्व इसी **मराठा वीरांगना** ने किया। ताराबाई ने अपने अल्पव्यस्क पुत्र **शिवाजी द्वितीय** के नाम पर शासन किया। मनूची ताराबाई के विषय में कहता है कि 'इसने मुगलों के दाँत खट्टे कर दिये।' खफी खाँ ने ताराबाई की भरपूर प्रशंसा की है। उसके अनुसार, "वह एक चतुर तथा बुद्धिमती स्त्री थी तथा अपने पति के जीवनकाल में ही दीवानी एवं फौजी मामलों की जानकार के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थी।"

शाहू का लालन-पालन औरंगजेब के ही संरक्षण में हुआ। शाहू औरंगजेब को **पिताजी** कहता था। शाहू को औरंगजेब के निवास स्थान के ठीक पास **गुलालबाड़ी** में रखा गया। औरंगजेब की पुत्री **जीनतुन्निसा** ने शाहू से पुत्रवत प्रेम किया। औरंगजेब ने शाहू को मराठा शासक घोषित कर **ईमानदार** एवं राजा की उपाधि के साथ 7000 का मनसब दिया।

मृत्यु– 1681 से 1707 ई. तक औरंगजेब ने अपना समय दक्षिण में व्यतीत किया। इसे कभी उत्तर-भारत आने का मौका नहीं मिला। मार्च 1707 ई. को 90 वर्ष की आयु में उसकी अहमदनगर में मृत्यु हो गयी। उसे दौलताबाद के खुल्दाबाद में प्रसिद्ध सूफी शेख बुरहानुद्दीन जैनुद्दीन शिराजी हक के मकबरे के बगल में लाल पत्थरों की कब्र में दफना दिया गया। अपने जीवन काल में ही औरंगजेब ने स्वयं के लिए यह कब्र बनवाया था। मृत्यु से पूर्व अपने पुत्रों को उपदेशात्मक पत्र भेजा तथा उनके बीच तैमूरी परम्परा के अनुसार साम्राज्य का विभाजन तीन प्रशासनिक क्षेत्रों में कर दिया। मृत्यु से पूर्व उसने कुल 12 आदेशों से युक्त एक वसीयतनामा लिख छोड़ा था। औरंगजेब के अनुसार **"वास्तव में महान बादशाह वह है जो अपनी प्रजा पर समानता से शासन करना अपने जीवन का प्रमुख लक्ष्य समझता है।"** उसने यह भी स्वीकार किया कि **"सारे झगड़े की जड़ मैं हूँ।** मैं अकेला आया था और अकेला जा रहा हूँ। मैंने देश तथा लोगों का भला नहीं किया तथा अपने दोषों का बोझ लिए जा रहा हूँ। जो कुछ भी हो, मैं अपनी नाव को पानी में छोड़ रहा हूँ।" वसीयत में यह भी निर्देश था कि मेरे जनाजे में राज्य का एक भी पैसा खर्च न हो। टोपियाँ सिलकर एवं कुरान की प्रतियाँ तैयार करने से जो भी मेरी आय हुई है उसी से मेरा अन्तिम संस्कार किया जाय। वस्तुतः औरंगजेब अपनी आजीविका प्राप्त करने के लिए कुरान की प्रतिलिपिकर्त्ता और टोपी निर्माता का कार्य करता था। वह राजकोष को अनुवांशिक सम्पत्ति न मानकर उसे प्रजा की सम्पत्ति समझता था। **ओविंगटन** (1690-93) **ने औरंगजेब को महान मुगल एवं न्याय का सागर बताया है।** यदुनाथ सरकार ने उसे **असाधरण कोटि का वीर** और **अंतिम महान मुगल शासक** माना है। **खफी खाँ** ने उसका मूल्यांकन करते हुए कहा, "तैमूर वंश के सभी बादशाहों तथा दिल्ली के सभी सुल्तानों में **सिकन्दर लोदी** के बाद कोई भी व्यक्ति कठोरता एवं न्याय के लिए इतना विख्यात नहीं हुआ जितना कि औरंगजेब। परन्तु, **उसने दण्ड** का प्रयोग नहीं किया और **बिना दण्ड के** किसी देश का शासन नहीं चल सकता है। अतः उसके द्वारा रचित योजना लाभहीन हुई, प्रत्येक उद्यम लम्बे **खिंचते चले गये** और प्रत्येक साहसिक कार्य अंत में अपने उद्देश्य में असफल हो जाती थी।"

Scanned with CamScanner

यूरोपियों से सम्बन्ध– पहली बार मुगल एवं अंग्रेज औरंगजेब के ही काल में युद्धरत हुए। 1686 ई. में ही सर्वप्रथम अंग्रेजों को भारत में राजनीतिक सत्ता स्थापित करने की महत्वपूर्ण लालसा जग उठी। अंग्रेजों ने याचिका की नीति छोड़ संघर्ष की नीति अपनायी। **जोशुआ चाइल्ड** के छोटे भाई **जान चाइल्ड** ने 1686 में हुगली को नष्ट कर दिया तथा औरंगजेब के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। परन्तु, अंग्रेजों ने औरंगजेब की शक्ति को बहुत कम कर के आंका। औरंगजेब ने उनका यह भ्रम तोड़ दिया। उसने अंग्रेजों के खिलाफ कार्यवाही की और जान चाइल्ड गंगा के मुहाने पर स्थित एक ज्वरग्रस्त फुल्टा द्वीप पर भाग कर अपनी जान बचायी। उसे औरंगजेब से माफी मांगनी पड़ी और डेढ़ लाख जुर्माना, 1.5% जजिया एवं 2% चुंगी भी अदा करनी पड़ी। 1686 ई. में ही एक बार फिर अंग्रजों ने मुगलों से संघर्ष किया। इसका भी परिणाम वही हुआ जो जान चाइल्ड का हुआ था। अतः अंग्रेजों ने एक बार पुनः झुककर **जौब चार्नोक** को भेजकर औरंगजेब के दरबार में हाजिरी लगायी और माफी मांगी। 1698 ई. में इंग्लैण्ड के शासक विलियम तृतीय ने विलियम जान नौरिस को व्यापारिक सुविधा प्राप्त करने हेतु भेजा। परन्तु, इस समय औरंगजेब दक्षिण में था इसलिए मिल नहीं पाया।

डा. जोवान्नी करेरी– इटली का चिकित्सक था। 1690 ई. में वह भारत आया उसने इस बात का बड़ा सजीव चित्र पेश किया है कि किस तरह चाँदी तमाम दुनियाँ से होकर भारत पहुँचती थी। बताता है कि 77 वर्ष का औरंगजेब पढ़ते-लिखते समय चश्मे का प्रयोग नहीं करता था। करेरी की औरंगजेब से भेंट दक्षिण के गलगला में हुई। वह औरंगजेब की परिश्रमशीलता एवं गलगला में मुगल शिविर का वर्णन करता है।

1666 ई. में फ्रांसीसी यात्री **जीन थेवेनाट** सूरत आया था। स्टेनले लेनपूल बताते हैं कि 1666 ई. में टैवर्नियर, बर्नियर एवं थैवेनाट तीनों भारत में उपस्थित थे। 1670 ई. में फ्रांसीसी यात्री **एब्बे कैरे** भारत आया था। **ओविंगटन** 1690-93 के बीच भारत की यात्रा पर रहा। ओविंगटन ने औरंगजेब को महान मुगल एवं न्याय का सागर बताया है। चिकित्सक डा. **जॉन फ्रायर** नामक अंग्रेज यात्री 1672 ई. में भारत आया। वह शिवाजी के राजस्व प्रशासन का सबसे बड़ा आलोचक था। वह शिवाजी को **दक्खन की कृत्रिम टाँग** बताता है जो दक्खन के शरीर में जुड़कर भी अलग सूजी (मोटी) सी दिखती है।

भारत के बाहर मुस्लिम संसार के साथ सम्बन्ध – 1661 से 1667 ई0 के बीच औरंगजेब के पास कुछ विदेशी मुस्लिम शक्तियों के यहाँ से 'सम्मान प्रदर्शित करने वाले दूतमंडल आये। इनमें मक्का का शरीफ, फारस, बल्ख, बुखारा, काशगर, खीवां, अबिसीनिया और शहरे-नौ के राजा; बसरा, यमन एवं मोचा के तुर्की सरदार तथा कुस्तुनतुनिया से केवल एक दूतमंडल 1690 ई. में आया था।

मुगल साम्राज्य के विघटन में औरंगजेब की भूमिका का मूल्यांकन

विघटन में औरंगजेब की भूमिका को लेकर इतिहासकार दो भागो में विभाजित हैं। जो इतिहासकार विघटन हेतु सीधे औरंगजेब को जिम्मेदार मानते हैं उनके तर्क निम्नलिखित हैं–

(1) औरंगजेब की धार्मिक नीतियाँ हिन्दू विरोधी थी जिसके कारण हिन्दू सामन्त एवं सामान्य प्रजा मुगलों की विरोधी हो गयी। प्रो. एस. आर. शर्मा के अनुसार, "जब औरंगजेब भारत का सम्राट बना तो उसके रूप में मुस्लिम धर्मशास्त्र की विजय हुई।"

(2) औरंगजेब की राजपूत नीति में भी दोष था जिसके कारण मारवाड़ एवं मेवाड़ मुगलों के विरोधी हो गये।

(3) उसकी दक्षिण नीति अव्यवहारिक थी। बीजापुर एवं गोलकण्डा विलय करके उसने मुगल साम्राज्य को इतना बड़ा कर दिया कि वह अपने भार से ही चूर होकर गिर पड़ा। उसकी तुलना **यदुनाथ सरकार** ने एक ऐसे **अजगर से की है जिसने इतना खा लिया कि पचा नहीं पाया।** यदुनाथ सरकार ने दक्षिण को मुगल साम्राज्य का **स्पेनी नासूर** घोषित किया।

(4) मराठों के प्रति भी उसने अदूरदर्शिता का प्रदर्शन किया। औरंगजेब न तो मराठों का दमन ही कर पाया और न ही उनको राजपूतों की तरह मुगलों का सहयोगी बना सका। वह मराठों को डाकू कहता था।

(5) औरंगजेब पर यह भी दोषारोपण किया गया कि उसने उत्तराधिकार युद्ध में भाग लेकर राजनीति को दूषित कर दिया। इससे उत्तराधिकार के युद्ध नियमित रूप से होने लगे जिससे मुगल साम्राज्य को चोट पहुँची।

Scanned with CamScanner

ये मोटा-मोटी वे तर्क हैं जिनके आधार पर अक्सर औरंगजेब को मुगल साम्राज्य के पतन हेतु जिम्मेदार माना जाता है। वहीं इतिहासकारों का एक वर्ग ऐसा भी है जो कि विघटन को औरंगजेब से जोड़कर नहीं देखता। इनका मत है कि **औरंगजेब बद (खराब) नहीं बदनाम था।** अपने मत के समर्थन में वे निम्नलिखित प्रमाण प्रस्तुत करते हैं–

धार्मिक नीति– इनका मत है कि औरंगजेब की धार्मिक नीतियों का विकास क्रमिक रूप से हुआ। व्यक्तिगत रूप से वह कट्टरपंथी अवश्य हो सकता है परन्तु एक शासक के रूप में नहीं। इनका यह भी कहना है कि जैसे-जैसे साम्राज्य में असंतोष बढ़ता गया उसे मुस्लिम समुदाय का समर्थन प्राप्त करने हेतु कठोर धार्मिक नीतियां धारित करनी पड़ी क्योंकि अधिकांश विद्रोही हिन्दू थे। कुल मिलाकर इस धारा के इतिहासकार यह स्थापित करना चाहते हैं कि परिस्थितियाँ ही औरंगजेब के अनुकूल नहीं थी।

दक्षिण में औरंगजेब के विस्तार की नीति भी आत्मघाती नहीं थी। क्योंकि, वह पूर्वजों से विरासत में प्राप्त दक्षिणी नीति का ही विस्तार कर रहा था। बीजापुर एवं गोलकुण्डा का समामेलन अकबर की दक्षिण नीति का ही चरम निष्कर्ष था। दूसरे औरंगजेब एवं दक्षिण के राज्यों के बीच दिलों का मेल मनोवैज्ञानिक रूप से असम्भव था। खुद यदुनाथ सरकार इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि मुगल एवं दकनी राज्यों के बीच 'मनोवैज्ञानिक दृष्टि से असंभव' बनाने वाली परिस्थितियां उत्पन्न कर दी गयी थी। दूसरे 1636 की ऐतिहासिक संधि को शाहजहाँ के ही काल में तोड़ा जा चुका था। 1652 ई. में ही सूबेदार औरंगजेब ने गोलकुण्डा एवं बीजापुर के विरुद्ध आक्रामक नीति अपना चुका था। वह तो दाराशिकोह का प्रभाव था कि शाहजहाँ को औरंगजेब को दक्षिण में रोकना पड़ा। उसे 1656 में गोलकुण्डा एवं 1657 में 'बीजापुर' से युद्ध स्थगित करने की संधि करनी पड़ी। अन्त में फिर इस धारा के समर्थक इतिहासकारों ने औरंगजेब की दक्षिण नीति की असफलता में परिस्थितियों को ही जिम्मेदार माना क्योंकि मुगल साम्राज्य पर गहराता आर्थिक एवं राजनीतिक संकट था। डा. सतीश चंद्र महोदय औरंगजेब द्वारा ज़जिया के आरोपण को इसी परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। दरअसल मराठों को जीतने से पहले बीजापुर एवं गोलकुण्डा की विजय अनिवार्य थी। दूसरे मराठों के साथ उसके संबंध इसलिए विकसित नहीं नहीं हो पाये क्योंकि वे राजपूतों की तरह मुगलों के मातहत बनने को तैयार नहीं थे।

राजपूतों के उत्तराधिकार में हस्तक्षेप करना एवं राजपूतों का औरंगजेब का विरोधी हो जाने का मत भी सत्य नहीं। वस्तुतः मारवाड़ एवं मेवाड़ के विद्रोह को समस्त राजपूतों का विद्रोह नहीं माना जा सकता। औरंगजेब को कोटा, बूंदी, आमेर आदि राजपूतों का सहयोग मिलता रहा। इस मत की पुष्टि इससे भी हो जाती है कि जब शिवाजी ने आगरा के नजरबन्दी से पलायन किया तो उन्होंने राजपूताना पार कर सीधे महाराष्ट्र गमन का प्रयास नहीं किया अपितु पूर्वी दिशा का लम्बा मार्ग पकड़ा क्योंकि राजपूत मुगलों के सहयोगी थे न कि मराठों के।

औरंगजेब की नीतियाँ भी हिन्दू विरोधी नीति नहीं। अगर उसने कुछ मन्दिरों को तोड़ा तो कुछ को अनुदान भी दिया। प्रशासन में लगभग 33% हिन्दू ही थे। मुगलों की लोक स्वीकृति जन-मानस में व्याप्त थी जिसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण 1857 में दिखता है जब नाममात्र के शासक बहादुरशाह जफर को समस्त विद्रोहियों ने अपना नेता स्वीकार कर लिया था। दूसरे अगर औरंगजेब की हिन्दू विरोधी नीतियाँ विघटन हेतु जिम्मेदार थी तो बहादुरशाह प्रथम एवं जहाँदारशाह के समय जजिया हटा दिया गया, मारवाड़ एवं राजपूतों से मधुर संबंध स्थापित हो गयें तो फिर विघटन क्यों नही रुका? दूसरे अगर औरंगजेब की धार्मिक नीति ही विघटन हेतु जिम्मेदार थी तो मुगल साम्राज्य का पतन शाहजहाँ के समय में हो जाना चाहिए था। राजपूत, जाट, मराठा, सतनामी एवं सिख शाहजहाँ के समय में भी तो मौजूद थे। उसकी धार्मिक नीति का प्रथम चरण किसी भी रूप में औरंगजेब की नीतियों से कम नहीं था। वस्तुतः औरंगजेब ने राज्य के स्वरूप को बदलने की भी कोशिश नहीं की उसने तो बस इसके मौलिक इस्लामिक चरित्र पर बल दिया।

उत्तराधिकार युद्ध की समस्या तो मुगल साम्राज्य के प्रारम्भ से ही चली आ रही थी। शाहजहाँ ने भी तो अपने भाइयों की हत्या करके सत्ता पायी थी। एक समय सलीम ने भी ऐसा ही प्रयास किया था। अतः उत्तराधिकार युद्ध की शुरुवात में औरंगजेब का कोई योगदान नहीं था।

मतों का परीक्षण– वस्तुतः दोनों धारा के इतिहासकारों के मतों में सत्य के अंश विद्ययमान हैं। लेकिन, यह भी सत्य है कि एक शासक विशेष (औरंगजेब) की नीति साम्राज्य के पतन का एक एकमात्र कारण नहीं हो सकती। दूसरे औरंगजेब की समस्त नीतियाँ साम्राज्य के विघटन के मौलिक कारणों की जन्मदाता न होकर गति प्रदाता थी। जैसा कि आगे

Scanned with CamScanner

...देखेंगे मुगल साम्राज्य का पतन आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं संस्थागत कारणों से हुआ। मुगल प्रशासनिक ढाँचे ... ही देखे तो विघटन के कुछ तत्व यहीं मिल जायेंगे जैसे–बादशाह के मनसबदार या जागीरदार, जमींदार एवं कृषकों से ...बंध। अकबर ने मुगल साम्राज्य के निर्माण एवं विस्तार क्रम में ऐसी नीतियाँ विकसित की थी जिससे विघटनकारी शक्तियों ...पर नियंत्रण बना रहा। परन्तु, एक शताब्दी बाद पारिस्थितियाँ बदली और नयी चुनौतियाँ उत्पन्न हुई। औरंगजेब इन बदली ...हुई परिस्थितियों में कोई ऐसी सार्वभौमिक नीति नहीं ला पाया जिससे विघटनकारी तत्वों पर अंकुश लगता। राजनीतिक ...समझदारी का अभाव दिखाया सो अलग। **वह महान सैनिक तो था, परन्तु मनुष्यों का दूरदर्शी नेता नहीं था।** ...चालाक **कूटनीतिज्ञ तो था, पर ठोस राजनीतिज्ञ नहीं था।** वह मराठा आंदोलन की सही प्रकृति नहीं समझ पाया। **वह** ...संभाजी की हत्या कर एक ऐसा मराठा नेता खो दिया जिसके साथ वह वार्ता की मेज पर आ सकता था। दूसरे ...ऐसे सीमा रहित युद्ध में उलझ गया कि मराठे उससे जो दुर्ग आज खोते वह कल पुनः प्राप्त कर लेते थे। वह मराठों से ...नीति भले ही गैर-धार्मिक उद्देश्य से प्रेरित रही हो लेकिन उसने जाट, सतनामी आदि मूलतः कृषक विद्रोहों को धार्मिक आधार ...पर औचित्य सिद्ध करने का माध्यम दे दिया। दक्षिण में उसकी विस्तार की नीति ने समस्याओं को सुलझाने के बजाए उसकी ...उलझने बढ़ा दी और वह दिखा जिसे डा. सतीश चन्द्र महोदय ने जागीरदारी संकट के रूप में परिभाषित किया है। औरंगजेब ...ने जागीरों के संदर्भ में स्वयं कहा ''एक अनार सौ बीमार।'' वस्तुतः दक्षिण में प्रसार के समय जितनी तेजी से मनसबदारों ...की संख्या में वृद्धि हुई उतनी तेजी से संशाधनों का विकास नहीं हुआ। दूसरे दक्कन के अंतहीन युद्ध के कारण उसका ...कोष रिक्त हो गया। स्थिति तो वह हो गयी थी कि बंगाल के दीवान मुर्शिद कुली खाँ द्वरा भेजा जाने वाला बंगाल का राजस्व ...ही साम्राज्य की आय का एकमात्र सहारा हो गया जिसके आने की उत्सुकता से प्रतिक्षा की जाती थी।

यह सही है कि औरंगजेब परिस्थितियों का शिकार था लेकिन यह भी उतना ही सत्य है कि औरंगजेब जिन परिस्थितियों ...का शिकार बना उसको आगे बढ़ाने में उसकी बहुत बड़ी भूमिका थी। साथ ही केवल परिस्थितियों पर दोषारोपण करना ...भी तर्कसंगत नहीं। क्योंकि, कमोबेश ऐसी समस्यायें अकबर के समय में भी थी। खुद अकबर प्रारम्भ में उलेमाओं के के ...संरक्षण में दिखता है। लेकिन, उत्तरवर्ती काल में महजर, फर्रे-इजिदी आदि अवधारणाओं के माध्यम से उसने उलेमाओं को ...नियंत्रित कर लिया। जबकि उलेमाओं ने उसके खिलाफ फतवा जारी कर 'इस्लाम खतरे में है' का नारा तक लगा दिया था। ...लेकिन, जरुरत पड़ने पर अकबर उद्दण्ड उलेमाओं के खिलाफ हथियार उठाने से भी नहीं चूका। यह एक शासक की ...धर्मनिरपेक्ष 'राजनीतिक इच्छा शक्ति' का प्रदर्शन था। दुर्भाग्यवश असाधारण कोटि का वीर औरंगजेब ऐसी कोई राजनीतिक ...इच्छा शक्ति का प्रदर्शन न कर सका। स्थिति इतनी बिगड़ गयी थी कि औरंगजेब के समकालीन व्यंग्यकार **जाफर जटल्ली** ...ने उस पर व्यंग्य करते हुए कहा, ''दैत्य (दैओ) के चूतड़ तले अंधेरा।'' वह असहाय होकर मुगल राज्य के तेजी से ...होते पतन को देखता रहा। अपनी शक्तिहीनता पर क्षुब्ध होकर एक बार औरंगजेब ने एक स्त्री से यहाँ तक कह दिया कि ...''बुढ़िया जा और खुदा से प्रार्थना कर कि दसरा बादशाह भेजे।''

Scanned with CamScanner